PETER BOŠKO

बेहतर समाज की ओर



दृश्यमान धन के विचार तक
मेरी निजी यात्रा

विषय सूची

1 भूमिका 4

2 मुझे अपने बोध का बोध है—मैं वह हूँ जो है 5

3 Klokočina के ऊपर का आकाश 10

4 Serafína 11

5 बचपन के शुरुआती दिन 12

6 धार्मिक शिक्षा 14

7 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और भविष्य के पेशे की स्पष्ट दिशा 14

8 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का पहला वर्ष 16

9 पिता की माँ का अंतिम संस्कार 18

10 प्रोग्रामिंग की पहली परियोजनाएँ 19

11 Ekonomická univerzita 21

12 Amerika में गर्मियाँ 26

13 दृश्यमान धन के विचार से पहला परिचय — Neal Donald Walsch की कृतियाँ 28

14 QBSW में काम — राजकोष की परियोजना 31

15 Hilda से बातचीत 32

16 Med-art — वैकल्पिक असैनिक सेवा और लेख का प्रकाशन 34

17 सूली पर चढ़ाया जाना 36

18 Praha 37

19 India में छुट्टियाँ 39

20 Írsko 41

21 Sony और कार दुर्घटना 41

22 Praha की ओर वापसी 42

23 Infostat और Eurostat की परियोजना 42

24 Luxemburg से घर लौटने की लंबी यात्रा 44

25 फ़ॉरेक्स रोबोट बेचने वाली कंपनी में काम 45

26 कार ख़रीदने के लिए अनुदान 47

27 बड़ी कंपनियों के लिए काम 48

28 दृश्यमान धन परियोजना का वर्तमान स्वरूप 50

29 परियोजना की ब्लॉकचेन कार्यक्षमता 54

30 समाज का केंद्र बनने से पहले परियोजना को हर प्रकार के दुरुपयोग से सुरक्षित करना 56

31 राष्ट्रपति चुनाव 58

32 राजनीतिक आकांक्षाएँ 59

पहला स्तंभ—सहज विवेक 59

राजनीतिक दल का दूसरा स्तंभ—मज़बूत पारदर्शिता....60
तीसरा स्तंभ—वैश्विकता....60
33 निजी ब्लॉग के कुछ अंश....62
Diebus solitudinis....62
Katka Knechtová—Spomaľ—एक अनोखा संवाद....62
आज की मानवता की 3 बुनियादी चुनौतियाँ और उनके प्रति मेरा उत्तर....63
कर्म कैसे काम करता है....68
ब्रह्मांड का सीमित होना क्यों आवश्यक है—एक चिंतन....69
दृश्यमान धन (VP) प्रणाली की संरचना—ब्लॉकचेन से सुरक्षित पहली पारदर्शी बैंकिंग प्रणाली 1....71

1 भूमिका

इस पुस्तक का उद्देश्य दृश्यमान धन परियोजना के विचारों तक पहुँचने की मेरी निजी यात्रा को बयान करना है। इसे मुक्त शैली में लिखा गया है और इसमें मेरे जीवन की यात्रा का वर्णन है—बचपन की कुछ शुरुआती घटनाओं से लेकर आज तक। इसमें जगह-जगह विचार और चिंतन गुंथे हुए हैं, मसलन स्वयं जीवन के अर्थ और अस्तित्व की प्रकृति को लेकर। दूसरे लेखकों को इन विषयों पर विचार करते मैंने कम ही देखा है, जबकि मेरे ख़याल से इन पर कहीं अधिक चर्चा होनी चाहिए। मैंने यह पाठ इस तरह लिखा है कि यह मुझे स्वयं भी अच्छा लगे, इसलिए संभव है कि कुछ जगहों पर यह वस्तुनिष्ठ न हो। यह काफ़ी सहज और अनियोजित ढंग से आकार लेता गया। शुरू में इसका दायरा बहुत व्यापक रखने का विचार था, लेकिन अंततः वह सिमट गया। फिर भी कुछ अंश, जो शायद अनावश्यक लगें, इसमें बने रहे, क्योंकि वे मुझे बस अच्छे लगते थे। कहीं-कहीं कथन में नाटकीयता और गति लाने के लिए मैंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद भी ली है—हालाँकि पाठक शायद इसे आसानी से पहचान लेंगे। मेरी कामना है कि यह आपके लिए एक प्रेरक अनुभव बने और आपको मेरी प्रेरणाएँ तथा वे कारण समझने में मदद करे, जिनके चलते मुझे लगता है कि समाज कुछ अलग ढंग से चल सकता है और उसे चलना भी चाहिए—केवल आर्थिक रूप से अधिक कुशल ही नहीं, बल्कि बेहतर, मानवीय संबंधों में भी अधिक मानवीय ढंग से।

2 मुझे अपने बोध का बोध है—मैं वह हूँ जो है

मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ। मूल कथन के तीन सरल, छोटे और परिचित शब्द। फिर भी अर्थ की दृष्टि से यह वाक्य इसे कहने वाले व्यक्ति के लिए अनोखा है। क्योंकि वक्ता की दृष्टि से इसका सत्य-मूल्य 100 % है। इसका सत्य-मूल्य 100 % होने का अर्थ क्या है? यह कि जिस ब्रह्मांड में निहितार्थ जैसे तर्क के बुनियादी नियम लागू होते हैं, वहाँ ऐसे कथन का हर परिस्थिति में सत्य होना अनिवार्य है।

यदि यह दावा करने वाला वास्तव में सोचता है, तो उसका अस्तित्व है। इसके विपरीत, यदि दावा करने वाला केवल एक भ्रम है और सोचने वाला वास्तविक प्राणी नहीं, तब भी यह तार्किक निहितार्थ बना रहता है।

लेकिन कोई इस निहितार्थ की पूर्वधारणा की जाँच कैसे कर सकता है—अर्थात यह कि दावा करने वाला सोचता है? बाहरी दृष्टि से तो नहीं कर सकता। इस निहितार्थ की पूर्वधारणा को 100 % सत्यापित केवल उस व्यक्ति के भीतर से किया जा सकता है, जो इसे कह रहा है। अपने बारे में 100 % निश्चितता के साथ केवल वही जान सकता है कि वह सोचता है, जो अपने भीतर विचार की प्रक्रिया को देखता है। उसे भीतर अनुभव करता है। किसी प्राणी के मन में घटित होने वाला अनुभव का यह कार्य ही प्राणियों के अस्तित्व का सबसे गहरा सार है।

जब मैं सोच रहा था कि क्या ऐसे और भी वाक्य हैं, जिनकी सत्यता उन्हें कहने वाले व्यक्ति—अनुभवकर्ता—के भीतर से 100 % निश्चित हो, तो मुझे एक वाक्य सूझा। मेरे विचार से उसमें जीवन के मूल स्वरूप और उसके अर्थ की पूर्णता का रहस्य छिपा है। **मुझे अपने बोध का बोध है।** मेरे ख़याल से यह Descartes के वाक्य से कहीं अधिक गहराई तक अस्तित्व के केंद्र में उतरता है। उनका वाक्य शुरुआत में अप्रत्यक्ष रूप से बोध को मान लेता है और फिर तार्किक निहितार्थ के ज़रिए केवल वह कहता है, जिसे स्वीकार करना ही होगा। जबकि “मुझे अपने बोध का बोध है” अनुभूति को अपना केंद्रीय विषय बनाए रखता है और बोध की क्रिया पर बार-बार स्वयं की ओर लौटते हुए बल देता है। और जिस प्रक्रिया को मैं जीवन का मूल सार और अर्थ मानता हूँ, उसे व्यक्त करके—उसके होने की पुष्टि, स्वीकृति और घोषणा करके—यह जीवन के अर्थ को पूरा करता है।

क्योंकि जब कोई कहता है कि उसे बोध है, और इतना ही नहीं, उसे इस बात का भी बोध है कि उसे बोध है, तो वह वस्तुतः यह कह रहा होता है कि वह एक वास्तविक जीवित प्राणी है, जिसने मानो अभी अपने आत्मनिर्णय के अधिकार का उपयोग किया है और यह घोषणा कर रहा है कि वह आत्मबोध की क्रिया के आनंद का अनुभव कर रहा है।

मानो जीवन ने स्वयं अपना नाम पुकारा हो। मानो अनुभव करने वाली सत्ता ने किसी ऐसी चीज़ का स्वाद चखा हो, जिसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता। शुद्ध वर्तमान। शुद्ध अस्तित्व। सबसे बड़ा रहस्य। स्वयं जीवन का अर्थ।

और मेरे विचार से इस आनंद को अनुभव करना ही जीवन का सर्वोच्च अर्थ है। वास्तव में यह अर्थ उस हर सुख में आंशिक रूप से मूर्त होता है, जिसका कोई प्राणी अनुभव करता है। उदाहरण के लिए, जब भूख मिटती है या कोई दूसरी आवश्यकता पूरी होती है, तो आत्मबोध की क्रिया उसमें सदा अंतर्निहित रहती है।

मेरे विचार से इस 100 % निश्चितता की शक्ति में कि मनुष्य का अस्तित्व है और उसे स्वयं का बोध है, स्वार्थपरता का सार छिपा है। हर प्राणी हमेशा “पहले मैं” के नियम के भीतर व्यवहार करता है। यहाँ तक कि जिन्हें परोपकारी माना जाता

है, वे भी वास्तव में स्वार्थपरक ढंग से ही व्यवहार करते हैं। बस उनकी मूल्य-व्यवस्था ऐसी होती है कि उनके अपने जीवित रहने को, उदाहरण के लिए, दूसरों की सहायता करने या किसी विचार का अनुसरण करने से कम प्राथमिकता मिल सकती है। स्वार्थपरता का सिद्धांत समाप्त नहीं हुआ; वह केवल ऐसे उद्देश्यों की ओट में है, जो स्वयं के जीवित रहने के विरुद्ध भी जा सकते हैं। स्वार्थपरता की छवि बदनाम हो चुकी है। वह बुरी नहीं है—वह बस एक नियम है, जो इस तथ्य से निकलता है कि प्राणी अवचेतन रूप से अपने अस्तित्व की 100 % निश्चितता और दूसरों के अस्तित्व को लेकर उसकी तुलना में कहीं अधिक अनिश्चितता के बीच लगातार भेद करते रहते हैं। कभी मैंने एक लेख लिखा था, जिसमें तीन बुनियादी चुनौतियों को नाम दिया था। उनका समाधान मानवता को सबसे अधिक आगे ले जा सकता था और उन पर अपनी ऊर्जा लगाना मुझे सार्थक लगता था। उन चुनौतियों में एक यह भी थी कि इस बात की वैसी ही निश्चितता कैसे प्राप्त की जाए कि दूसरे लोग भी उतने ही वास्तविक हैं, जितना मैं स्वयं। लेकिन उन तीनों में यह सबसे कठिन कार्य है और अभी तक इसके समाधान की सुरंग के अंत में कोई रोशनी दिखाई नहीं देती। शायद चेतना और अनुभूति की प्रक्रियाओं के प्रति मानवता की समझ में कोई बुनियादी छलाँग लगनी होगी।

ऊपर कही गई बातों को देखते हुए संभव है कि ब्रह्मांड का अध्ययन वास्तव में उलटी दिशा से किया जाना चाहिए। यानी हम यह आधार न लें कि हमारे चारों ओर के बाहरी परिवेश में कुछ भौतिक नियम हैं और फिर उनकी सहायता से यह समझाने की कोशिश करें कि चेतना जैसी चीज़ें कैसे उत्पन्न हुईं। इसके बजाय चेतना के अस्तित्व को हर चीज़ का आरंभ मानें, जिससे बाकी सब निकलता है। अर्थात बाहरी भौतिक नियमों का अध्ययन करते समय सबसे पहले यह ध्यान रखें कि ये नियम चेतना में ही प्रकट होते हैं, और अधिक ध्यान इस पर दें कि हम वास्तव में क्या देख रहे हैं तथा उसका हमारी चेतना से कैसा संबंध हो सकता है। बहरहाल, पिछले 200 वर्षों में विज्ञान ने जो हासिल किया है, वह प्रशंसनीय है। और जैसा प्रबंधन का एक नियम कहता है—जो टीम लगातार इस तरह जीत रही हो, उसकी संरचना मत बदलो। दूसरी ओर, चेतना के अनुसंधान में मध्ययुगीन अंधविश्वासों के बाद से बहुत कम प्रगति हुई है, या शायद बिल्कुल भी नहीं।

ऐसे चेतना-केंद्रित ज्ञान-मॉडल की पड़ताल करते हुए अचानक ज्ञान का एक ऐसा ढाँचा उभरता है, जो आज के सामान्य भौतिकवादियों के सामने इस प्रश्न पर चौंकाने वाली संभावनाएँ रख सकता है कि हम संसार के बारे में वास्तव में क्या जानते हैं। यदि समस्त ज्ञान का आदि और अंत सचमुच चेतना ही है, तो क्या यह संभव नहीं कि उसमें कोई सकारात्मक भावना इतनी प्रबल हो कि वह केवल किसी इच्छा की पूर्ति ही न करे, बल्कि चेतना कुछ भौतिक नियमों सहित वास्तविकता की प्रकृति भी बदल दे? उदाहरण के लिए, यदि हम आज की एक सामान्य उपभोक्ता वस्तु—लैपटॉप—को अतीत में ले जाएँ और चालू करें, तो क्या वह काम करेगा? या विकास के क्रम में, जैसे-जैसे लोगों ने प्राकृतिक नियमों को खोजा, वैसे-वैसे वे नियम भी समय के साथ बदलते गए? यानी प्राकृतिक नियम खोजे नहीं जा रहे थे, बल्कि सामूहिक मानव चेतना उन्हें धीरे-धीरे आगे खिसका रही थी और बदल रही थी?

लेकिन विज्ञान और वास्तविकता को इस दृष्टि से देखना शायद इस समय प्रतिकूल साबित होगा, जब विज्ञान पारंपरिक तरीक़ों से ज्ञान को आगे बढ़ाने में आश्चर्यजनक रूप से सफल हो रहा है। फिर भी मेरा मानना है कि वास्तविकता की इस व्याख्या को पारंपरिक चिंतन के एक विकल्प के रूप में याद रखना चाहिए।

अनुभूति-केंद्रित यह विकल्प अपने और अपने पूरे परिवेश के बारे में सत्य का स्रोत उन बाहरी प्राकृतिक नियमों को नहीं मानता, जिन्हें अंतिम पर्यवेक्षक से कथित रूप से स्वतंत्र कहा जाता है। इसके बजाय यह ऐसी व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है, जो अंतिम पर्यवेक्षक की चेतना को ब्रह्मांड के केंद्र में रखती हैं। यानी इस क्षण आपकी चेतना को—इन पंक्तियों के पाठक की चेतना को। मेरी उस चेतना के माध्यम से, जिसका वास्तव में अस्तित्व है, आप अभी ब्रह्मांड का केंद्र बन गए हैं।

बुरी और अप्रिय चीज़ों का अनुभव करना भी जीवन का अविभाज्य हिस्सा है। यह अनुभव आवश्यक है, ताकि अच्छे और बुरे में अंतर किया जा सके। यदि मनुष्य केवल सुखद चीज़ें ही अनुभव करे, तो कुछ समय बाद वह उनके सकारात्मक मूल्य को पहचान नहीं पाएगा और सब कुछ एक ऐसी खिचड़ी में घुल जाएगा, जिसमें यह भेद ही नहीं किया जा सकेगा कि कौन-सी चीज़ दूसरी से बेहतर है। इसलिए नकारात्मक अनुभव अनुभूति का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक तत्व हैं।

संतुष्ट और परिपूर्ण जीवन का रहस्य सकारात्मक और नकारात्मक अनुभवों को ऐसे अनुपात में पाना है कि नकारात्मक अनुभव मनुष्य को अच्छे और बुरे का सही परिप्रेक्ष्य दें, और फिर उनके बाद ऐसे सकारात्मक अनुभव आएँ जो नकारात्मकता का संतुलन करें और संतोष का अनुभव कराएँ।

कल्पना कीजिए कि आपके पास Aladin का जादुई चिराग़ हो और उसका जिन्न आपकी हर इच्छा पूरी कर सकता हो। सबसे पहले आप उन चीज़ों की कामना करेंगे, जो आपको हमेशा से परेशान करती रही हैं—अधिक धन, बेहतर स्वास्थ्य, अधिक सुंदर रूप वगैरह। लेकिन कुछ समय बाद आप उससे ऊब जाएँगे—बिना किसी प्रयास के सब कुछ मिल जाना थोड़ी देर बाद नीरस लगने लगेगा।

इसलिए आप ऐसी चीज़ों की इच्छा करेंगे, जिनमें आपके लिए कोई आश्चर्य छिपा हो—ताकि सब कुछ आपके सचेत नियंत्रण में न रहे। कुछ समय बाद आपको समझ आएगा कि मोड़ों और अप्रत्याशित घटनाओं से भरा यह अंतहीन खेल भी आख़िर आपका ही “अपना निर्देशन” है। आप चाहने लगेंगे कि वास्तविक सीमाएँ हों और ऐसे नियम हों, जिन्हें आप स्वयं भी न तोड़ सकें।

आख़िरकार आप चाहेंगे कि जादुई चिराग़ और अपनी असीम शक्ति को भूल जाएँ। आप ऐसी वास्तविकता चाहेंगे, जो पूरी तरह वास्तविक हो; आप यह बोध खो देना चाहेंगे कि सब कुछ आप स्वयं रच रहे हैं। और उसी क्षण आप ठीक वैसे जीवन में आ पहुँचेंगे, जैसा हम अभी जी रहे हैं—जहाँ हमें नहीं पता कि आगे क्या होगा, जहाँ हम प्रयास करते हैं, संघर्ष करते हैं, सीखते हैं, पीड़ा सहते हैं और प्रसन्न होते हैं।

मनुष्य फिर अनंत संभावनाएँ नहीं चाहता, बल्कि एक ऐसा जीवन चाहता है, जो “बस सही अनुपात में” हो:

- इतनी अनिश्चितता कि वह रोचक बना रहे,
- इतना दुख कि वह अर्थपूर्ण हो,
- इतना आनंद कि उसे जीना सार्थक लगे।

और इस तरह वृत्त पूरा हो जाता है: अंतहीन चाहत एक साधारण, वास्तविक, ठोस जीवन की आकांक्षा पर आकर समाप्त होती है। आप वास्तविक जीवन चाहेंगे, जैसा वह है। भय और पीड़ा के साथ, लेकिन आनंद के साथ भी। उन सभी चीज़ों के साथ, जो उसे वास्तविक बनाती हैं।

मानवता इस समय ऐसे मोड़ पर है, जिसके आगे अपेक्षाकृत सुखद युग हमारा इंतज़ार कर रहा है। तकनीक और चिकित्सा की प्रगति की बदौलत एक ओर हम संभवतः हमेशा जीवित रह सकेंगे, और दूसरी ओर आभासी वास्तविकता जैसी तकनीकों से बनाए अपने संसारों में सर्वशक्तिमान होने का खेल खेल सकेंगे। इस तरह मानवता के प्राथमिक भौतिक स्तर पर, जहाँ सब कुछ दाँव पर होगा—स्वयं जीवन—वास्तविक जीवन के वही नियम रहेंगे, जिन्हें हम जानते हैं। वहाँ पीड़ा और दुख की संभावना बनी रहेगी, लेकिन तकनीक की प्रगति और नैतिक स्तर के ऊँचा उठने से इन नकारात्मक पहलुओं के शायद न्यूनतम रह जाने की संभावना है। जीवन इतना अच्छा और गुणात्मक रूप से इतना मूल्यवान होगा कि केवल इसलिए युद्ध में भर्ती हो जाना कि किसी ने पड़ोसी देश पर हमला करने की ठान ली है, पूरी तरह अकल्पनीय होगा। आज ऐसा केवल इसलिए संभव है कि ऐसे देश में जीवन की गुणवत्ता इतनी ख़राब है कि युद्धभूमि में संभावित मृत्यु भी दरअसल बहुत बड़ी क़ीमत नहीं लगती।

मेरा ख़याल है कि जीवन की नकारात्मक चीज़ों का अनुभव करने और उनकी मात्रा को उचित अनुपात में रखने के लिए आभासी संसारों में सिमुलेशन बनाए जाएँगे। लेकिन उन्हें किसी भी समय रोका जा सकेगा और चेतना की निरंतरता खोए बिना उनसे बाहर निकला जा सकेगा।

लोग अपने रचनात्मक विचारों से अपने संसार बनाएँगे, जो इतने नए और अनुभव-समृद्ध होंगे कि वे एक-दूसरे को अपने संसारों में आमंत्रित करेंगे और उनमें बिताए अनुभवों का मूल्यांकन करेंगे। यह सामाजिक मेलजोल का एक नया रूप होगा, जो मानव-मशीन इंटरफ़ेस के बेहतर हो जाने और उसके बाद आभासी वास्तविकता के व्यापक विस्तार से जन्म लेगा।

इस पुस्तक की आकांक्षा मानवता को एक प्रबुद्ध समाज की ओर बढ़ने में सहायता देना है—ऐसे समाज की ओर, जहाँ आज की दुनिया की समस्याएँ दूर अतीत की केवल एक अप्रिय स्मृति होंगी। मैं अपने जीवन की कहानियों की पृष्ठभूमि में उन अलग-अलग क्षेत्रों पर अधिक प्रकाश डालकर और अपनी दृष्टि स्पष्ट करके यह सहायता करना चाहता हूँ, जिनमें मेरे विचार से मानवता व्यर्थ और अपने ही नुकसान के लिए भटक रही है। मैं अनेक विषयों पर ऐसी दृष्टि प्रस्तुत करने की कोशिश करूँगा, जिसकी बुनियादी मान्यताएँ किसी ठोस जीवन-कथा के उदाहरण से स्पष्ट हो जाएँ।

पुस्तक का एक अलग भाग मेरी दृश्यमान धन परियोजना को समर्पित होगा। यह परियोजना समाज को इस तरह रूपांतरित करने के बारे में है कि उसके बुनियादी आर्थिक और नैतिक प्रोत्साहन नई विश्व व्यवस्था के पक्ष में काम करें। ऐसी व्यवस्था, जो अपने अंतस तक न्यायपूर्ण और अत्यंत नैतिक हो—केवल मनुष्य => मनुष्य और मनुष्य => प्रकृति के संबंधों में ही नहीं, बल्कि मनुष्य => राज्य और इसके उलटे संबंध में भी।

तो मैं आपको अपने जीवन की एक परिक्रमा पर आमंत्रित करता हूँ—एक ऐसी यात्रा पर, जो नए संसार के निर्माण की दहलीज़ पर खड़ी है। ऐसा संसार, जहाँ तकनीक मानवता और पूरे ग्रह के लिए स्वर्ग के द्वार खोल देगी। समाज आज जितना भी अस्त-व्यस्त और ध्रुवीकृत हो, मेरे विचार से वास्तव में थोड़े-से सौभाग्य के साथ बहुत कम प्रयास काफ़ी हो सकता है, ताकि मानवता अपने बाहरी इतिहास के शायद अंतिम चरण में प्रवेश करे और अपनी संभावनाओं को पूरी तरह सकारात्मक रूप में साकार करे। यह पुस्तक समाज के बुनियादी परिवर्तन का वर्णन करती है—सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामुदायिक और शायद धार्मिक परिवर्तन का भी।

मेरे जीवन की सभी कहानियों का आधार वास्तविक है और मैंने उन कहानियों से भी बचने की कोशिश नहीं की है, जो मुझे अच्छी रोशनी में नहीं दिखातीं। मैं अपने अंतर्मन की एक सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ। केवल वे बातें छोड़ी गई हैं, जो मेरे कथन में कोई अतिरिक्त अर्थ नहीं जोड़तीं, या जिन्हें सार्वजनिक करने से किसी को नुकसान पहुँच सकता है अथवा ठेस लग सकती है।

3 Klokočina के ऊपर का आकाश

तूफ़ान से पहले Klokočina अँधेरे में सिमट गई थी। बादल नीचे झुके हुए थे, हवा बोझिल थी, और पाँचवीं मंज़िल के एक फ़्लैट में बच्चे की चहक अचानक टूट गई। छोटी-सी देह चिकनपॉक्स के बुख़ार से तप रही थी; फिर एकाएक उसकी ताक़त जवाब दे जाती है—आँखें उलट जाती हैं, घुटने मुड़ जाते हैं और वह कपड़े की गुड़िया की तरह निढाल होकर गिर पड़ता है।

“वह… बेहोश हो गया,” स्त्री के मुँह से निकला—चीख़ कम, फुसफुसाहट अधिक।

पुरुष ने एक पल भी नहीं गँवाया। उसने लड़के को उठाया, छाती से भींचा और गलियारे में दौड़ पड़ा। सेंसर वाली बत्ती देर से जली; खाली सीढ़ियों में क़दमों की आवाज़ गूँजने लगी। और वह दौड़ता गया—नीचे नहीं, ऊपर, मानो जवाब ऊपर हो। छठी मंज़िल, फिर सातवीं के बीच का मोड़। छाती जल रही थी, साँस टूट रही थी।

“Jaro, नीचे!” एक मंज़िल नीचे से स्त्री चिल्लाई। “गाड़ी की ओर, आपात चिकित्सा में!”

वह सबसे ऊपर वाली सीढ़ियों के मोड़ पर रुक गया। उसने Peťko को देखा—आँखें उलटी हुईं, नन्ही देह बेजान। उस शून्य में उसे एहसास हुआ कि वह क्या कर बैठा है। “हे ईश्वर…” उसके मुँह से निकला—शब्दों से अधिक एक टूटी साँस।

और ठीक उसी समय बाहर कुछ बदला। पूरी दोपहर आकाश ढका रहा था, लेकिन पश्चिम में क्षण भर को बादलों के बीच एक पतली दरार खुल गई। ढलते सूरज का कोण बिल्कुल सही पड़ा: उस दरार से रोशनी की एक पतली पट्टी निकली, सीढ़ियों के मोड़ की गंदी खिड़की से फिसली और गर्म नारंगी रंग की एक लकीर बनकर सीढ़ियों पर बिछ गई।

एक पल के लिए पुरुष का हाथ काँपना बंद हो गया। छोटी-सी देह में एक हल्की, लगभग अदृश्य हरकत हुई। फिर एक और। स्त्री उनसे दो सीढ़ियाँ नीचे ठिठक गई और मुँह पर हाथ रख लिया।

“होश आ गया,” पुरुष ने अविश्वास से कहा, मानो स्वयं से कह रहा हो। उसने अँगूठे से लड़के की लार पोंछी और हथेली उसके चेहरे पर फेरी।

किरण केवल कुछ धड़कनों भर टिकी। बादल फिर घिर आए, नारंगी रंग बुझ गया और सीढ़ियाँ फिर धूसर धुँधलके में डूब गईं। अब अचानक दिशा साफ़ थी।

“चलते हैं,” उसने दृढ़ स्वर में कहा।

स्त्री चाबियाँ लेने मुड़ गई। पुरुष ने Peťko को अधिक सावधानी से छाती से लगाया—किसी बोझ की तरह नहीं, किसी उपहार की तरह—और इस बार नीचे की ओर बढ़ा। दीवार पर गर्माहट की केवल एक फीकी, तेज़ी से मिटती लकीर बची थी। मगर उन दोनों के भीतर एक बिंदु हमेशा के लिए ठहर गया: वह छोटा, शांत क्षण, जब बादल ठीक उसी समय हटे थे, जब उन्हें उसकी आवश्यकता थी।

यह कहानी काफ़ी हद तक मेरे बचपन की एक सच्ची घटना पर आधारित है, जिसे माँ मुझे अक्सर सुनाती थीं। बचपन में मैं बहुत बीमार पड़ता था और एक बार सचमुच बेहोश हो गया था। पिता मुझे लेकर नीचे गाड़ी की ओर दौड़ने के बजाय सहज आवेग में उलटी दिशा में चले गए थे—और संभव है कि अंततः उसी का इस कहानी के परिणाम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा हो।

4 Serafína

“इसे याद करने की कोशिश करो,” उन्होंने कहा। वे चूल्हे के पास खड़ी थीं और लकड़ी के बड़े चम्मच से बर्तन में गोल-गोल चला रही थीं। भाप छत की ओर उठ रही थी और उसके साथ जैम की ख़ुशबू भी।
“मुझे याद है,” मैंने जवाब दिया और बिना हिचके शुरू हो गया: “हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, आपका नाम पवित्र माना जाए, आपका राज्य आए, आपकी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। आज हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दें और हमारे अपराध क्षमा करें, जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं; और हमें प्रलोभन में न पड़ने दें, बल्कि बुराई से बचाएँ। आमेन।”

चूल्हे के पास खड़ी वह स्त्री मेरी नानी थीं—हम सब उन्हें ‘बाब्का’ कहते थे। उनका नाम ऐसा था, जो मैंने फिर कभी किसी दूसरे जीवित व्यक्ति का नहीं सुना: Serafína। सुना है कि उनका नाम पहले Alžbeta रखा जाना था, लेकिन बपतिस्मे के समय उनकी धर्ममाता ने अचानक दूसरा नाम बोल दिया और वही उनके साथ रह गया। एक बार नामों के अर्थ खोजते हुए मुझे एक व्याख्या मिली, जो उन पर अक्षरश: सटीक बैठती थी: सेराफ़िम—वे देवदूत जो स्वर्ग में निरंतर ईश्वर की महिमा का गान करते रहते हैं। उन्होंने अपने पूरे जीवन से ईश्वर की महिमा गाई थी।

मेरे आध्यात्मिक जीवन पर उनका प्रभाव सचमुच मेरी पहली साँस से ही शुरू हो गया था। कैथोलिक पादरी ने मेरा बपतिस्मा करने से मना कर दिया था—पिता प्रोटेस्टेंट थे, माँ कैथोलिक; उस समय अलग संप्रदायों के लोगों का विवाह धार्मिक दृष्टि से आसान मामला नहीं था। नानी को दुनिया के अपने लिए फ़ैसला करने का इंतज़ार करने की आदत नहीं थी। उन्होंने एक कटोरे में पानी भरा, मेरे ऊपर क्रूस का चिह्न बनाया और फुसफुसाकर वे शब्द कहे, जिन्हें कुछ वर्षों बाद मैंने फिर एक पादरी के मुँह से सुना। मैं तुम्हें पिता, पुत्र के नाम पर बपतिस्मा देती हूँ…

उन्होंने स्वयं मेरा बपतिस्मा किया—शांत और दृढ़, मानो हमेशा से यही करती आई हों।

वर्ष बीतते गए। शासन के पतन के बाद, जब गिरजाघरों के दरवाज़े दबे-छिपे ढंग से खींचकर बंद करना नहीं पड़ता था और आस्था फिर खुलकर साँस ले सकती थी, उन्होंने एक बार फिर मेरा हाथ थामा। उन्होंने सुनिश्चित किया कि जो कुछ होना चाहिए, वह सब हो: गिरजाघर में बपतिस्मे के शब्द ऊँचे स्वर में कहे गए, फिर प्रथम पवित्र परमप्रसाद और दृढ़ीकरण संस्कार भी हुए।

आज मैं जानता हूँ कि आस्था की ओर मेरी यात्रा धर्मशास्त्र से नहीं, बल्कि बर्तन से उठती भाप और पूरी निष्ठा से विश्वास करने वाली एक स्त्री की आवाज़ से शुरू हुई थी। और यह भी कि मेरा बपतिस्मा दो बार हुआ: एक बार मेरे जन्म के तुरंत बाद उनके हाथों—जब क्षण भर के लिए वे पादरी बन गई थीं—और दूसरी बार उनके साथ, जब वे मेरी धर्ममाता बनीं। इन दो बपतिस्मों के बीच मेरा अधिकांश बचपन बीता।

5 बचपन के शुरुआती दिन

मेरी सबसे पुरानी स्मृतियों में प्राथमिक कक्षाओं के पाठ शामिल हैं—अधिक ठीक कहूँ तो वह समय, जब मुझे पढ़ना आ गया था और अचानक मेरा संसार उन सभी चीज़ों से फैल गया, जो किसी पुस्तक के दो आवरणों के बीच समा सकती हैं। जो हाथ आता, मैं पढ़ डालता। पहले May के उपन्यास: तेज़ घोड़े, निर्मल वचन, चाकू की धार जैसा तेज़ मान-सम्मान। उन्हें पढ़ने के बाद मेरे भीतर यह दृढ़ भावना रह गई कि कमज़ोरों की रक्षा कोई तो करे; और कहीं वहीं मेरी न्याय-चेतना आकार लेने लगी।

ज़्यादा समय नहीं बीता कि मेरी अलमारियों में Jules Verne आ बसे। Verne के उपन्यास मेरी कल्पना को तराशते हुए मेरे भीतर तकनीकी प्रगति के प्रति आदर पैदा करते थे—अपने आप में निरर्थक चमत्कार के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्यों को आगे बढ़ाने वाले साधन के रूप में।

स्कूल में भी सीख की फ़सल काटने को बहुत कुछ था। इतिहास की कक्षा में मैंने पहली बार Peter Veľký की कहानी सुनी: कैसे कुछ समय के लिए उन्होंने पश्चिमी Európa के जहाज़ निर्माण-स्थलों पर नौकरी की, ताकि काम सीख सकें, और फिर जो देखा और सीखा, उसे रूसी जहाज़ निर्माण-स्थलों में और अंततः ज़ार के शासन-प्रबंध में भी अपनाया। उनके व्यवहार की सरलता और साथ ही उसकी प्रतिभा ने मुझे मोह लिया। मेरे भीतर एक स्पष्ट निष्कर्ष रह गया: यदि कोई सचमुच अच्छी तरह शासन करना चाहता है, तो उसे तकनीकी बारीकियाँ भी समझनी होंगी—वे महत्त्वपूर्ण चीज़ें, जिन पर राज्य, व्यापार, शिल्प और पूरी अर्थव्यवस्था टिकी होती है।

एक पाठक के रूप में मेरे विकास को निर्णायक गति अपने सहपाठी Rasťo से मित्रता ने दी। हम एक-दूसरे को उकसाते रहते—किसने क्या पढ़ा है और अगला "शिकार" कौन लाएगा। Rasťo में वहाँ भी पुस्तक खोज निकालने की प्रतिभा थी, जहाँ आप उसे ढूँढ़ने की सोचेंगे भी नहीं। वानरों के स्वामी Tarzan की अपनी पहली पुस्तक मैंने अख़बारों के उन सिले हुए अंकों की बदौलत पढ़ डाली, जिन्हें उसके पिता ने अपने लड़कपन में इकट्ठा किया था। काग़ज़ पीले पड़ चुके थे, किनारे उधड़े हुए थे, लेकिन कहानी चमक रही थी। कुछ पन्ने ग़ायब थे; कल्पना को उन्हें स्वयं लिखना पड़ा। वह भी एक अभ्यास था—ख़ाली जगहों को भरना सीखना, उनके कारण ठहर न जाना।

Rasťo की माँ पास के स्कूल में गणित पढ़ाती थीं। हमारे लिए इसका अर्थ केवल अच्छे अंक पाने से कहीं अधिक था। आवश्यकता पड़ने पर वे धैर्य से हमें अतिरिक्त पढ़ातीं, प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करातीं और सबसे बढ़कर—हमें प्रश्न करना सिखातीं। एक बार मैं अपनी छोटी-सी गणितीय बग़ावत लेकर उनके पास पहुँचा।

"शून्य से भाग देना अमान्य संक्रिया क्यों है?" मैंने झट से पूछा। "यदि हम किसी धनात्मक संख्या को शून्य से भाग दें, तो परिणाम अनंत होना चाहिए।"

वे मुस्कराईं, लेकिन उनकी आँखों में शिक्षकों वाली वह प्रसिद्ध शांति थी, जो जिज्ञासा को बुझाती नहीं, केवल दिशा देती है।

"3: 0 कितना होता है?" उन्होंने पूछा।

“अनंत,” मैंने बिना झिझक जवाब दिया।

“और अनंत गुणा 0 कितना होता है?”

“शून्य,” थोड़ी देर रुककर मैंने कहा।

“तो देखा,” उन्होंने धीरे से कहा। “तुम्हारे उत्तर की जाँच सही नहीं बैठती।”

वह उपहास नहीं था। तभी मैंने समझा कि गणित में भी—पुस्तकों की ही तरह—बात केवल किसी आकर्षक विचार की नहीं, बल्कि उन नियमों की संगति की है, जो संसार को एक साथ थामे हुए हैं। उसके बाद से मैं “अनंतों”, स्थापित नियमों और ज्ञान को अधिक विनम्रता से देखने लगा।

6 धार्मिक शिक्षा

1989 में धार्मिक पाबंदियाँ ढीली पड़ने के बाद—मैं 10 वर्ष का था—मुझे पहली बार बाक़ायदा मिस्सा में जाने का अवसर मिला। उस दिन मैं फिर Rasťo के साथ Nitra के केंद्र में Farská सड़क के गिरजाघर गया था। मुझे लगता है कि बेहतर दृश्य के लिए हम बाईं ओर की ऊपरी दीर्घा में चले गए थे। रूपांतरण और पवित्र परमप्रसाद के समय एक अजीब घटना हुई। नीचे वेदी की ओर देखते हुए मुझे अचानक वहाँ एक प्रकाश दिखाई दिया, जो विस्फोट की तरह फैलने लगा। एक ही क्षण में उसने मुझे और पूरे गिरजाघर को अपने भीतर समेट लिया। मैं बेहोश हो गया और तभी होश आया, जब हमारे पास बैठी एक महिला मेरे गालों पर थप्पड़ मार रही थीं।

जब माँ और नानी को इसका पता चला, तो कुछ समय तक चर्चा हुई कि मेरे लिए मिस्सा में जाना उचित है या नहीं। सौभाग्य से गिरजाघर की अगली यात्राओं में यह फिर नहीं हुआ। मैंने सोचा, मुझे देखना है कि जब मैं स्वयं पवित्र परमप्रसाद ग्रहण करने जाऊँगा, तब क्या होगा, जबकि मिस्सा के उस चरम क्षण को केवल देखने भर से मैं बेहोश हो गया था, जब कैथोलिक धर्मविधि के अनुसार पादरी रोटी और दाखरस को मसीह के शरीर और रक्त में बदलता है।

शायद कैथोलिक धर्मविधि के प्रति ऐसी संवेदनशीलता हमारे परिवार में ही थी। कुछ वर्षों बाद नानी ने मुझे बताया कि पवित्र परमप्रसाद के समय उन्होंने पवित्र रोटी पर चाँदी जैसे उज्ज्वल क्रूस हवा में तैरते देखे थे। उनके अनुसार पादरी ने भी उन्हें ज़रूर देखा होगा, क्योंकि उसकी प्रतिक्रिया से यही स्पष्ट होता था। सामान्यतः मैं किसी अपेक्षाकृत वृद्ध व्यक्ति की ऐसी बात को गंभीरता से नहीं लेता, जिसे उसकी इंद्रियाँ धोखा दे सकती हों; लेकिन उनकी बात ने मुझे धर्मविधि के केंद्र से फैलते प्रकाश का अपना अनुभव याद दिला दिया।

नानी ने व्यवस्था की कि शासन के पतन के कुछ ही समय बाद मैं बपतिस्मे और प्रथम पवित्र परमप्रसाद की धर्मशिक्षा लेने जाने लगा। शायद हर रविवार मैं Mlynárce के गिरजाघर जाता था, जहाँ यह तैयारी होती थी। हमेशा एक ही रास्ते से जाता, जो एक घर के पास से गुज़रता था। उसके नज़दीक चेरी का एक बड़ा पेड़ था। एक दिन जब मैं वहाँ से गुज़र रहा था, चेरी पक रही थीं। बड़ी, स्वादिष्ट, दिल के आकार की चेरी। आख़िरकार ऐसा हुआ कि भविष्य में मुझे उस पेड़ के पास बहुत बार लौटना पड़ा। आज भी हर साल मई के अंत और जून की शुरुआत में मैं उसके फल चखता हूँ। मानो वह मेरे भाग्य में लिखा हो। कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरा जीवन बहुत हद तक पहले से तय है और मेरा काम केवल सारे संकेत सही तरह बटोरना और अपना भाग्य पूरा करना है।

7 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और भविष्य के पेशे की स्पष्ट दिशा

स्कूली शिक्षा का प्रारंभिक चरण पूरा करते समय मेरे सामने यह चुनाव था कि आगे कहाँ जाऊँ। मैंने कुछ बार Párovské gymnázium की गणित में प्रतिभाशाली बच्चों वाली कक्षा की प्रवेश परीक्षा के तैयारी-सत्रों में भाग लिया। मुझे लगा कि शायद मैं गणित में उतना प्रतिभाशाली नहीं हूँ, क्योंकि वहाँ मेरी उम्र के ऐसे बच्चे थे, जिनका आधार शायद बेहतर था। वे गणित में प्रतिभाशाली बच्चों के विशेष स्कूल से आए थे और शिक्षक की बातों पर मुझसे कहीं अधिक फुर्ती से प्रतिक्रिया देते थे। मैंने भी उस विशेष गणित स्कूल की प्रवेश परीक्षा दी थी—और मेरा चयन भी हो गया था। बस वह स्कूल

शहर के दूसरे छोर पर, हमारे लिए असुविधाजनक जगह पर था, और माता-पिता ने तय किया था कि उसके लिए रोज़ की कठिन आवाजाही करना उचित नहीं होगा।

गणित के उन्हीं तैयारी-सत्रों में मेरी नज़र अपने एक भावी सहपाठी पर पड़ी। वह गणित में प्रतिभाशाली बच्चों के उस विशेष स्कूल में नहीं पढ़ा था, फिर भी सबसे आगे था—Tibor।

अंत में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का मेरा चुनाव इस रूप में सामने आया कि मैंने ऐसे विद्यालय में आवेदन किया, जहाँ विशेष कक्षा में गणित नहीं, बल्कि प्रोग्रामिंग पर अधिक ज़ोर दिया जाता था। दरअसल सातवीं या आठवीं कक्षा में मेरे माता-पिता ने उस समय की बेहिसाब क़ीमत चुकाकर मेरे लिए पहला कंप्यूटर ख़रीदा था—PC AT 386SX। कंप्यूटर से मेरा प्रेम पहली ही कमांड के साथ हो गया था। इसमें मेरे चाचा—पिता के भाई Zdeno—की बड़ी भूमिका थी। वे कंप्यूटर बेचने में विशेषज्ञता रखने वाली कंपनी के निदेशक थे। उनकी पत्नी, मेरी चाची Katka, उसी स्कूल में अध्यापिका थीं, जहाँ मैं पढ़ता था। एक बार उन्होंने पूछा कि क्या मैं उनके घर आकर उनका नया कंप्यूटर देखना चाहूँगा। मैंने एक पल भी नहीं सोचा और उसी दिन उनके घर के बाहर दो घंटे तक चक्कर लगाता रहा, जब तक मेरी चचेरी बहन स्कूल से लौटकर मुझे भीतर कंप्यूटर के पास नहीं ले गई।

वह केवल Commodore 64 था, लेकिन जब सबने देखा कि मैं उससे कितना उत्साहित हो गया हूँ, तो चाचा से बात करके पिता ने ठीक ही समझा कि मेरी इस लगन को प्रोत्साहन देना समझदारी होगी। आख़िर कंप्यूटर भविष्य थे और एक दिन मेरी रोज़ी-रोटी भी बन सकते थे। प्रोग्रामिंग वाली कक्षा की प्रवेश परीक्षा सफलतापूर्वक पास करते ही मेरा भाग्य तय हो गया—मैं प्रोग्रामर बनूँगा, या जैसा बाद में कहा जाने लगा—सॉफ़्टवेयर इंजीनियर।

8 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का पहला वर्ष

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का पहला वर्ष मेरे लिए कुछ हद तक झटका था। अचानक मैं, पहले के स्कूल की तरह, संगीत को छोड़कर हर विषय में सबसे अच्छा छात्र नहीं रह गया था। वहाँ ऐसे धुरंधर थे, जो गणित, भौतिकी और विदेशी भाषाओं जैसे दूसरे विषयों में भी स्पष्ट रूप से मुझसे बेहतर थे। पहला झटका मुझे प्रोग्रामिंग की दूसरी कक्षा में लगा, जब शिक्षिका ने मुझे उत्तर देने के लिए बुला लिया और मेरी कोई तैयारी नहीं थी। जिस विषय में मैं श्रेष्ठ होना चाहता था—प्रोग्रामिंग—उसी की दूसरी कक्षा में मौखिक उत्तर के लिए मुझे ग्रेड 3 मिला। तब तक मेरे लिए ऐसा होना अकल्पनीय था। मैं जल्दी समझ गया कि यहाँ मामला पुराने स्कूल जितना आसान नहीं होगा, जहाँ कक्षा से पहले अवकाश में पिछला पढ़ाया हुआ देख लेना मेरे लिए हर विषय में ग्रेड 1 लाने को पर्याप्त था।

यहाँ मेहनत करनी थी। हर कक्षा के लिए गंभीर तैयारी करनी थी—कम से कम इतनी कि उत्तर देने के लिए अचानक बुलाया जाना या बिना बताए ली गई लिखित परीक्षा मेरे अंकों को इतना नुकसान न पहुँचा दे कि रिपोर्ट कार्ड में उस विषय में ग्रेड 1 ही न मिल सके। पहले अर्धवर्ष में मेरा लक्ष्य सभी विषयों में ग्रेड 1 लाना था, लेकिन इतिहास की शिक्षिका ने मेरा लक्ष्य बदल दिया। अर्धवर्ष के अंत में मैंने स्वयं उत्तर देने के लिए हाथ उठाया और कहा कि मुझे ग्रेड 1 चाहिए, क्योंकि मेरा लक्ष्य हर विषय में ग्रेड 1 है। उन्होंने यह कहकर मुझे चुप करा दिया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हर विषय में ग्रेड 1 केवल लड़कियाँ लाती हैं; लड़कों के लिए यह सामान्य नहीं है। उसके बाद मैं अंकों को लेकर उतना ज़ोर नहीं देने लगा और अंत में भूगोल में एक ग्रेड 2 आया, क्योंकि उसकी आख़िरी कुछ लिखित परीक्षाओं में से एक मैंने बिगाड़ दी थी।

पहले अर्धवर्ष के अंत में हमारी कक्षा स्कीइंग यात्रा पर गई। कक्षा में केवल तीन लड़कियाँ थीं। किशोरावस्था अपने पूरे उफान पर थी और मेरे भीतर कामना की आग लगी रहती थी—मैं चौदह वर्ष का था। मैं और मेरा एक सहपाठी Peťo, दोनों एक ही सहपाठिनी के पीछे लग गए। Peťo मुझसे अधिक भाग्यशाली निकला और दोनों का संबंध शुरू हो गया। क्रोध और हताशा से मुझे लग रहा था कि मैं ज़हर से फट पड़ूँगा। मैं कुछ कर नहीं सकता था। कम से कम शारीरिक रूप से तो नहीं। इसलिए अपना सारा ज़हर और ग़ुस्सा मैंने भीतर की ओर मोड़ दिया। मैं पूरी ताक़त से कल्पना करता और मन में दृश्य बनाता कि Peťo का सिर अपने आप फट रहा है। बाहरी तौर पर मैं उसे कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, लेकिन अपनी विफलता से किसी तरह निपटने का यह मेरा तरीक़ा था। मुझे नहीं पता कि मेरी तीव्र मानसिक कल्पना ने Peťo को कोई नुकसान पहुँचाया या नहीं, मगर तथ्य यह है कि वर्षों बाद उसके एक बेटे का जन्म हुआ, जिसे ऑटिज़्म था। हालाँकि यह उसके दूसरे बच्चे के साथ हुआ था, इसलिए मुझे उम्मीद है कि इसके लिए मैं सचमुच किसी तरह ज़िम्मेदार नहीं हूँ। एक बार सहपाठियों के पुनर्मिलन में मैंने Peťo को यह बात याद दिलाई थी—ऐसा नहीं लगा कि वह इन बातों को जोड़ रहा था या उनके बीच कोई सीधा संबंध देखता था। यह मैं मुख्यतः इसलिए लिख रहा हूँ, ताकि मेरी आत्मस्वीकृति पूरी हो।

इसी उफनती कामना और किशोरावस्था को इस दृष्टि से ठीक तरह न सँभाल पाने से जुड़ी एक और बात नानी के घर हुई थी। थोड़े समय तक, यह जानते हुए भी कि एक दिन मुझे इस पर शर्म आएगी, मुझमें अपनी रिश्ते की बहन के साथ हल्की छेड़छाड़ करने की प्रवृत्ति रही। ऐसी मूर्खता का उल्लेख यहाँ इसलिए कर रहा हूँ कि उसका बोझ मेरे अंतःकरण पर है, और इसे

एक तरह की क्षमायाचना भी मानता हूँ। सौभाग्य से वह दौर बहुत छोटा रहा। उसी समय Katka के साथ मेरा संबंध शुरू हुआ—मेरे हार्मोनों को दूसरा, अधिक उचित लक्ष्य मिल गया—और फिर कमोबेश सब ठीक रहा।

Katka के साथ मेरा संबंध 10 वर्ष चला—14 वर्ष की उम्र से 24 वर्ष तक। उसके साथ होने की बदौलत मैंने 10 वर्ष एक आदर्श संबंध में बिताए। संबंधों से जुड़ी बातों पर Katka का दृष्टिकोण बहुत रूढ़िवादी था—हमने कभी एक-दूसरे को धोखा नहीं दिया। मेरे ख़याल से मेरा भीतरी स्वभाव, इन विषयों पर उसकी मान्यताओं की तुलना में, कुछ अधिक मुक्तचिंतन वाला है। Katka यौनिकता को ऐसी चीज़ मानती थी, जिसे केवल एक व्यक्ति को समर्पित होना चाहिए। यह दृष्टि संबंधों की पारंपरिक रूढ़िवादी समझ से आती है और मुख्यतः इसलिए आदर्श मानी जाती है कि इससे समाज में संघर्ष पैदा होने की संभावना कम होती है। आख़िर "व्यभिचार मत करो" Mojžiš की दस आज्ञाओं में से एक है। विवाहेतर जन्मे बच्चों जैसी चीज़ों को अब तक नैतिक नियम तोड़ने के कलंककारी परिणामों के रूप में देखा गया है। अभी तक ऐसा रहना भी सीमित संसाधनों के लिए संघर्ष का एक और परिणाम था। क्योंकि विवाहेतर जन्मा बच्चा या सौतेला बच्चा किसी भी संबंध में अपने जन्म से लेकर दंपति की मृत्यु तक लगातार समस्याओं का स्रोत बना रहता है—यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी, उत्तराधिकार की कार्यवाही के उतार-चढ़ाव के माध्यम से। मेरे विचार से यौनिकता को उचित सीमा के भीतर सबसे पहले मनुष्य को आनंद देना चाहिए।

यदि समाज में संसाधनों के वास्तव में न्यायपूर्ण वितरण की समस्या हल हो जाए—यानी संसाधनों की होड़ से जुड़ी सदियों पुरानी समस्या न रहे—तो यौनिकता के प्रति समाज के बहुसंख्यक हिस्से का दृष्टिकोण कहीं अधिक उदार हो जाएगा। आधुनिक विकसित समाज में इतनी समृद्धि होगी कि संपत्ति और भविष्य की सुरक्षा को लेकर किसी भी तरह के भय का अर्थ ही समाप्त हो जाएगा।

सीधी बात है कि पारंपरिक रूढ़िवाद जिन मान्यताओं पर खड़ा है, वे निकट भविष्य में बदलेंगी और यह दृष्टिकोण फिर प्रासंगिक नहीं रहेगा। मेरा मानना है कि बच्चों के पालन-पोषण के समय परिवार के लिए विशेष रूप से समर्पित समय की समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका आगे भी बनी रहेगी। लेकिन जब बच्चे शुरुआती वयस्कता तक पहुँच जाएँगे और समझने लगेंगे कि संबंध कैसे काम करते हैं, तो जीवन भर एक ही संबंध में बने रहना मेरे विचार से मानव स्वभाव के अनुरूप नहीं है। ख़ासकर तब, जब हम ध्यान में रखें कि चिकित्सा की प्रगति के कारण लोगों के असीमित समय तक जीवित रहने की काफ़ी संभावना है।

तो अपनी बात पूरी करूँ—यदि किसी दंपति के छोटे बच्चे हैं, तो समाज के हित में है कि दोनों माता-पिता मिलकर उनका पालन-पोषण करें, और अच्छा होगा कि माता-पिता के व्यवहार में एक-दूसरे के प्रति प्रेम दिखाई दे। बच्चे को महसूस होना चाहिए कि वह दो लोगों के प्रेम की उपज और उसका साकार रूप है, और उसे जन्म देने का निर्णय लेकर उन दोनों ने एक बड़ा दायित्व स्वीकार किया है। लेकिन आज गिरजाघर में विवाह के समय जो वचन लिया जाता है—"जिसे ईश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे"—उसे जीवन के अंत तक लागू करना अत्यधिक बंधनकारी है और मनुष्य के खिलंदड़े स्वभाव से मेल नहीं खाता। संसाधनों के वितरण में न्याय की ओर विश्व व्यवस्था के बदलने का स्वाभाविक परिणाम इस क्षेत्र में भी परिवर्तन होगा।

9 पिता की माँ का अंतिम संस्कार

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ते समय पिता की माँ—मेरी दादी—का निधन हो गया। मैं उनके उतना क़रीब नहीं था, जितना माँ की माँ के। अंतिम संस्कार के समय मैं पिता को बहुत ध्यान से देख रहा था। मैंने मन में ठान लिया था कि यदि उनकी मृत्यु से पिता को बहुत आघात पहुँचा है, तो मैं उन्हें वापस लाने के लिए सब कुछ करूँगा, भले ही उन्हें मरे कई दिन हो चुके हों। पिता ने देखा कि मैं उन्हें ग़ौर से देख रहा हूँ और तभी उनकी आँख से एक आँसू बह निकला। मेरे लिए इतना ही काफ़ी था। मैंने अपनी सारी मानसिक ऊर्जा इस बात पर केंद्रित कर दी कि दादी जाग उठें। मैं अपनी चेतना से इतनी तीव्रता से उन्हें वापस बुला रहा था कि फिर लगभग बेहोश हो गया। मेरे पास खड़ी मेरी आंटी को मुझे सहारा देना पड़ा।

तभी मृत्यु के साथ मेरा पहला कठोर, सीधा सामना हुआ—ऐसा लग रहा था कि किसी ऐसी चीज़ को पलटना मेरे वश में नहीं है, चाहे मैं कितना भी चाहूँ। कुछ वर्षों बाद, Katka से अलग होने के थोड़े समय बाद, विश्वविद्यालय के कुछ सहपाठी मुझसे मिलने Praha आए, जहाँ मैं तब रहता था। हम किसी बार में थे, जहाँ तीन लड़कियों का एक समूह भी मौज-मस्ती करने आया था। उनमें से एक का नाम Karolína था—यानी वही नाम, जो मेरी दिवंगत दादी का था। मैंने उसके नाम के बारे में कोई विचार नहीं किया था, लेकिन जब पिता को बताया कि मैं Karolína को डेट कर रहा हूँ, तो वे सन्न रह गए। तब मुझे समझ आया कि वे अच्छी तरह जानते थे कि अंतिम संस्कार के समय मैंने क्या ठाना था, और संभावित Karolína Bošková के साथ मेरे संबंध को उस संकल्प के किसी तरह पूरा होने के रूप में देख रहे थे। मैंने उसके साथ संबंध ऐसे किसी इरादे से शुरू नहीं किया था। अंततः वह संबंध भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। उससे मेरे भीतर यह सीख रह गई कि शायद मैं किसी प्रियजन की मृत्यु जैसी चीज़ों को उलट नहीं सकता, लेकिन उस क्षण लगाया गया मानसिक प्रयास बाद में किसी अप्रत्याशित ढंग से प्रकट हो सकता है और किसी रूप में बूमरैंग की तरह मेरे पास लौट सकता है।

10 प्रोग्रामिंग की पहली परियोजनाएँ

पहले वर्ष में Pascal की बुनियादी बातें सीखने के बाद मैं अपनी पहली परियोजना में जुट गया—एक ऐसा प्रोग्राम, जिसमें Windows के Paintbrush की तरह माउस से कैनवस पर चित्र बनाए जा सकते थे।

मैंने किसी तरह उसका पहला संस्करण जोड़-तोड़कर बना लिया। उसमें शायद वे सभी शुरुआती ग़लतियाँ थीं, जो कोई प्रोग्रामर कर सकता है। तब मैं यह भी नहीं जानता था कि प्रोसीजर और फ़ंक्शन क्या होते हैं, इसलिए सब कुछ प्रोग्राम के मुख्य लूप में ठूँस दिया था। सीधी बात, पूरी तबाही। जब उपयोगकर्ता के बनाए चित्र को फ़ाइल में सहेजने की सुविधा जोड़नी थी, तो मुझे ऊपरी कक्षा के अपने सहपाठी Áron से मदद माँगनी पड़ी। उसने वह अव्यवस्था देखी और मेरे लिए एक फ़ंक्शन सहेजने का और दूसरा फ़ाइल से पढ़ने का बना दिया। काम करके लौटाते समय उसने कहा: “और सीखो कि प्रोसीजर और फ़ंक्शन कैसे बनाते हैं।” बाद में भी Áron ने मेरे प्रोग्रामिंग जीवन को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित किया। उसने अपनी कक्षा के कुछ होशियार साथियों के साथ मिलकर पहला स्लोवाक एडवेंचर कंप्यूटर गेम बना लिया था, जो बाक़ायदा व्यावसायिक रूप से बिकता था। उसके आसपास प्रोग्रामरों, ग्राफ़िक कलाकारों और पटकथा लेखकों का एक पूरा केंद्र बन गया था, जो उसकी सफलता दोहराना चाहते थे। Tibor और दूसरे सहपाठियों की मदद से मैं वहाँ तक पहुँचा कि हमने 256 रंगों वाले SVGA (640x480) ग्राफ़िक्स में एक ऐनिमेशन इंजन बना लिया। इसका अर्थ था कि स्क्रीन पर एक पृष्ठभूमि थी, जिस पर स्क्रोल किया जा सकता था, और सामने सैनिकों तथा टैंकों की आकृतियाँ थीं। दोनों पर क्लिक करके बताया जा सकता था कि सैनिक या टैंक को कहाँ जाना है। आदेश मिलते ही वह आकृति इच्छित स्थान की ओर चल पड़ती थी। कई आकृतियाँ एक साथ चल सकती थीं और वे निषिद्ध क्षेत्रों में नहीं जाती थीं, जिनका आकार बंद बहुभुजों का था। Tibor ने Dijkstra एल्गोरिद्म का उपयोग करके किसी भी दो बिंदुओं के बीच सबसे छोटा रास्ता ढूँढ़ने का प्रोग्राम बनाया था, ताकि आकृति किसी बहुभुज से घिरे निषिद्ध क्षेत्र में प्रवेश न करे। उस समय तक कोई दूसरा तैयार गेम SVGA रिज़ॉल्यूशन में मौजूद नहीं था। इसका कारण यह था कि उससे पहले ऐसी कोई प्रोग्रामिंग भाषा नहीं थी, जो एक ही वेरिएबल में 64KB से अधिक डेटा रखने देती। इतना डेटा केवल 320x200x256 रंगों के रिज़ॉल्यूशन के लिए पर्याप्त था। Áron का अनुसरण करते हुए हमने जिस Watcom C/C++ में इसे बनाया था, उसमें यह अब संभव था।

हमारी यह महान कृति किसी व्यावसायिक संभावना वाली चीज़ से बहुत दूर थी, लेकिन भविष्य में नौकरियाँ पाने में उसने मेरी बहुत मदद की। जब भी मैं उसे किसी को दिखाता, प्रतिक्रिया कुछ ऐसी होती: “तुम्हारी प्रतिभा हमारे यहाँ व्यर्थ जाएगी, तुम्हें इसी काम को आगे बढ़ाना चाहिए।” आज भी उस गेम का सोर्स कोड मैंने सँभालकर रखा है। जब कभी कोई कमज़ोर या कठिन क्षण आता है, तो उसे चला लेता हूँ, ताकि स्वयं को याद दिला सकूँ कि जब Tibor और मैं 14 वर्ष की उम्र में ही इतने कुशल थे, तो चीज़ें उतनी बुरी नहीं हो सकतीं, जितनी उस समय लग रही हों।



11 Ekonomická univerzita

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पूरा करने के बाद किस विश्वविद्यालय में जाऊँ, यह तय करते समय स्वाभाविक रूप से प्रोग्रामिंग सबसे पहली प्राथमिकता थी। तकनीकी दिशा वाले संस्थान भी थे, जैसे Slovenská technická univerzita की Fakulta elektrotechniky a informatiky (FEI), या सीधे MatFyz। MatFyz की प्रवेश परीक्षा में पता चला कि मेरी गणितीय प्रतिभा इतनी असाधारण नहीं थी कि वहाँ की पढ़ाई में मुझे संघर्ष न करना पड़े। ईश्वर का शुक्र है, मैं प्रवेश परीक्षा भी पास नहीं कर पाया। बाद में कई बार ऐसे लोगों से मुलाक़ात हुई, जो MatFyz की पढ़ाई नहीं सँभाल पाए और अंततः, मसलन, Ekonomická univerzita पहुँच गए। जब भी ऐसा कोई मामला देखता, आभारी होता कि मेरा वैसा हाल नहीं हुआ और मैंने पहली बार में ही सही संस्थान चुन लिया। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के परिणामों के आधार पर FEI ने मुझे बिना प्रवेश परीक्षा के स्वीकार कर लिया था। लेकिन मैं वहाँ जाना नहीं चाहता था, क्योंकि पहला वर्ष बहुत कठिन मेहनत का होता था और अंत में ऐसी छँटनी होती थी, जिसमें पहले वर्ष के कई दसियों प्रतिशत छात्र बाहर कर दिए जाते थे। Ekonomická univerzita चुनने में Tibor का मुझ पर काफ़ी प्रभाव था, क्योंकि वह शुरू से वहीं जाना चाहता था। मुझे वह विशेष रूप से तब अच्छा विकल्प लगने लगा, जब कुछ चुटकुले सुने—कहते थे कि वह 'ट्राम वाला विश्वविद्यालय' है और वहाँ पढ़ाई केवल वही पूरी नहीं कर पाता, जिसे Bratislava में ट्राम कुचल दे। इसका मतलब था कि पढ़ाई के साथ शायद काम करने का समय भी मिल जाएगा। बाद में यह सोच बहुत समझदारी भरी और सही साबित हुई।

प्रवेश परीक्षा में बहुत अच्छे परिणाम लाने में मेरे एक मित्र ने मदद की। उसने उसी दिन परीक्षा दी थी और मेरे सामने वाली बेंच पर बैठा था। गणित के आख़िरी तीन सवाल मैं उससे नक़ल कर सका, जिन्हें निर्धारित समय में स्वयं हल नहीं कर पाया था। उसी समय पहली बार मुझे गंभीरता से यह एहसास हुआ कि स्वयं कुछ क्षमताएँ होने से अधिक महत्त्वपूर्ण है उन लोगों के साथ अच्छे संबंध होना, जिनमें वे क्षमताएँ हैं। और फिर ऐसे परिचयों के नेटवर्क से उत्पन्न प्रभाव का लाभ उठाना। इस छोटी-सी बेईमानी के बिना भी मेरा प्रवेश हो जाता, लेकिन परिणामों की सूची में मेरा स्थान इतना ऊँचा नहीं होता और बाद में छात्रावास में मुझे उन सहनिवासियों के साथ कमरा नहीं मिलता, जिनके साथ अंततः मिला।

विश्वविद्यालय के पहले ही सप्ताहों में मैंने काम तलाशना शुरू कर दिया। तब Slovensko में इंटरनेट लगभग शैशवावस्था में था, लेकिन विश्वविद्यालय से मिले ईमेल पते और कक्षाओं में इंटरनेट की सुविधा की बदौलत मैंने जल्दी ही Slovenská sporiteľňa के एक व्यक्ति के साथ साक्षात्कार तय कर लिया। जब बैंक की शाखा में पहुँचा और उसके कार्यालय तक गया, तो सब कुछ असाधारण सहजता से हुआ। चलने वाले सैनिकों और टैंक की अपनी परियोजना दिखाना भर काफ़ी था; सब स्पष्ट हो गया। वह मुझे तुरंत Asset कंपनी की इमारत में ले गया, जो उस समय Slovenská sporiteľňa को बैंकिंग सूचना प्रणाली उपलब्ध कराती थी। वह मुझे प्रतिभूतियों की परियोजना के प्रमुख Julo Petrenko के पास ले गया। Julo मेरे पिता से कुछ छोटे थे और पहली ही मुलाक़ात में हमारी पट गई। जब हम उनके कार्यालय में पहुँचे, तो उनके पैर मेज़ पर थे और वे कद्दू के बीजों के छिलकों से सने हुए थे। मेरे साक्षात्कार के दौरान भी वे बिना किसी संकोच के लगातार बीज चटकाते रहे। बैंक वाले व्यक्ति ने सैनिकों वाली मेरी परियोजना का ज़िक्र किया और बात हाथ मिलाने पर समाप्त हुई। मुझे Oracle डेटाबेस प्रणाली की लगभग 700 पन्नों की पुस्तिका दे दी गई और कहा गया कि

इसे पढ़कर अगले सप्ताह आ जाऊँ। Julo मुझे 'नौजवान' कहने लगे और मैं उन्हें Július। मुझे संदेह था कि उन्हें यह बहुत पसंद नहीं आता, लेकिन उनके पास चारा नहीं था; साक्षात्कार में जो कुछ मैंने देखा था, उसके बाद यह नाम किसी तरह उन पर जँचता था।

विश्वविद्यालय का पहला सेमेस्टर यह आज़माने में बीता कि व्याख्यानों में उपस्थित होना वास्तव में कितना आवश्यक है। कुछ अध्यापक इसकी माँग करते थे, दूसरों के यहाँ अनिवार्य अभ्यास-कक्षाओं में थोड़ी-बहुत तैयारी के साथ पहुँचना ही काफ़ी था। इस तथ्य का बहुत बड़ा लाभ मिला कि मैं उस कंपनी में काम करता था, जो सबसे बड़े स्लोवाक बैंक को सूचना प्रणाली उपलब्ध कराती थी। सूचना-विज्ञान का सेमेस्टर क्रेडिट पाने के लिए एक साधारण डेटाबेस परियोजना बनानी थी, जिसके माध्यम से डेटाबेस के सामान्यीकरण और डिज़ाइन की बुनियादी बातें दिखाई जा सकें। मैंने परियोजना लगभग 1,5 घंटे में पूरी कर ली—उसका नाम था 'प्रतिभूति पोर्टफ़ोलियो का प्रबंधन'। मैंने अच्छे से तालिकाएँ बना लीं—पोर्टफ़ोलियो की तालिका, प्रतिभूतियों के प्रकारों की तालिका, और ग्राहक, पोर्टफ़ोलियो तथा स्वामित्व वाली प्रतिभूतियों की सूचियों के बीच M: N संबंध। जब मैंने उसे जमा किया, तो सब देखते रह गए। अभ्यास-कक्षा के अध्यापक ने पूछा: "क्या आपको पता भी है कि पोर्टफ़ोलियो होता क्या है?" मैंने कहा कि मैं उस कंपनी में काम करता हूँ, जो Slovenská sporiteľňa की सूचना प्रणाली बनाती है। प्रतिभूतियों की परियोजना पर। कुछ देर उनका मुँह खुला रह गया—आख़िर पहले वर्ष का ऐसा छात्र, जिसने इतनी जल्दी इस तरह की नौकरी पा ली हो और पढ़ाई के साथ वैसा काम भी सँभाल रहा हो, शायद रोज़ दिखाई नहीं देता था।

पहली परीक्षा-अवधि भी इस बात की कसौटी थी कि मैं कितनी छूट ले सकता हूँ। मेरा लक्ष्य कम से कम पढ़ना, कम से कम ग्रेड 3 पाना और काम को अधिकतम समय देना था। Julo इस बात पर मुझे चिढ़ाते थे। उनका कहना था कि Ekonomická में पढ़ने वाले उनके परिचित परीक्षा की तैयारी पर ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन लगाते हैं। मैं विरोध करता कि यह मेरी पहली परीक्षा-अवधि है और मैं इसे हल्के में नहीं लेना चाहता। क्रिसमस के तुरंत बाद पहली परीक्षा एक महत्त्वपूर्ण विषय की थी—सामान्य आर्थिक सिद्धांत, यानी VET। पहले वर्ष के सभी छात्रों के लिए यह बड़ा डर था। सौभाग्य से इस विषय में मेरी अध्यापिका शायद सबसे अच्छा विकल्प थीं। ज्ञान होना ज़रूरी था, लेकिन यदि कोई उसे दिखा दे, तो कम से कम ग्रेड 3 पाए बिना नहीं लौटता था। क्रिसमस के बाद मैं अच्छी तरह पढ़कर, प्रसन्न मन से छात्रावास लौटा और परीक्षा से पिछली शाम मुझे जीत बिल्कुल निश्चित लग रही थी। हुआ भी वही। मुझे ग्रेड 1 मिला। हालाँकि मैंने शायद सबसे आसान प्रश्न चुना था—मुक्त बाज़ार में माँग, आपूर्ति और क़ीमत का संबंध। परीक्षक ने टिप्पणी की कि एकदम शुरुआत में ही इतना आसान प्रश्न मिल गया। मैंने कहा कि तो फिर मैं दूसरा प्रश्न चुन लेता हूँ। वे हँसीं और बोलीं कि भाग्य तैयारी करने वालों का साथ देता है, इसलिए इसी को रहने दूँ।

मेरी दूसरी परीक्षा इतनी आसान सैर नहीं थी। विषय था क़ानून का परिचय। उसे कुछ मिज़ाज बदलने वाली अध्यापिका पढ़ाती थीं, जो प्रश्न से संबंधित कोई बात धुँधली-सी याद होने पर भी ग्रेड 3 दे देती थीं। मगर निर्णायक बात यह थी कि व्यक्ति अपने डर से घिग्घी बँध जाने का संकेत न दे। पहली कोशिश में मैं उनका मिज़ाज समझ नहीं पाया था, इसलिए वह ग्रेड 3 भी नहीं मिला। जैसे-जैसे परीक्षा-अवधि आगे बढ़ी और मेरे पीछे सफल परीक्षाओं की संख्या बढ़ती गई, मैंने कई सहपाठियों से क़ानून की परीक्षा के बारे में बात की। ऐसे क़िस्से सुने कि उन्होंने परीक्षा से एक दिन पहले नोट्स पढ़े और आराम से ग्रेड 3

ले लिया। मैं सोचता रहा कि इसकी तरकीब क्या हो सकती है—और फिर एक सहपाठी की बात सुनते हुए समझ आ गया। वह बता रहा था कि उसने अध्यापिका से अपने काम के बारे में बातचीत की थी। बस, उन्होंने उसे अपने बराबर का व्यक्ति समझा था। उनके साथ बातचीत करके वह मानो अंक माँगते छात्र की भूमिका से बाहर निकल आया और उन्हें दिखा दिया कि वास्तव में दोनों बराबर हैं। यह सीख लेकर मैं फिर परीक्षा देने गया। चुने गए प्रश्न पर जो जानता था, वह बताया, लेकिन ध्यान रखा कि अच्छे परिणाम के साथ निकलने को लेकर अपनी बेचैनी का ज़रा भी संकेत न दूँ। मैंने ऐसा जताया कि मुझे कमोबेश कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, और अंततः यह काम कर गया। यह उन अंकों में से एक था, जो मुझे ज्ञान की तुलना में परीक्षक के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से अधिक मिले। क़ानून के लगभग 400 पन्नों के नोट्स की हर बात याद करना मेरे लिए अपेक्षाकृत कठिन था, क्योंकि उन्हें पढ़ना भी मुझे रुचिकर नहीं लगता था। याद करना तो दूर की बात थी। आगे ऐसी और भी परीक्षाएँ आईं, जिनमें परीक्षक को समझने की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, लेकिन पहले वर्ष में यह पहली संभावित बड़ी समस्या थी, जिससे मैंने भविष्य के लिए बहुत कुछ सीखा।

विश्वविद्यालय की पहली गर्मियाँ Katka और मैंने मेरी नौकरी की जगह के पास एक छात्रावास में साथ रहकर बिताईं। धीरे-धीरे मैं इतना कमाने लगा, जितना उस समय मेरे माता-पिता दोनों मिलकर भी नहीं कमाते थे। इसमें इस बात का भी बड़ा योगदान था कि मैंने स्वरोज़गार का पंजीकरण कराया और अपने करों तथा अनिवार्य अंशदानों को अनुकूलित किया। उस समय एक सामान्य स्थायी कर्मचारी के वेतन पर करों और अंशदानों में शायद 50 % चला जाता था; मैं उसकी तुलना में काफ़ी कम—शायद लगभग 25%—देता था। इस तरह मेरे हाथ में कहीं अधिक शुद्ध आय बचती थी और विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी होने तक मैंने इतने पैसे बचा लिए थे कि Nitra में अपना पहला तीन कमरों का फ़्लैट नक़द ख़रीद सकूँ। वह फ़्लैट आज भी मेरे पास है और मेरी संपत्ति का बड़ा हिस्सा है, क्योंकि ख़रीदने के समय (2002) से आज (2025) तक उसकी क़ीमत 6 गुने से अधिक हो गई है।

Asset में काम करते हुए मैंने एक ऐसी घटना देखी, जिसने मुझे समझाया कि अपने कर्मचारियों के साथ सही व्यवहार कैसे करना चाहिए और किसी असंभव लगती बात को पूरी टीम के पक्ष में कैसे मोड़ा जा सकता है। हम एक परियोजना पर काम कर रहे थे, जिसके तहत बैंक के ग्राहकों के लिए ऐसा उत्पाद बनना था जिसमें वे अपने पोर्टफ़ोलियो में प्रतिभूतियाँ संचित कर सकें, और साथ ही वे अतिरिक्त पैसे, जो उस समय प्रतिभूतियों में नहीं लगे हों, सामान्य से बेहतर ब्याज वाली सावधि जमाओं में लगा सकें। मुझे लगता है कि वह चुनावों के आसपास का समय था, जब बैंक का कोई कर्मचारी Asset की उस परियोजना को स्वीकार करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने का साहस नहीं कर रहा था, क्योंकि सब चुनाव के परिणाम का इंतज़ार कर रहे थे। ग्राहक की ओर से बैंक में हमसे एक नौजवान बात करता था, जो शायद मुझसे बस थोड़ा ही बड़ा था। उनकी ओर से परियोजना स्वीकार न करने का आधिकारिक कारण यह दिया गया कि परीक्षण का समय नहीं है। और मैं, भोला, बड़ी राजनीतिक परिस्थितियों से पूरी तरह अनजान, बैंक के उस युवा अधिकारी के साथ दोपहर के भोजन पर मिलने का समय तय कर बैठा, ताकि उसे परीक्षण में मदद देने का प्रस्ताव रखूँ—जिससे परियोजना की औपचारिक स्वीकृति हो सके। भोजन पर उसने मुझे समझाया कि वास्तव में मामला क्या है। जब Julo को पता चला कि मैं उसके साथ भोजन करने गया था, तो ऐसा हंगामा हुआ कि मैं देखता रह गया। अब ठीक-ठीक विवरण याद नहीं हैं, लेकिन उस समय Julo मुझे Asset के मालिक Chrenko के साथ भोजन पर ले गए। Chrenko कुछ समय तक Forbes के

अनुसार सबसे धनी स्लोवाकों में शामिल रहे हैं, या अब भी हैं। उसके बाद जो हुआ, उससे स्पष्ट लगता था कि Chrenko ने Julo को आदेश दिया था कि परियोजना हर क़ीमत पर सौंपनी ही होगी। पृष्ठभूमि में ठीक क्या हुआ या नहीं हुआ, मैं नहीं जानता, लेकिन मैं चकित था कि एक मामूली छात्र, जो किसी भोले मूर्ख की तरह किसी मामले में उँगली कर दे, ऐसा भूकंप पैदा कर सकता है। अगले कुछ सप्ताह Julo का सिर परियोजना की चिंता से भरा रहा। अंततः कुछ उलझनों के बाद परियोजना सफलतापूर्वक सौंप दी गई। परदे के पीछे कुछ ऐसा ज़रूर हुआ होगा, जिसकी ख़बर मुझ तक नहीं पहुँची—इसके अलावा मैं इसकी कोई व्याख्या नहीं कर सकता। लेकिन यह भी संभव है कि समस्या हल करने की मेरी उस भोली कोशिश के बिना घटनाओं का वह पूरा हिमस्खलन शुरू ही नहीं होता। मैंने इससे यह सीख ली कि परियोजना का सबसे मामूली व्यक्ति भी चमत्कार कर सकता है। तब से मैं अपनी टीम के किसी सदस्य को कम नहीं आँकता, क्योंकि जो देखने में कमज़ोर पक्ष में हों, अंत में वही सबसे महत्त्वपूर्ण बातों का फ़ैसला कर सकते हैं। अक्सर परियोजना में जो लोग ऊपर से कम महत्त्वपूर्ण दिखते हैं, वास्तव में उन्होंने उसकी सफलता में अपने मन का ऐसा निवेश किया होता है कि उसकी सफलता से जुड़े वास्तविकता के तत्वों पर उनका कहीं अधिक प्रबल नियंत्रण रहता है।

विश्वविद्यालय की दूसरी गर्मियाँ मैंने Horský park के उस छात्रावास में रहकर बिताईं, जो Ekonomická univerzita का था—वही जहाँ मैं शैक्षणिक वर्ष के दौरान भी रहता था। नौकरी में मेरी एक नई सहकर्मी आई थीं, Ľudmila, जो Ekonomická से ही स्नातक थीं। वे काफ़ी कुशल थीं, लेकिन उनकी जिस बात ने मुझे सबसे अधिक चौंकाया, वह उन क्षेत्रों तक उनकी पहुँच थी, जिनकी ओर मैं शायद अपने आप कभी न भटकता। वे थोड़ी-सी अँधेरे मिज़ाज के गोथिक संगीत की ओर झुकी हुई थीं, काले कपड़े पहनना पसंद करती थीं, लेकिन उन्हें चमकीली नीली विग लगाकर काम पर आने में भी कोई परेशानी नहीं थी। Ľudmila ने मेरा ध्यान František Bardon नाम के एक व्यक्ति के लेखन की ओर दिलाया। उन्हें अपने बारे में यह सुनना पसंद था कि वे श्वेत जादूगर हैं, और उन्होंने कुछ पुस्तकें लिखी थीं, जो वास्तविक जादूगर बनने की व्यावहारिक मार्गदर्शिका जैसी मानी जाती थीं। कहते हैं, Bardon को पहले Nemecko में नाज़ियों ने और बाद में Slovensko में कम्युनिस्टों ने क़ैद किया था। जिज्ञासावश मैंने उनकी कुछ पुस्तकें पढ़ीं। उनमें वर्णित कुछ बातें सचमुच प्रेरक थीं—यह समझाने वाले विवरण कि कुछ चीज़ें कैसे काम करती हैं। जब मैंने उनके सुझाए कुछ अभ्यास करने की कोशिश की—मसलन अपने विचारों पर निगरानी रखते हुए कुछ भी न सोचने पर ध्यान केंद्रित करना—तो जल्दी ही पाया कि ऐसे प्रयोग लाभ से अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। दरअसल कुछ भी न सोचने की कुछ कोशिशों के बाद मुझे महसूस हुआ कि काम पर ध्यान लगाना कठिन हो रहा है। और मेरे लिए वह ऐसी लाल रेखा थी, जिसे पार करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। उनकी दूसरी सिफ़ारिशों में एक यह थी कि अपना तावीज़ बनाया जाए—कोई प्रिय वस्तु चुनी जाए और रात को उसे किसी ऐसी जगह रखा जाए जहाँ पहुँचना आसान न हो, जैसे अलमारी के ऊपर। फिर हर रात स्वयं को उठने और उस वस्तु को छूने के लिए बाध्य किया जाए। इस तरह आधी रात को उठने में लगाई गई ऊर्जा उसमें इकट्ठी होती और वह वस्तु उस व्यक्ति के लिए सकारात्मक ऊर्जा से भरा एक शुभ तावीज़ बन जाती। मैंने इसे कभी आज़माया नहीं, लेकिन उस विवरण से मुझे यह काफ़ी संभव लगा कि व्यक्ति सचमुच इस तरह सकारात्मक ऊर्जा से भरी वस्तु बना सकता हो। कम से कम वह ऐसा मान तो सकता ही था, और शायद उस वस्तु में वे गुण होने के लिए इतना काफ़ी होता। Bardon से मेरा विश्वास पूरी तरह तब उठा, जब किसी इंटरनेट फ़ोरम पर एक व्यक्ति की स्वीकारोक्ति मिली, जिसने उनके निर्देशों का पालन किया था और माना था कि श्वेत जादू से वह बिल्कुल कुछ हासिल नहीं कर पाया। उनके अभ्यासों को करना मुझे समय की बर्बादी लगने

लगा। कुछ समय पहले मैंने एक तुलना देखी थी—दुनिया का वह नक़्शा जैसा लोग प्राचीन काल और यूनानी-रोमी पुराकाल में उसे देखते थे: बीच में भूमध्यसागर और आसपास कुछ ऐसा, जो आज के परिचित देशों की दूर की झलक देता था; उसके सामने दुनिया का आधुनिक नक़्शा। मानो किसी छोटे बच्चे ने असली नक़्शे पर देखी चीज़ों को याद से बनाने की कोशिश की हो। आधुनिक विज्ञान की तुलना में चीज़ों के काम करने को लेकर Bardon का ज्ञान मुझे ठीक वैसा ही लगा। आधुनिक समाज का जादू विज्ञान है, जो हमारे ज्ञान के नक़्शे को धीरे-धीरे अधिक सूक्ष्म और अधिक सटीक बनाता जाता है। फिर भी यह पढ़ना एक प्रेरक प्रयोग था कि सौ वर्ष से भी कम पहले का एक मनुष्य प्रकृति के काम करने के ढंग को कैसे देखता था।

12 Amerika में गर्मियाँ

सन् 2000 की गर्मियाँ मैंने हमेशा की तरह काम करते हुए नहीं बिताईं। Katka और मैंने Work & Travel कार्यक्रम के ज़रिए गर्मियों में Amerika जाकर काम करने की व्यवस्था कर ली थी। हम दोनों Wisconsin Dells के Noah's Ark वॉटर पार्क में सफ़ाई दल के सदस्य थे। Wisconsin Dells, Wisconsin की राजधानी Madison से कुछ दूर स्थित एक छोटा-सा पर्यटन नगर है।

पार्क में अस्थायी कर्मचारी के रूप में Amerika को देखना जीवन भर याद रहने वाला अनुभव था। वहाँ सचमुच जाने से पहले मैं सोचता था कि एक दिन वहीं बस जाऊँगा और अपने करियर को पूरी ऊँचाई तक ले जाऊँगा, क्योंकि उसके लिए सबसे अच्छी परिस्थितियाँ वहीं थीं। मगर उस गर्मी के बाद मुझे समझ आ गया कि मेरे लिए Európa में रहना कहीं अधिक सहज होगा। वहाँ मुझे सड़कों की बनावट जैसी बुनियादी बात तक पसंद नहीं आई। सब कुछ मेरे लिए बहुत चौड़ा और खुला-खुला था। Európa की तरह संकरी, आत्मीय गलियों वाला कोई नगर-केंद्र नहीं। वहाँ मेरा मन नहीं लगा। Katka की वजह से भी चैन में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही थी। जीवन में पहली बार वह इतने लंबे समय के लिए अपने परिवार से दूर थी और इसे बहुत बुरी तरह झेल रही थी। हमारे प्रवास के बिलकुल शुरू में ही इस बात पर झगड़ा हुआ कि क्या हम तुरंत पलटकर घर लौट जाएँ, और उसके बाद वह कुछ समय के लिए गायब हो गई। मैं पागलों की तरह साइकिल पर पूरे Wisconsin Dells में उसे ढूँढ़ता फिरा। मन में बस यही ख़याल था कि उसके माता-पिता को जब बताऊँगा कि Amerika के बीचोंबीच वह मेरे पास से यूँ ही खो गई, तो वे मुझसे क्या कहेंगे। तनाव ऐसा कि जान निकल जाए। एक वक़्त तो मुझे सचमुच लगा कि किसी ने उसका अपहरण कर लिया है या ऐसा ही कुछ हुआ है। आख़िरकार वह उस मकान के पास आराम से झूला झूलती मिली जहाँ हमारे रहने का इंतज़ाम किया गया था।

लेकिन उस दिन मेरे भावनात्मक कर्म के खाते में मेरे अब तक के जीवन की सबसे गहरी प्रविष्टि दर्ज हुई। कुछ देर के लिए मुझे सचमुच विश्वास हो गया था कि बहुत बुरा कुछ घट चुका है। बाद में, जब हमारा अलगाव हो चुका था और Katka Londýn में औ पेयर का काम कर रही थी, तो उसके साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। कुछ समय तक वह भी उतने ही तनाव में Londýn भर में उन बच्चों को ढूँढ़ती रही जिन्हें उसकी देखरेख में सौंपा गया था।



Wisconsin Dells के Noah's Ark वॉटर पार्क में काम के दौरान



Wisconsin में छुट्टी के दिन Katka के साथ

13 दृश्यमान धन के विचार से पहला परिचय — Neal Donald Walsch की कृतियाँ

सहस्राब्दी के मोड़ के आसपास मैंने अमेरिकी लेखक Neal Donald Walsch की पुस्तक-श्रृंखला ईश्वर से संवाद 1-3 पढ़ी। ये पुस्तकें असाधारण हैं। लेखक इनमें मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र पर विचार करता है। मनुष्य और ईश्वर के बीच की प्रक्रियाएँ कैसे काम करती हैं, इस विषय के उसके कुछ मूलत: अस्तित्वमीमांसात्मक विवेचनों को मैं इस क्षेत्र में अपनी पढ़ी हुई सबसे महान और सबसे विस्तार से सोची गई कृतियों में गिनता हूँ। वह व्यक्ति धार्मिक चिंतन का विलक्षण प्रतिभावान है। पहली पुस्तक की शुरुआत में ही उन बुनियादी अस्तित्वमीमांसात्मक सिद्धांतों पर चर्चा है जिन्हें मैं अपने चिंतन से जानता था, मगर जिन्हें इतनी एकजुट और समझने योग्य अभिव्यक्ति में मैंने और कहीं नहीं देखा था।

एक कट्टर नास्तिक शायद उसकी रचना का पूरा मूल्य न समझ पाए, क्योंकि उसकी भाषा ठोस, वस्तुपरक अवधारणाओं में बात नहीं करती। वह बार-बार समग्र सत्ता जैसे शब्दों का प्रयोग करता है और उस सत्ता को मानवीय गुण भी देता है, जैसे कि सत्ता स्वयं को जानना चाहती थी, वगैरह। मगर उसे पढ़ते हुए मेरे लिए सारी बातें बिल्कुल अपनी-अपनी जगह बैठ गईं। शुरुआत में ही वह, उदाहरण के लिए, एक इतनी सरल और उपयोगी बात पर चर्चा करता है कि प्रार्थना सही ढंग से कैसे की जाए। सही प्रार्थना यह है कि मनुष्य अपने भीतर ईश्वर को उन बातों के लिए धन्यवाद दे जो उसके जीवन में पहले ही घट चुकी हैं। किसी घट चुकी बात के लिए कृतज्ञता व्यक्त करके वह वास्तव में जीवन के अर्थ को साकार करता है। क्योंकि जो अस्तित्व में है, उसे वह उसी रूप में स्वीकार करता है जिसमें वह घटा था; वह पुष्टि करता है कि जो हुआ, वह अच्छा था। और यही ईश्वर तथा मनुष्य, दोनों के कानों के लिए सही संगीत है। यदि कोई प्रार्थना में कोई शर्त रखता है, जैसे 'हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे', तो वास्तव में वह यह कह रहा है कि ऐसी स्थिति भी आ सकती है जिसमें किसी कारण हमें वह रोटी न मिले। यह ऐसा है जैसे आपका अपना बच्चा आपको रोज़ याद दिलाए कि उसे खाने की ज़रूरत है। इसे स्पष्ट रूप से कहने की तो आवश्यकता ही नहीं; हर ज़िम्मेदार माता-पिता को यह मालूम होता है। कुल मिलाकर 'हे हमारे पिता' की प्रार्थना मुझे अधिकतर ऐसे मनुष्यों की बनाई हुई चीज़ लगती है जिन्होंने अपने मानवीय दृष्टिकोण से किसी तरह ईश्वर के साथ संबंध को समझने की कोशिश की। उसमें और भी कई बातें बहस के योग्य हैं। मसलन, इतनी-सी बात कि ईश्वर केवल स्वर्ग में तो नहीं रहता।

इन तीन पुस्तकों में दूसरी पुस्तक एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था पर भी चर्चा करती है। शायद सबसे अच्छा होगा कि पुस्तक का एक अंश उद्धृत कर दूँ:

"यह प्रस्ताव नहीं, एक आह्वान है। मैं तुमसे कहता हूँ कि सारा पैसा, सारे नोट और सिक्के, सभी राष्ट्रीय मुद्राएँ त्याग दो और एकदम नए सिरे से शुरू करो। एक ऐसी अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था लागू करो जो पूरी तरह खुली हो, जिसकी जाँच की जा सके और जो पारदर्शी हो। एक विश्वव्यापी निपटान प्रणाली बनाओ जिसमें दी गई सेवाओं के लिए क्रेडिट और उपयोग की गई सेवाओं तथा उपभोग की गई वस्तुओं के लिए डेबिट दर्ज हों। हर चीज़ का लेखा रखा जाए। निवेश से होने वाला लाभ, विरासत, लॉटरी में जीती गई रकम, वेतन और मज़दूरी, बख़्शीश — बस, सब कुछ। क्रेडिट के बिना कुछ भी ख़रीदा न जा सके। कोई दूसरी मुद्रा हो ही नहीं। सभी वित्तीय अभिलेख हर व्यक्ति की पहुँच में हों। कहा जाता है कि बैंक खाते से मनुष्य

को पहचाना जा सकता है। यह व्यवस्था उसी के क़रीब पहुँचती है। लोग एक-दूसरे के बारे में आज से कहीं अधिक जानते होंगे। तुम केवल एक-दूसरे के बारे में ही अधिक नहीं जानोगे, बल्कि हर चीज़ के बारे में अधिक जानोगे। तुम्हें मालूम होगा कि कंपनियाँ कितना भुगतान करती हैं और कितना ख़र्च करती हैं; उनकी उत्पादन लागत और बिक्री की क़ीमत क्या है। (क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि ऐसी कंपनियाँ क्या करेंगी यदि उन्हें हर वस्तु पर दो क़ीमतें लिखनी पड़ें? इससे क़ीमतें नीचे आएँगी या नहीं? क्या इससे प्रतिस्पर्धा में नई जान नहीं आएगी और ईमानदार व्यापार को बल नहीं मिलेगा? इस व्यवस्था के परिणामों की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते।) खातों के बीच धनांतरण तत्काल और पूरी तरह दिखाई देने वाले तथा पारदर्शी होंगे। इसका अर्थ है कि कोई भी व्यक्ति कभी भी किसी भी व्यक्ति या कंपनी के वित्तीय अभिलेख देख सकेगा। कुछ भी गुप्त नहीं होगा। CKS उन लोगों की सारी आय और लाभ में से दस प्रतिशत काटेगा जो स्वेच्छा से ऐसी कटौती का अनुरोध करेंगे। ऐसे कोई कर नहीं होंगे जिनसे बचने के रास्ते निकाले जा सकें। चूँकि सारे अभिलेख खुले होंगे, हर कोई जानेगा कि पूरे समाज के हित में अपने लाभ का दस प्रतिशत कौन दे रहा है। इन स्वैच्छिक कटौतियों से सभी सरकारी और सामाजिक कार्यक्रमों का ख़र्च उठाया जाएगा। पूरी व्यवस्था बहुत सरल और पारदर्शी होगी।" इसके लिए कोई राज़ी नहीं होगा। "बेशक नहीं। और जानते हो क्यों? क्योंकि ऐसी व्यवस्था में किसी के लिए भी ऐसा कुछ करना असंभव होगा जिसके बारे में वह दूसरों को बताना न चाहता हो। लेकिन तुम ऐसा कुछ करना ही क्यों चाहोगे? मैं बताता हूँ क्यों। क्योंकि तुम ऐसे समाज में रहते हो जो इस धारणा पर आधारित है कि 'केवल सबसे शक्तिशाली का बचना' पूरी तरह स्वाभाविक है। यदि तुम्हारे समाज का मुख्य उद्देश्य सबके लिए गरिमापूर्ण जीवन होता, जैसा सभी सचमुच प्रबुद्ध समाजों में होता है, तो तुम्हारी रहस्य रखने और चोरी-छिपे काम करने की ज़रूरत ही मिट जाती। क्या तुम्हें एहसास है कि ऐसी व्यवस्था कितना भ्रष्टाचार समाप्त कर देगी? ऐसी व्यवस्था की सफलता का रहस्य दृश्यता और पारदर्शिता है।" अद्भुत विचार। वित्तीय व्यवहार में पूर्ण पारदर्शिता। मैं यह सोचने की कोशिश कर रहा हूँ कि "इसमें बुरा क्या हो सकता है", लेकिन कुछ सूझ नहीं रहा। "बेशक नहीं, क्योंकि तुम्हारे पास छिपाने को कुछ नहीं है। लेकिन क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि इस दुनिया के अमीर और ताक़तवर लोग कितना हंगामा मचाएँगे यदि उन्हें पता हो कि हर ख़रीद और हर बिक्री, हर कारोबारी फ़ैसला और समझौता — सब कुछ हर उस व्यक्ति की पहुँच में है जिसे उसमें दिलचस्पी है? मैं तुमसे इतना कहता हूँ: ईमानदारी की ओर कोई चीज़ उतनी तेज़ी से नहीं ले जाती जितनी पारदर्शिता और दृश्यता। दृश्यता सत्य का ही दूसरा नाम है। सत्य को जानो, और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा। सरकारें, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और इस दुनिया के शक्तिशाली लोग इसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं। इसीलिए वे कभी नहीं चाहेंगे कि कोई भी राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था सत्य पर आधारित हो। प्रबुद्ध समाजों में कोई रहस्य नहीं होते। सब जानते हैं कि दूसरों के पास क्या है, वे कितना कमाते हैं, कितना कर देते हैं; सब जानते हैं कि हर कंपनी क्या ख़रीदती और बेचती है और उसे कितना लाभ होता है। सब लोग सब कुछ जानते हैं। जानते हो, यह केवल प्रबुद्ध समाजों में ही क्यों संभव है? क्योंकि प्रबुद्ध समाज में कोई भी दूसरों की क़ीमत पर कुछ नहीं चाहता।" यह तो जीवन जीने का एक क्रांतिकारी ढंग है। "यह केवल आदिम समाजों में रहने वालों को क्रांतिकारी लगता है। प्रबुद्ध समाजों में यह बिल्कुल सामान्य है।" "दृश्यता" और "पारदर्शिता" का विचार मुझे मोहित कर रहा है। क्या तुम्हें लगता है कि इसे हमारे जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है? क्या यह हमारे निजी संबंधों में व्यवहार का मुख्य सिद्धांत बन सकता है? "मुझे आशा है कि हाँ।" मगर अभी ऐसा नहीं है। "आम तौर पर नहीं। तुम्हारे ग्रह पर नहीं। अधिकांश लोगों के पास अब भी कुछ-न-कुछ छिपाने को है।" क्यों? "निजी संबंधों में, और वास्तव में सभी संबंधों में, लोगों को डर होता है कि वे कुछ खो देंगे या कुछ पा नहीं सकेंगे। फिर भी सबसे

अच्छे निजी संबंध, और निश्चय ही सबसे अच्छे प्रेम-संबंध, वही हैं जिनमें साथी एक-दूसरे के बारे में सब कुछ जानते हैं। ऐसे संबंधों में कोई रहस्य नहीं होता, कोई अनिश्चय नहीं होता, कुछ अनकहा नहीं रहता, कुछ छिपाया नहीं जाता। कोई भी दूसरे को 'मात देने' की कोशिश नहीं करता।" लेकिन यदि हर कोई वह सब जानता हो जो हम सोचते हैं... "ठहरो। हम निजता के अभाव या आध्यात्मिक विकास की असंभवता की बात नहीं कर रहे। मैं उसकी बात बिल्कुल नहीं कर रहा। हम लोगों के साथ व्यवहार में ईमानदारी और खुलेपन की बात कर रहे हैं। इस बात की कि तुम्हें हमेशा सच बोलना चाहिए; जब तुम जानते हो कि सत्य कहना ज़रूरी है, तब उसे दबाना नहीं चाहिए। मैं कह रहा हूँ कि तुम्हें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए, न सत्य को तोड़ना-मरोड़ना चाहिए। हम इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि सभी लोगों के पास वह सारी जानकारी होनी चाहिए जिसकी उन्हें ज़रूरत है। मैं ईमानदारी और निष्कपटता की बात कर रहा हूँ। इसका यह अर्थ नहीं कि तुम्हें अपनी निजी बातें सार्वजनिक रूप से बतानी चाहिए। अपना हर विचार, हर मत, हर स्मृति, हर कल्पना और हर प्रतिक्रिया। वह पागलपन होगा, खुलापन नहीं। यहाँ हम सच्चे और खुले संवाद की बात कर रहे हैं। लेकिन लगता है, यह एक चौंकाने वाला विचार है।" क्या तुम इसे दोहरा सकते हो? "लगता है, यह एक चौंकाने वाला विचार है।" तुम्हें तो कैबरे में मंच पर होना चाहिए। "मैं तो वही कर रहा हूँ।" अब गंभीरता से बात करें, यह विचार सचमुच शानदार है। ऐसे समाज की कल्पना करो जो दृश्यता के सिद्धांत पर टिका हो। तुम्हें लगता है, वह काम करेगा? "मैं तुम्हें कुछ बताता हूँ। कल तक समाज की आधी बीमारियाँ मिट जाएँगी। सारी चिंताओं, टकरावों, द्वेष और कुंठाओं में से आधी... यह निश्चित है कि शुरू में लोग असंतुष्ट और क्रोधित होंगे, जब आख़िरकार उन्हें पता चलेगा कि उनके साथ कितना छल हुआ और उनका कितना शोषण किया गया। मगर दो महीने के भीतर उनका सारा ग़ुस्सा उतर जाएगा। इस पर सोचो। क्या तुम्हें लगता है कि तुम ऐसे जी सकते हो? कोई रहस्य नहीं। पूर्ण पारदर्शिता। संपूर्ण दृश्यता। और यदि तुम ऐसे नहीं जी सकते, तो क्यों? तुम लोगों से क्या छिपाते हो? उनसे क्या असत्य कहते हो? क्या झूठ ने तुम्हारी दुनिया को उस हालत में पहुँचाया है जिसमें तुम उसे देखना चाहते हो? क्या बाज़ार, परिस्थितियों और व्यक्तियों को अपने हित में साधने से तुम्हें कोई लाभ हुआ? क्या 'निजता' सचमुच सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की अनिवार्य शर्त है? यदि हर कोई सब कुछ देख सकता, तो क्या होता? इसमें एक विडंबना है। क्या तुम नहीं समझते कि ईश्वर से पहली भेंट से तुम इसी वजह से डरते थे? क्या तुम नहीं समझते कि तुम्हें इस बात का डर था कि सारा ढोंग समाप्त हो जाएगा? लेकिन तुम्हें डरने की कोई बात नहीं। कोई तुम्हारा न्याय नहीं करेगा, कोई तुम्हें नरक की अनंत ज्वालाओं में नहीं झोंकेगा।"

जब मैंने यह अंश पहली बार पढ़ा, तो तत्काल स्पष्ट हो गया कि समाज का ऐसा परिवर्तन मेरे जीवन का अर्थ बनने योग्य है। मुझे साफ़ दिखाई दे रहा था कि इस विचार को कितने विरोध का सामना करना पड़ेगा। और यह भी स्पष्ट था कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण मेरे हाथ में वह कुंजी है जिससे इस परिवर्तन को साकार करना शुरू किया जा सकता है। Walsch की पुस्तकों को पढ़ने ने मेरा जीवन हमेशा के लिए बदल दिया। इसके कुछ ही समय बाद पहली ऐसी परियोजना सामने आई जिसका सार्वजनिक वित्त और उसके प्रबंधन से अत्यंत निकट संबंध था — Slovenská republika के राजकोष की परियोजना।

14 QBSW में काम — राजकोष की परियोजना

Amerika से लौटने के बाद भी कुछ समय तक मैंने USA में इंटर्नशिप पाने की कोशिश की। उसी वर्ष Tibor को Miami की एक आईटी कंपनी में इंटर्नशिप मिल गई थी। Katka और मैं सितंबर की शुरुआत में Slovensko लौट आए थे, और सितंबर के बीच में मैं Tibor के पास Miami गया, इस उद्देश्य से कि उसके जैसी कोई इंटर्नशिप मुझे भी मिल जाए। एक महीने बाद समाप्त होने वाले वीज़ा को लेकर आव्रजन अधिकारी से थोड़ी बहस के बाद आख़िरकार मुझे भीतर जाने दिया गया। इंटर्नशिप तो नहीं मिली, लेकिन मिल भी जाती तो व्यर्थ होती, क्योंकि बाद में पता चला कि Work And Travel कार्यक्रम के कार्य-वीज़ा को इंटर्नशिप के साथ लगातार जोड़ना संभव नहीं था। मुझे इसका बहुत अफ़सोस भी नहीं हुआ, क्योंकि Amerika में अपने प्रवास के दौरान ही समझ चुका था कि यह जगह मेरे लिए नहीं है।

Slovensko लौटकर मैं फिर Asset में काम करने लगा, लेकिन इस बार Dealing नाम की एक नई परियोजना पर। यह बैंक की सूचना प्रणाली का वह भाग था जिसकी सहायता से बैंक के डीलर शेयर बाज़ारों में व्यापार करते थे। इसका प्रतिभूतियों वाली परियोजना से निकट संबंध था, मगर इसका ध्यान बैंकों के डीलरों के बीच होने वाले अंतरबैंक सौदों पर अधिक था। इस परियोजना में मेरी मुलाक़ात अपने कई हमउम्र लोगों से हुई, जो FEI में पढ़ते थे। एक बार फिर मैंने अपनी आँखों से देखा कि अपेक्षाकृत कठिन पढ़ाई के साथ नौकरी करना कितना पेचीदा हो सकता है। उनमें से कुछ आख़िरकार FEI से बाहर हो गए और Ekonomická univerzita पहुँचे। अधिक समय नहीं बीता था कि इन्हीं नए सहकर्मियों से मुझे नौकरी का प्रस्ताव मिला। Asset का एक प्रबंधक वहाँ से उठकर वित्त मंत्रालय में काम करने चला गया था। वहाँ उसे राजकोष की उस निविदा के लिए दस्तावेज़ तैयार करने थे जिसे मंत्रालय निकट भविष्य में घोषित करने वाला था। वह कर्मचारी — मैं उसे Michal Suchota कहूँगा — बाद में Slovensko में काफ़ी जाना-पहचाना नाम बन गया; कई प्रसिद्ध भ्रष्टाचार मामलों में उसका नाम आया। Suchota कुछ असाधारण-सा व्यक्तित्व था। वह मुझसे शायद केवल 4 या 5 साल बड़ा था, लेकिन Asset में उसकी छवि ऐसे प्रबंधक की थी जो अपनी बात हर हाल में मनवा लेता है, चाहे उसे कठोरता की हद तक ही क्यों न जाना पड़े। उसके कमरे में प्रवेश करते ही उसके अधीन काम करने वाले लोग काँटों पर बैठे-से हो जाते थे। एक बार Julo ने उसके बारे में कुछ ऐसा कहा था कि कठिन समस्याओं के लिए उसे एक शक्तिशाली, असरदार हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

शुरू से ही यह साफ़ होने के बावजूद कि पूरी नई कंपनी से भ्रष्टाचार की बू आती है, 90 के दशक में Slovensko में जो कुछ हुआ था — कारोबारियों की कारें उड़ाई जाती थीं, राष्ट्रपति के बेटे का अपहरण हुआ था — उसकी तुलना में यह मुझे लोगों की हत्या के सामने एक मामूली, निर्दोष झड़प लगी। जहाँ बड़ी रकमें बाँटी जा रही हों, वहाँ ऐसी खींचतान शुरू होनी ही थी। आज के समय में, जब ऐसी बातों के प्रति संवेदनशीलता बहुत अधिक है और नैतिक मानदंड कहीं ऊँचे हैं, मैं अलग ढंग से व्यवहार करता। लेकिन चीज़ों को आज जिस तरह देखता हूँ, उस समझ तक पहुँचने के लिए मुझे भी एक यात्रा करनी पड़ी। आज मुझे स्पष्ट है कि नैतिक अखंडता का मूल्य नहीं आँका जा सकता। मगर मेरा मानना है कि बीस वर्ष के एक अपेक्षाकृत अनुभवहीन विद्यार्थी के निर्णयों की एकतरफ़ा निंदा नहीं की जा सकती, जब वह रोज़ सुनता हो कि पूरा समाज बेईमानी में डूबा है, निजीकरण की अंधी दौड़ चल रही है और इस चूहा-दौड़ में हर कोई सबसे पहले अपने बारे में सोच रहा है। आख़िरकार

पारदर्शी धन की परियोजना का विचार भी लगभग उसी दौर में जन्मा था। राजकोष पर काम करना किसी न किसी रूप में समाज-सुधार की मेरी योजनाओं के क़रीब था।

QBSW जिस तरह काम कर रहा था, उसमें सब कुछ नियम-क़ायदे के अनुरूप नहीं है, इसका पूरा एहसास मुझे 11.09.2001 को हुआ। उस दिन कुछ माध्यमों से QBSW में ख़बर पहुँची कि बहुत संभव है राजकोष का ठेका हमें ही मिलने वाला है। उसके कुछ मिनट बाद हम टेलीविज़न पर जुड़वाँ मीनारों को गिरते देख रहे थे। मैंने इसे ब्रह्मांड का संकेत माना कि यदि मैं इसी राह पर चलता रहा, तो अगला क़दम पूरे ब्रह्मांड का ढह जाना होगा। तभी मेरे भीतर यह निर्णय पक्का होने लगा कि मैं धीरे-धीरे QBSW से पीछे हट जाऊँगा।

QBSW में रहते हुए Suchota के अधीन मैंने एक और परियोजना पूरी की, जिस पर अपना अंतिम शोधप्रबंध भी लिखा। शोधप्रबंध एक ऐसी कंपनी की सूचना प्रणाली बनाने के बारे में था जो कारों की ऑपरेटिंग लीज़ की सेवाएँ देती थी। परियोजना Suchota लाया था, लेकिन काम QBSW ने किया, और मैं QBSW के डेवलपरों तथा ग्राहक के बीच संपर्क व्यक्ति था। ग्राहक को शायद कभी पता ही नहीं चला कि परियोजना वास्तव में QBSW नाम की कोई कंपनी विकसित कर रही है। वे केवल मुझे जानते थे, और उसके बाद हमारे डेटाबेस प्रशासक को, जिसने उनके यहाँ प्रणाली स्थापित की। ठेका हासिल करने में सीधे मेरी भी बड़ी भूमिका रही। एक दोपहर मैंने लीज़ कंपनी के निदेशक को अपना सुंदर आरेख दिखाया था, जिसमें यह दर्शाया गया था कि हमारी प्रणाली कंपनी के बाहरी परिवेश से किस तरह संवाद करेगी। वह मेरे काम का एक उत्कृष्ट नमूना था, और मुझे लगता था कि आख़िरकार हमें यह काम मिलने में उसका बड़ा योगदान रहा। QBSW में पूरी प्रणाली बनाने में शायद छह महीने से कुछ अधिक समय लगा। जो क़ीमत तय हुई थी, उससे डेवलपरों का ख़र्च बस किसी तरह निकलता था। फिर भी यह ठेका QBSW के लिए निर्णायक था, क्योंकि राजकोष परियोजना से पहले इसी वास्तविक काम पर विकास दल बने और जिस आंतरिक फ़्रेमवर्क में काम हो रहा था, उसे सँवारा गया। शोधप्रबंध मैंने कुछ ही दिनों में निपटा दिया। कुछ विकास-आरेख और स्क्रीनशॉट लिए, उनका वर्णन किया और काम ख़त्म।

15 Hilda से बातचीत

यह बातचीत मेरे और Med-art की सह-मालकिन के बीच सूअर काटने के उस आयोजन में हुई थी जिसे मेरे पिता ने रखा था। मुझे यह केवल मोटे तौर पर याद है। संभव है कि कुछ वाक्य अलग ढंग से कहे गए हों या कहे ही न गए हों। फिर भी मैं इसे यहाँ इसी रूप में दे रहा हूँ, क्योंकि इससे किसी को कुछ सीख मिल सकती है।

“और आपने किस विषय में पढ़ाई की है?” आँतें धोते हुए मैंने पूछा। मनोविज्ञान, उन्होंने उत्तर दिया। “मुझे मनोविज्ञान बहुत दिलचस्प लगता है,” मैंने आगे कहा। इसका संबंध अस्तित्व के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों तक जाता है। क्योंकि मानव मन अपने आप में अनुभूति से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसी सत्ता से, जो अस्तित्व में मौजूद सब कुछ है, किस प्रक्रिया के द्वारा ऐसी चीज़ उत्पन्न हो सकती है जो उस संपूर्णता से कम हो? और किसी रूप में बाक़ी से अलग हो? Hilda ने अविश्वास से भौंहें उठाईं। शायद उन्हें उम्मीद नहीं थी कि सूअर काटने की तैयारी करते हुए ऐसी बातों पर बहस करनी पड़ेगी। मगर इससे तो मेरा उत्साह और बढ़ गया। कल्पना कीजिए कि जो कुछ है, वह सब आप ही हैं। आपके अतिरिक्त कुछ नहीं। आपके बाहर कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसके संदर्भ में आप स्वयं को देख सकें। ऐसी सत्ता अपना मन कैसे

बहला सकती है? मैं उस सत्ता में मन बहलाने की इच्छा यूँ ही नहीं मान रहा, जैसी ज़रूरत मनुष्य को भी होती है। बाइबिल में कई जगह लिखा है कि मनुष्य को ईश्वर के स्वरूप में बनाया गया। इसलिए अधिक सही यह कहना होगा कि मनुष्य की ज़रूरतें भी समग्र सत्ता की ज़रूरतों जैसी हैं। तो फिर जो सब कुछ है, वह अपना मन कैसे बहला सकता है? तर्क की दृष्टि से उसे छोटे-छोटे हिस्सों में बँटना होगा और जैसे कुछ देर के लिए भूल जाना होगा कि वास्तव में वह क्या है। फिर इस लुका-छिपी में धीरे-धीरे उन चीज़ों से पार पाना होगा जो अनजानी और पराई दिखाई देती हैं। लेकिन वे ऐसी केवल इसलिए लगती हैं कि सत्ता का एक अंश भूल गया है कि पहले वह किस संपूर्णता का हिस्सा था। और इस पुनः खोज के साथ जो राहत आती है, उसी की अनुभूति हर चीज़ को अर्थ देती है।

मुझे लगता है कि मनोविज्ञान जैसे विज्ञान की पढ़ाई का, सही अर्थ में, अस्तित्व के विज्ञान अर्थात् अस्तित्वमीमांसा जैसे विषयों से कहीं अधिक गहरा संबंध होना चाहिए। इनका अध्ययन साथ होना चाहिए, ठीक इसलिए कि चेतना रखने वाली अस्तित्व की इकाइयों के गुण और आवश्यकताएँ सभी स्तरों पर मिलते-जुलते हैं। मानव मनोविज्ञान के अध्ययन से अस्तित्व के बारे में बहुत कुछ निकाला जा सकता है। मेरी दृष्टि में बाहरी दुनिया का अध्ययन करके वहाँ मिलने वाले नियमों से अपने भीतर की दुनिया को समझाने की कोशिश एक भूल है। यह कभी काम नहीं करेगा। आधार मानव चेतना को मानना चाहिए। हमारे बाहर प्रकृति समान परिस्थितियों में प्रत्यक्षतः हर बार एक जैसा व्यवहार करती है, यह कमोबेश एक संयोग है; कोई अटल सिद्धांत नहीं, जिसके आधार पर तय किया जाए कि हर परिस्थिति में क्या घटेगा।

ज़रा उस घटना को लीजिए जो अपेक्षाकृत कुछ ही समय पहले हुई — New York में जुड़वाँ मीनारें कैसे गिरीं। दुनिया भर के षड्यंत्र-सिद्धांतकार एकदम भड़क उठे: साफ़ षड्यंत्र है, इमारत में पहले से विस्फोटक लगाए गए थे, किसी ने उसे उड़ा दिया। ऐसा षड्यंत्र सफल बनाने के लिए जिस जटिलता को सँभालना पड़ता, उसका आकार विराट होता। पूरी इमारत में बिना किसी की नज़र में आए विस्फोटक कैसे लगाए जा सकते हैं? यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि इसमें शामिल होने वाले दर्जनों लोगों में से कोई कहीं ज़रा-सा भी कुछ न उगल दे? सांख्यिकीय दृष्टि से यह बस असंभव है। मैं बताता हूँ कि उन मीनारों में एक सामान्य इमारत की तुलना में क्या अलग था। उस क्षण अरबों लोग उन्हें टेलीविज़न के माध्यम से देख रहे थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि कहीं ऐसा कुछ हो न जाए। मेरी राय में यह विशाल अपेक्षा, संभवतः मानव इतिहास की सबसे बड़ी सामूहिक अपेक्षा, सहज ही उसका कारण बन सकती थी जो घटा। अपनी इस धारणा के समर्थन में मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है, फिर भी ऐसी अनोखी व्याख्या मुझे जानबूझकर इमारत उड़ाने के सिद्धांत से अधिक संभावित लगती है।

16 Med-art — वैकल्पिक असैनिक सेवा और लेख का प्रकाशन

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी होने के बाद अनिवार्य सैन्य सेवा करनी होती थी, या उसके विकल्प के रूप में तथाकथित असैनिक सेवा। पिता ने Med-art में मेरी असैनिक सेवा की व्यवस्था करवा दी। शुरुआत में यह सेवा केवल दिखावे की होनी थी। काग़ज़ों पर मैं Med-art में रहता, जबकि साथ-साथ अपने काम करता रहता। लेकिन Med-art के मालिक Ján Holec के साथ एक बातचीत ने सब बदल दिया। जब मैं उनसे QBSW की मौजूदा उलझनों की शिकायत कर रहा था, तो बातचीत के बीच उन्होंने तय कर लिया कि मुझे असैनिक सेवा में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहना होगा। मैं इससे काफ़ी चौंक गया, लेकिन आख़िरकार यह QBSW और वहाँ की परियोजनाओं की भागदौड़ तथा तनाव से निकलने का मेरे लिए स्वागतयोग्य रास्ता बन गया। अवचेतन में तो मैं वैसे भी QBSW से पीछे हटना चाहता था। Med-art में मुझे कंपनी की नई वेबसाइट बनाने का काम दिया गया। पुरानी वेबसाइट बहुत उपेक्षित पड़ी थी। दो सप्ताह में मैंने कुछ तैयार कर दिया। देखने में वह काफ़ी ठीक थी, हालाँकि पहले जो हालत थी, उसे देखते हुए यह कोई कठिन काम नहीं था। उसमें उन दवाओं की सूची थी जिन्हें Med-art फ़ार्मेसियों को बेचता था, साथ ही उनकी ताज़ा क़ीमतें भी। क़ीमतें आंतरिक सूचना प्रणाली से अर्धस्वचालित ढंग से MySQL की उन तालिकाओं में पहुँचती थीं जिन पर वेबसाइट चलती थी, इसलिए वे हमेशा काफ़ी हद तक अद्यतन रहती थीं। नई वेबसाइट को प्रबंधन में अच्छी सफलता मिली। उसके ज़रिए मैं मालिक का काफ़ी भरोसा जीत सका। Med-art में मेरी तरक़्क़ी जिस व्यक्ति को पसंद नहीं थी, वह आईटी विभाग का प्रमुख था। उसे मुझमें अपना प्रतिद्वंद्वी दिखाई देता था और वह स्पष्ट रूप से डरता था कि कहीं मैं उसकी जगह न ले लूँ।

हर तीन महीने में Med-art अपनी आंतरिक पत्रिका Medium निकालता था। मैंने उसके लिए कुछ लेख लिखे — आभासी वास्तविकता पर, इंटरनेट बैंकिंग का सुरक्षित उपयोग कैसे करें, और इसी तरह के जानकारी देने वाले विषयों पर। लेकिन उसी समय मैं एक ऐसा लेख भी तैयार कर रहा था जिसके प्रकाशन ने मेरी ज़िंदगी को इतनी बुरी तरह झकझोरा कि लंबे वर्षों तक उसकी दिशा मेरी कल्पना से बिल्कुल अलग हो गई।

उससे कुछ समय पहले बुद्धिजीवियों के लिए होने का दावा करने वाले साप्ताहिक “Domino fórum” में मेरा एक लेख छपा था। शीर्षक था — “सूचना प्रौद्योगिकी — क्या आख़िरकार नए समाज की राह मिल गई?” उसमें मूलतः मैंने समाज की उस कल्पना की रूपरेखा दी थी जिसे Walsch की रचना में पढ़ा था। साथ ही अपने कुछ विचार और राजकोष तथा अन्य समकालीन विषयों के बारे में अपनी जानकारी भी जोड़ी थी। उसी अंक में मेरे लेख पर एक प्रतिक्रिया भी छपी। उसके लेखक का नाम शायद Matej Šuster था, और उसने, जैसा अपेक्षित था, पूरे विचार को बहुत सतही ढंग से ख़ारिज कर दिया। उसकी कुछ आपत्तियों का थोड़ा गहराई से सोचने पर बड़ी आसानी से उत्तर दिया जा सकता था। इसलिए मैंने उसकी प्रतिक्रिया का अपना उत्तर लिखकर दैनिक sme.sk के पोर्टल पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

लेख छपने के अगले दिन मैं Med-art में कंप्यूटर पर बैठा उन टिप्पणियों का उत्तर दे रहा था जो लोगों ने मेरे लेख पर लिखी थीं। लेकिन अपने जवाबों में मैं काफ़ी बहक गया। बहस में शामिल कुछ लोगों का मैंने अनावश्यक अपमान किया, क्योंकि उन्होंने दुनिया को बचाने की मेरी “प्रतिभाशाली” योजना पर संदेह करने की जुर्रत की थी। कुछ दिनों बाद जब मैंने दूसरों की टिप्पणियों पर अपने वे जवाब पढ़े, तो शर्म से वहीं गड़ गया। उन टिप्पणियों से 24 साल के एक कच्चे लौंडे का अहंकार साफ़ झलकता था, जिसने जीवन में अब तक जिस चीज़ को हाथ लगाया था, उसमें कामयाबी पाई थी, और जो

अपनी योजनाओं को लेकर अस्वस्थ हद तक आत्मविश्वासी हो चुका था। मुझे लगा कि दुनिया बदलने की मेरी योजनाएँ मेरी उन्हीं टिप्पणियों ने हमेशा के लिए चौपट कर दी हैं। मेरी नज़र में किसी को भी वे जवाब दिखा देना काफ़ी था। हर कोई समझ जाता कि मैं एक बेवक़ूफ़ हूँ, दुनिया का कोई प्रतिभाशाली सुधारक नहीं, जो आख़िरकार ऐसा परिवर्तन ला रहा है जो सचमुच काम करेगा और हमेशा के लिए बदल देगा कि लोग एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। बरसों बाद भी अपनी वे टिप्पणियाँ पढ़ना मेरे लिए कठिन है, हालाँकि वास्तव में वह एक अपेक्षाकृत छोटी-सी चूक थी। आज कुछ लोग टिप्पणियों में जो कुछ लिख देते हैं, उससे उसकी तुलना भी नहीं हो सकती। मगर तब मैं ऐसा नहीं सोचता था। मैंने अपने ही हाथों ख़ुद को खेल से बाहर कर दिया। इस पर एक और बात जुड़ गई। Med-art के आईटी प्रमुख के सामने मैंने अपने लेख का ज़िक्र गर्व से कर दिया था। उसने मौक़े का फ़ायदा उठाया और संभवतः मालिक Holec के सामने मेरी सामाजिक क्रांति का काफ़ी रंगीन चित्र खींच दिया। मेरे कुछ उत्तर पूँजीवाद पर ही प्रश्न उठाते थे, और उनमें इस तरह की बातें थीं: “अपनी डॉक्टर के पास जाओ और कोई दवा लिखवाओ, तब देखोगे कि पूँजीवाद कितना आदर्श है।” दवाओं की वितरण कंपनी के मालिक को यह बात पसंद आ ही नहीं सकती थी।

इसलिए रातोंरात मुझे आईटी विभाग से गोदाम में भेज दिया गया, जहाँ वेबसाइट बनाने के बजाय मैं ऑर्डरों के लिए दवाएँ चुन-चुनकर इकट्ठी करता था।

ख़ुद को निराश करने की मेरी अपार कुंठा — मूलतः यह भावना कि एक लेख और कुछ टिप्पणियों से मैंने अपने भविष्य की सारी योजनाओं का विनाश कर दिया है — और साथ में निचले दर्जे के काम पर भेज दिए जाने जैसी बातें, जिनसे मन और बुझता था, इन सबने मिलकर ऐसा किया कि एक दिन से अगले दिन तक मुझे सब कुछ घोर काले रंग में दिखाई देने लगा। इतना कि आगे जीने का कोई कारण नहीं दिखता था, और बहुत कम अंतर से बुरा अंत टला। सच तो यह है कि मैं उसी क्षण मर जाना चाहता था, बहुत तीव्रता से। मेरी दृष्टि में पूरी तरह बिगड़ चुकी वास्तविकता को मैं इतनी शक्ति से अस्वीकार कर रहा था कि सचेत होकर बेहोश हो गया। मैंने अपना पूरा सचेत ध्यान अपने प्राथमिक संकेत-तंत्र पर केंद्रित किया, यहाँ तक कि सचमुच अपनी इच्छा से स्वयं को बंद कर दिया। मुझे लगता है कि मल्टिपल स्क्लेरोसिस की मेरी बाद की समस्याओं की शुरुआत कहीं यहीं तक जाती है। शायद मैं अपने शरीर के भीतर कोई ऐसा स्विच पलटने में सफल हो गया था जिससे शरीर ने स्वयं पर हमला करना शुरू कर दिया। मल्टिपल स्क्लेरोसिस एक स्वप्रतिरक्षी बीमारी है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा कोशिकाएँ दूसरी शारीरिक कोशिकाओं पर यह समझकर हमला करती हैं कि वे किसी संक्रमण से लड़ रही हैं। मैं Tesco के सामने की पार्किंग में बेहोश होकर गिरा था। मुझे लेने एम्बुलेंस आई, और उसमें कुछ क्षणों के लिए होश लौटा। पूरी तरह चेतना अस्पताल के मनोरोग विभाग के बिस्तर पर आई। भर्ती करने वाले डॉक्टर ने मुझे देखकर कहा कि मैंने ज़रूर कोई नशीला पदार्थ लिया होगा। माँ ने इसका विरोध करते हुए कहा कि ऐसा होना असंभव है। अंतिम निदान था: स्किज़ोफ़्रेनिया। मैंने अपनी सेहत को इस तरह डगमगा दिया था कि अगले 9 वर्षों में किसी भी बड़े मानसिक दबाव के बाद स्किज़ोफ़्रेनिया के दौरों के साथ मैं Nitra के अस्पताल पहुँच जाता था।

मेरे दौरों का रूप यह था कि किसी भी मानसिक उत्तेजना के प्रति मेरी संवेदनशीलता बहुत बढ़ जाती थी। ऐसी अवस्था में, उदाहरण के लिए, फ़िल्म का कोई दुखद दृश्य देखकर मैं रो पड़ता था, जबकि सामान्य स्थिति में मेरे साथ पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। एक बार तो ऐसा भी हुआ कि पिता को मेरे बारे में ज़रा-सा संदेह होने से मुझे इतना कष्ट हुआ कि मनोविकृति की अवस्था में मैंने अपने भीतर स्वयं सूली पर चढ़ाए जाने का अनुभव किया।

17 सूली पर चढ़ाया जाना

पिता रसोई की मेज़ पर मेरे सामने बैठे हैं। चाय के गिलास की किनारी पर रोशनी टूट रही है। कमरे में दोपहर के विश्राम का ऐसा सन्नाटा है जिसमें अपनी साँस भी सुनाई देती है। वे मेरा बटुआ धीरे-धीरे, लगभग किसी अनुष्ठान की तरह ख़ाली करते हैं — एक-एक काग़ज़, एक-एक कार्ड। उन्हें करीने से छोटी-छोटी ढेरियों में रखते जाते हैं, मानो पकाने से पहले चावल के दाने बीन रहे हों।

“यह किस काम का है?” वे पूछते हैं, और उनके माथे पर एक छाया-सी गुज़रती है। उनके शब्द मेरे भीतर तूफ़ान उठा देते हैं। बाईं कलाई में एक भारी, भीषण दर्द उठता है। मोटी रोमन कील से आरपार हुई कलाई। इतनी मामूली बात पर भी उनका भरोसा न करना कि उस कार्ड को रखने का ज़रूर कोई कारण होगा, मेरी मनोविकृति में इतना बढ़ जाता है कि मैं स्वयं सूली पर चढ़ाए जाने का अनुभव करने लगता हूँ।

यह जिम का कार्ड है, इसके बिना वे मुझे भीतर नहीं जाने देंगे। पिता समझने के भाव से सिर हिलाते हैं। मेरे भीतर अपार राहत उतरती है कि वे समझ गए — मैं कोई अजीब आदमी नहीं हूँ जो बेवजह अपने बटुए में कूड़ा रखता फिरता है। बाईं कलाई का दर्द मिट जाता है। दर्द की अनुभूति जितनी तीव्र हुई थी, राहत भी उतनी ही प्रबल है।

तुरंत अगला सवाल आता है: “और यह तुम्हारे किस काम का है?” बाईं कलाई में वही भारी, भीषण दर्द लौट आता है, साथ में पहले से धँसी कील पर दूसरी बार पड़ते हथौड़े की साफ़ आवाज़।

हे पिता परमेश्वर, वे मुझसे इतनी स्पष्ट बात क्यों पूछते हैं? बस मुझ पर विश्वास क्यों नहीं कर लेते? समझा देने के बाद पहले उत्तर जैसी ही राहत फिर आती है। और मैं जान जाता हूँ कि अभी-अभी मैंने अस्तित्व के चक्र को उसकी संपूर्णता में अनुभव किया है — पहले अस्पष्टता के रूप में पीड़ा, अपनी ही गहराइयों तक उतरता आत्म-संदेह। उसके बाद स्पष्टता और अपार राहत। ऐसी राहत जो सूली पर चढ़ाए जाने से होने वाली विशाल शारीरिक पीड़ा को भी सार्थक कर दे, उसे भर दे। हे पिता परमेश्वर, तुम्हारा धन्यवाद कि इसका अंत ऐसा हुआ! मेरी आँखें छलकने को हैं।

हे पिता परमेश्वर, पुत्र तुम्हें पुकारता है — पर्वत भी जीवित हो उठे! पत्थर भी तो इसे महसूस कर सकता है, बल्कि करना ही होगा, अपने अस्तित्व से अस्तित्व को तृप्त करना होगा!

मैंने कभी नहीं सोचा था कि लोगों को वास्तव में सूली पर कैसे चढ़ाया जाता था। मुझे हैरानी हुई कि कीलें कलाई में महसूस हुईं, हथेलियों में नहीं, जैसा आम तौर पर दिखाया जाता है। बाद में मैंने नानी और एक पादरी से पूछा कि Ježiš को वास्तव में कहाँ कीलें ठोककर सूली पर चढ़ाया गया था। दोनों ने कहा कि कलाई में, हथेली में नहीं, क्योंकि हथेलियाँ पूरे शरीर का भार नहीं सँभाल सकतीं।

18 Praha

अपने लेख पर की गई दुर्भाग्यपूर्ण टिप्पणियों के आघात से किसी तरह उबरने के बाद मैं Med-art वापस नहीं गया। एक अप्रिय दौर शुरू हुआ जिसमें मैं ऐसी नौकरी तलाश रहा था जहाँ मेरा मन लगे। पहले मैंने Nitra में एक ऐसी कंपनी में कोशिश की जो बैंकिंग प्रणाली बना रही थी। लेकिन सारा काम C में हुआ था, और कई वर्षों तक उच्चस्तरीय प्रोग्रामिंग भाषाओं में काम करने के बाद यह मुझे बहुत असहज लगा। उन भाषाओं में प्रोग्रामर को मेमोरी आवंटित करने और मुक्त करने जैसी बातों की चिंता नहीं करनी पड़ती थी। अगली कोशिश एक ऐसी कंपनी में थी जो विभिन्न बैंकों को Treasury प्रणालियाँ देती थी। वह भी मुझे नहीं जँची, क्योंकि वह प्रोग्रामिंग से बहुत दूर थी। काम कमोबेश परामर्श का था, जिसमें कंपनी की दी हुई प्रणाली की बहुत अच्छी समझ होना ज़रूरी था। मगर तीसरी बार नौकरी की तलाश सफल हुई। इस बीच Tibor को Praha में स्वतंत्र ठेकेदार के रूप में बहुत अच्छे वेतन वाला काम मिल गया था। उस समय तक अपने कई पुराने सहपाठियों के बारे में भी सुन चुका था जिन्होंने इसी तरह Praha में जगह बना ली थी। इसलिए मैंने चेक नौकरी-पोर्टलों पर आने वाले प्रस्ताव देखने शुरू किए। आख़िरकार वह अवसर आ गया। Accenture के लोग Česká sporiteľňa के लिए इंटरनेट बैंकिंग की एक परियोजना पर Oracle विशेषज्ञ ढूँढ़ रहे थे। इंटरव्यू बिल्कुल सहजता से हो गया, हालाँकि मैं देख रहा था कि मुझे चुनने वाला स्लोवाक प्रबंधक मेरी क्षमताओं को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। दरअसल कौशल की कोई परीक्षा हुई ही नहीं थी। उसने केवल इस आधार पर मुझे ले लिया कि उस पर मेरा अच्छा प्रभाव पड़ा था।

लेकिन काम के पहले दिन के बाद ही समझ गया कि आख़िरकार यह वह नौकरी है जिसमें मैं पानी में मछली की तरह सहज रहूँगा। इंटरनेट बैंकिंग की परियोजना के लिए बैंक के डेटाबेस पर विशुद्ध रूप से PL/SQL डेटाबेस विकास का काम था। इंटरनेट बैंकिंग को आधुनिक बनाया जा रहा था, GSM बैंकिंग और ढेर सारी नई कार्यक्षमताएँ जोड़ी जा रही थीं। मेरे प्रमुख एक बहुत कुशल सहकर्मी थे, मुझसे एक या दो वर्ष बड़े — Jirko Dvořák। Jirko का दिमाग़ इतनी तेज़ी से चलता था कि कभी-कभी मुझे लगता, वह मुझसे इतनी दूर आगे है कि वहाँ तक पहुँचना असंभव है। उसकी वजह से बौद्धिक रूप से मुझे काफ़ी ओट मिली हुई थी। कुछ भी अस्पष्ट हो तो उससे पूछ लेना काफ़ी था, समस्या समाप्त। Praha में मैं बहुत अच्छा महसूस करता था। काम की जगह से थोड़ी दूर एक छोटा-सा फ़्लैट ले लिया, जहाँ कुछ समय बाद Katka भी मेरे साथ रहने आ गई। हम बहुत सुखी थे। पैसा पर्याप्त था, खाना अधिकतर रेस्तराँ में खाते थे, कोई चिंता नहीं। बस सप्ताह में एक बार ख़रीदारी और सफ़ाई करनी होती थी ताकि फ़्लैट में अच्छा लगे। Katka को एक भाषा विद्यालय में कभी-कभार का काम मिल गया, जहाँ वह जर्मन पढ़ाती थी। कमाई बहुत नहीं थी, लेकिन उसकी ज़रूरत भी नहीं थी। इतने अच्छे हालात के बावजूद हमारे बीच कुछ खटपट होने लगी। कुछ बातों को वह जिस नज़र से देखती थी, उससे मैं मेल नहीं बैठा पा रहा था। शायद लगातार साथ रहने से पैदा होने वाली घुटन भी शुरू हो गई थी, और उसके स्वभाव की कुछ बातें मुझे बहुत खटकने लगी थीं। आख़िरकार हम अलग हो गए और वह Londýn में औ पेयर का काम करने चली गई। कुछ समय की शांति के बाद मेरा स्किज़ोफ़्रेनिया फिर उभर आया। एक अजीब समय था। शायद नवंबर 2004 की बात है। ठीक-ठीक याद नहीं कि तब हुआ क्या था। फिर से सभी मानसिक अनुभूतियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो गया था। शायद शुक्रवार था, और सप्ताह का अंत इस तरह किया कि Praha के एक टैक्सी चालक को कई हज़ार चेक क्राउन देकर कहा कि मुझे घर Nitra पहुँचा दे — लगभग 420 किलोमीटर। बस में धक्के खाते जाने की ताक़त नहीं थी। फिर अस्पताल पहुँचा। मुझे लगता है,

उसी दिन Vysoké Tatry में भीषण आँधी आई थी। हवा में कुछ बुरा मँडरा रहा था और उसने मुझे पूरी तरह हिला दिया। वह सही अर्थ में वैसा तूफ़ान तो नहीं था जिसका ज़िक्र स्लोवाक राष्ट्रगान में है, लेकिन आँधी की छोड़ी हुई तबाही देखकर सबसे पहले यही ख़याल आया कि ऐसी विपदा के बाद शायद स्लोवाक लोग आख़िरकार सचमुच जाग उठें, जैसा राष्ट्रगान में गाया जाता है।

कुछ सप्ताह बाद जब मैं शांत होकर Praha लौटा, तो Accenture के प्रबंधक ने अगले छह महीनों के लिए ऐसी शर्तों का अनुबंध दिया कि मैं देखता रह गया। छह महीने के अनुबंध की पेशकश मिली, जिसकी दर मुद्रा-परिवर्तन के बाद 60 EUR प्रति घंटा थी। अगले छह महीनों में उस अनुबंध की बदौलत मेरी संपत्ति लगभग दोगुनी हो गई। जीवन में सबसे अच्छी कमाई का समय वही था। दुर्भाग्य से वह बहुत कम चला। प्रबंधक ने Slovensko में अपना परिवार बसा लिया, और अनुबंध समाप्त होने पर Česká sporiteľňa ने मुझे नियमित पूर्णकालिक TPP नौकरी के अनुबंध की पेशकश की। काम के लिहाज़ से चीज़ें बिगड़ गई थीं। परियोजना में मैं काफ़ी ऊब रहा था, और अनुबंध के अंत तक उसी ऊब से कुछ हद तक थककर चुक गया था। समय किसी तरह काटने के उपाय तलाशते-तलाशते दिमाग़ भी थोड़ा बहकने लगा था। जब बैंक ने चाहा कि मैं पिछले अनुबंध की तुलना में लगभग हास्यास्पद रकम पर नियमित नौकरी करूँ, तो मैंने सोचा कि कहीं और क़िस्मत आज़माऊँ।

19 India में छुट्टियाँ

सितंबर 2006 में मैंने India में दो सप्ताह की छुट्टियाँ बिताईं। देश की ग़रीबी ने मुझे झकझोर दिया। जब देखा कि इतनी बड़ी संख्या में लोग कैसी ग़रीबी में जी रहे हैं, तब समझ आया कि India में अपार संभावनाएँ हैं। भीख के लिए बढ़ा हर हाथ यदि कोई सार्थक काम करने लगे, तो चमत्कार हो जाएँ। वे क्या कर सकते हैं, यह हर उपेक्षित, आधी ढही सड़क, इमारत और मंदिर पुकार-पुकारकर कह रहा था। India की हालत ने मुझे दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के Nemecko की याद दिलाई, जिसे मैंने विभिन्न ऐतिहासिक वृत्तचित्रों में देखा था। यदि कोई आगे आकर India में Marshall योजना जैसी कोई चीज़ लागू कर दे, तो उसका प्रभाव युद्ध के बाद Európa में हुए प्रभाव से भी बड़ा होगा।



Taj Mahal के पास

छुट्टियों से लौटने पर अपनी सेहत को लेकर बुरा महसूस हुआ। चलना संदिग्ध रूप से कठिन हो रहा था, इसलिए मैं न्यूरोलॉजी विभाग गया। अस्पताल में भर्ती हो गया, जहाँ मल्टिपल स्क्लेरोसिस के संदेह में मेरी रीढ़ से मस्तिष्क-मेरु द्रव का नमूना लिया गया। लेकिन जब मैंने न्यूरोलॉजिस्ट को बताया कि कुछ ही समय पहले India में छुट्टियाँ बिताकर आया हूँ, तो उसने तुरंत निष्कर्ष निकाल लिया कि शायद वहाँ से कोई विदेशी बीमारी लगी है, और मुझे संक्रामक रोग विभाग में भेज दिया। जब द्रव की जाँच के परिणाम Bratislava से Nitra के अस्पताल लौटे, तो चूँकि मैं अब संक्रामक रोग विभाग में था, किसी न्यूरोलॉजिस्ट ने उन्हें देखा ही नहीं। पाँच वर्ष बाद मेरे क्षेत्र की न्यूरोलॉजिस्ट ने उन्हें देखा, और पहली नज़र में ही कहा,

“लेकिन आपको तो मल्टिपल स्क्लेरोसिस है।” अस्पताल के न्यूरोलॉजी और संक्रामक रोग विभागों की बदइंतज़ामी की वजह से मेरे इलाज के पाँच साल खो गए। बहुत संभव है कि यदि इलाज उसी समय शुरू हो जाता जब होना चाहिए था, तो मैं व्हीलचेयर पर न पहुँचता। हालाँकि अपनी हालत के लिए कुछ हद तक मैं ख़ुद भी ज़िम्मेदार हूँ। कई बार साफ़ महसूस हुआ था कि मैं ठीक नहीं हूँ, लेकिन पिछली जाँचों से मिली तसल्ली के कारण उसे यूँ ही रहने दिया।

20 Írsko

छुट्टियों से लौटने के बाद मेरा इंटरव्यू एक चेक व्यक्ति से हुआ, जो ऐसी कंपनी में परियोजना प्रबंधक था जो Írsko के विश्वविद्यालयों के लिए सूचना प्रणाली बनाती थी। उसका नाम Jan Navrátil था। देश बदलकर परिवेश बदलना मुझे एक स्वागतयोग्य बदलाव लगा। मगर Írsko में मैं पूरे छह महीने भी नहीं टिक पाया। वहाँ मेरा कोई परिचित नहीं था, हर चीज़ इतनी महँगी थी कि रेस्तराँ में खाना भी मेरे बस में नहीं था। तीन कमरों के फ़्लैट में केवल एक कमरा किराए पर लेने के लिए मैं 700 EUR देता था, जो मेरे वेतन का लगभग एक-तिहाई था। परियोजना में भी मैं उस तरह जगह नहीं बना पाया जैसी मुझसे अपेक्षा थी। Jan Navrátil ने अपने नाम को सार्थक कर दिया और बहुत जल्दी मुझे Slovensko वापस लौटा दिया।

21 Sony और कार दुर्घटना

Írsko में काम करते समय ही मैंने Slovensko में Sony Slovakia की एक संभावित नौकरी के लिए इंटरव्यू तय कर लिया था। मई 2007 के दौरान किसी समय मैंने वहाँ काम शुरू किया। Sony का कारख़ाना Trnava में था। मैं रोज़ अपनी कार से वहाँ जाता और साथ में Nitra के कुछ अन्य लोगों को भी ले जाता, जो पेट्रोल का हिस्सा देते थे। कार्यस्थल पर आईटी विभाग का प्रमुख एक हंगेरियाई व्यक्ति था, जिसके बारे में मैं रोज़ सुबह रास्ते में सुनता था। वह स्पष्ट रूप से काफ़ी अयोग्य था और अपनी कमी की भरपाई अधीनस्थों को परेशान करके करता था। मुझ पर उसका सीधा नियंत्रण नहीं था। मैं उसके नीचे के स्तरों में स्थित एक विभाग में था, और मेरे तथा उसके बीच कई समझदार लोग थे जो ठीक तरह से व्यवहार करते थे। लेकिन हर सुबह मैं एक ऐसे सहकर्मी को ले जाता था जो सीधे उसका अधीनस्थ था, और वह वहाँ होने वाली हर बात का सजीव वर्णन करता था। अगस्त 2007 के एक शुक्रवार कई नकारात्मक बातें एक साथ इकट्ठी हो गईं और नतीजा यह हुआ कि मेरे भीतर अचानक जैसे शॉर्ट सर्किट हो गया। सुबह काम पर जाते हुए फिर उसी बेहद तनावग्रस्त सहकर्मी की अपने प्रमुख के बारे में शिकायतें सुनीं। काम पर मुझे ऐसे काम दिए गए जिनमें मैं पूरी तरह सहज नहीं था। Írsko में असफल रहे प्रयास से उपजी नाकामी की भावना भी मुझ पर हावी हो गई। सब मिलाकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अब आगे इसका कोई अर्थ नहीं। दफ़्तर में कंप्यूटर से अधिक समय शौचालय में बिता रहा था और ख़ुद को नकारात्मक ढंग से उकसा रहा था कि मुझे कोई बुनियादी बदलाव करना ही होगा। Nitra पहुँचने के बाद मैं कार में बैठा और उस रास्ते की ओर चल पड़ा जिसे जीवन में सबसे अच्छी तरह जानता था — नानी के घर का रास्ता। रास्ते में सीटबेल्ट लगा ली, क्योंकि पिता याद आ गए, जो हर बार कार से निकलते समय इसकी ताकीद करते थे। अगर कहीं पुलिस रोक ले और बेल्ट न बँधी हो, तो जुर्माने को लेकर किसी पुलिसवाले से बात करने का मेरा मन नहीं था। पिता की लगातार नसीहतों ने शायद मेरी जान बचा ली। Cabaj से कुछ आगे एक जगह सड़क बाईं ओर मुड़ती थी और ठीक सामने एक पेड़ था। उसे देखकर एक क्षण के लिए मुझे ख़ुशी हुई कि जिसकी तलाश थी, वह मिल गया। बस मोड़ पर न मुड़ना था और काम ख़त्म। दुर्घटना के बाद मेरे पीछे आ रही कार का चालक तुरंत रुका और मदद के लिए दौड़ा। उसने मेरे मुँह से सबसे पहले कुछ ऐसा सुना कि क्या अब आदमी अपनी मर्ज़ी से ख़ुद को मार भी नहीं सकता? सौभाग्य से मेरी बड़बड़ाहट उसे ठीक से समझ नहीं आई। उसकी नज़र में बस मुझे क्षण भर की झपकी आ गई थी और मैं मोड़ पर मुड़ नहीं पाया था। माँ और चाचा के पहुँचने के बाद मैंने उन्हें बता दिया कि यह आत्महत्या का प्रयास था। माँ ने इसे स्किज़ोफ़्रेनिया का एक और लक्षण माना, और मैं फिर Nitra के अस्पताल के मनोरोग विभाग में पहुँच गया।

22 Praha की ओर वापसी

अस्पताल से लौटने के बाद मैं Sony वापस नहीं गया। लगभग उसी समय एक लड़के से परिचय हुआ — Martin। Slovensko में उसकी एक कंपनी थी जो वेबसाइटों से जुड़ी सेवाएँ बेचती थी। वह मुझे काफ़ी जँचा; समझदार था और उसके साथ मज़ा आता था। जब सुना कि वह क्या करता है, तो ख़याल आया कि यही काम Praha में चेक बाज़ार के लिए भी दोहराया जा सकता है। इसलिए हमने मिलकर एक सीमित देयता कंपनी बनाई। मैं Praha चला गया, कंपनी के नाम पर एक फ़्लैट किराए पर लिया और मुख्यतः चेक बाज़ार में ग्राहकों की ज़रूरत के अनुसार वेबसाइटें बनाने की सेवा बेचने की कोशिश करने लगा। जल्दी समझ आ गया कि उस समय तक सामान्य हो चुकी सेवाएँ बेचना कोई आसान काम नहीं। वह दौर तब भी आ चुका था जब ऐसी सेवा बनाना अधिक सार्थक था जिससे लगभग कोई भी चंद क्राउन में अपनी वेबसाइट बना सके। लेकिन हम हर कंपनी के लिए अलग वेबसाइट बना रहे थे, और उस समय यह अच्छा कारोबारी विचार नहीं रह गया था। कंपनी को आर्थिक रूप से किसी तरह तैरता रखने में शायद सफल रहे, मगर कोई बड़ी कामयाबी नहीं मिली। वास्तव में हमें घाटे से केवल इस बात ने बचाया कि मैंने Praha के अपने पुराने संपर्कों को एक पूर्व सहपाठी से मिलवाया, जो Česká pojišťovna की किसी परियोजना के लिए प्रतिभाशाली डेटाबेस डेवलपर के रूप में काम कर सकता था। बाद में Čechy में ऐसे साझेदार भी मिल गए जो Martin का उत्पाद, dot Net पर बना CMS सिस्टम, इस्तेमाल करते थे। हम उस चेक कंपनी के विभिन्न ग्राहकों के लिए उसमें उनकी ज़रूरत के अनुसार बदलाव करते थे। मगर Praha में मेरा काम बीमारी ने फिर रोक दिया। मुझे दोबारा Nitra के अस्पताल जाना पड़ा, जहाँ वे मुझे सँभालने में जुट गए। असफलताओं की यह कतार मेरे लिए बहुत भारी हो गई थी। जीवन का कोई अर्थ नहीं दिखता था, कोई ऐसा सार्थक प्रेम-संबंध नहीं था जिसमें वास्तविक भविष्य दिखाई दे। इसका असर मेरी बेहद ख़राब मानसिक हालत पर पड़ रहा था। इस बार अस्पताल में रहने से भी मदद नहीं मिली। Nitra के पास Zálužie में भी तीन महीने रहना पड़ा। जब वहाँ वे मुझे किसी तरह सँभाल पाए, तो मैंने फिर काम तलाशना शुरू किया। कारोबार धीरे-धीरे Martin के हवाले छोड़ दिया।

23 Infostat और Eurostat की परियोजना

2009 की गर्मियों की शुरुआत में जीवन में पहली बार Slovensko में एक स्थायी नौकरी करने लगा — Infostat में डेटाबेस प्रोग्रामर के रूप में। Infostat, Slovenská republika के सांख्यिकी कार्यालय से जुड़ी एक अर्धसरकारी संस्था थी। शुरू में मैंने समेकित सांख्यिकीय संकेतकों से संबंधित परियोजना पर काम किया। फिर धीरे-धीरे मुझे उस परियोजना में भेज दिया गया जिसे Eurostat ने, या शायद सीधे यूरोपीय आयोग ने, किसी अनुदान के रूप में अपनी साझेदार संस्थाओं को सौंपा था। पूरी बात यह थी कि Eurostat अलग-अलग देशों के सांख्यिकी कार्यालयों के कामकाज को अधिक प्रभावी बनाना चाहता था। उन्होंने सांख्यिकीय डेटा का एक प्रारूप बनाया था — SDMX — और पूरे यूरोपीय संघ की विभिन्न कंपनियों से ऐसे उपकरण विकसित करवाए थे जो उसी प्रारूप में संवाद करते।

हमारी परियोजना का काम यह पता लगाना था कि क्या मौजूदा SDMX साधनों को इस तरह ढाला जा सकता है कि उनकी सहायता से सूक्ष्म स्तर का डेटा भी एकत्र किया जा सके, जैसे किसी सांख्यिकीय फ़ॉर्म को भरते समय दी जाने वाली जानकारी। Infostat को परियोजना का अनुदान इसलिए मिला था कि उसने पहले सांख्यिकीय सूक्ष्म-फ़ॉर्मों के लिए एक

प्रश्नावली प्रणाली बनाई थी, जो सीधे उत्तरदाताओं — व्यवसायियों या व्यक्तियों — से डेटा एकत्र करती थी। जब मुझे इस परियोजना में भेजा गया, तो इसे चला रहे लोग कुछ निराश थे। अभी तक किसी को समझ नहीं आया था कि SDMX मानक और फ़ॉर्मों को आपस में कैसे जोड़ा जाए। उसके कुछ समय बाद Luxemburg की पहली कार्य-यात्रा हुई। उसमें वह पूरी टीम गई जो किसी न किसी रूप में परियोजना से जुड़ी थी। यात्रा का उद्देश्य था कि आख़िरकार समस्या कुछ आगे बढ़े और उसका हल निकले। Eurostat में चर्चा के बाद साफ़ हो गया कि समस्या सुलझाने में वे हमारी बहुत मदद नहीं करेंगे। लौटने के बाद उस सहकर्मी महिला ने, जो यात्रा में भी साथ थी, एक सरल काम किया। SDMX की एक xsd संरचना के आधार पर उसने एक ऐसी फ़ाइल बनाई जो बहुत प्रारंभिक ढंग से फ़ॉर्म का वर्णन करती थी। उसने पूरे फ़ॉर्म को एक तालिका में बाँट दिया, जिसकी कोशिकाओं में अलग-अलग फ़ील्ड थे। इसे देखकर मेरे मन में आया कि इस पर एक सरल प्रणाली बनाई जा सकती है, जो ऐसे विवरण से इलेक्ट्रॉनिक फ़ॉर्म बनाए और डेटा एकत्र करने दे। मूलतः यह बहुत शुरुआती स्तर पर SDMX के माध्यम से सूक्ष्म डेटा जुटाने का समाधान था। यह SDMX का एक अव्यावहारिक उपयोग था, जिसके लिए वह बना ही नहीं था। व्यवस्था दोनों पैरों से लँगड़ा रही थी, लेकिन यदि वे चाहते थे कि कील ठोकने के लिए हम पेचकस इस्तेमाल करें, तो हमने उनकी माँग पूरी कर दी। ऐसी प्रणाली मैंने काफ़ी जल्दी तैयार कर दी और कोई यह नहीं कह सकता था कि हमने काम पूरा नहीं किया। बाद में जब मैंने इसे SDMX के किसी सम्मेलन में, शायद Göteborg में, दूसरे लोगों को दिखाया, तो वे बस हँस पड़े। बोले, हाँ, हमें उत्सुकता थी कि आपने समस्या कैसे सुलझाई, लेकिन इसके लिए आपको शायद Nobel पुरस्कार नहीं मिलेगा। आख़िरकार Eurostat में परियोजना प्रमुख के मज़बूत “राजनीतिक” संपर्कों की वजह से परियोजना को आगे जारी रखने का अवसर भी मिला। उसके अगले चरण में प्रमुख मैं था। उसमें मैंने अपनी फ़ॉर्म प्रणाली को उन सॉफ़्टवेयर पैकेजों के माध्यम से SDMX अवसंरचना से ऑनलाइन जोड़ दिया जो SDMX के लिए विकसित किए गए थे। मैं यह भी करवा सका कि Martin और मेरे कुछ अन्य क़रीबी लोग आधिकारिक रूप से कुछ पारिश्रमिक लेकर परियोजना में मेरी मदद करें। परियोजना जारी रहने के दौरान Martin की सहायता से फ़ॉर्म प्रणाली को अधिक आधुनिक संरचना पर फिर से बनाया और उसे SDMX अवसंरचना से जोड़ा। परिणाम था SDMX से जुड़ी एक सार्वभौमिक फ़ॉर्म प्रणाली। Infostat का वेतन बहुत ख़राब था, मगर अपने क़रीबी बाहरी लोगों को इस तरह काम में शामिल कर पाने से उस कम वेतन की कुछ भरपाई हो जाती थी। बाद में Martin ने मुझे नौकरी देकर इस मदद का बदला चुकाया। जब मेरे पास यह तय करने का अवसर था कि परियोजना का पैसा कहाँ जाएगा, तब ऐसी स्थिति से पैदा होने वाले प्रलोभनों का स्वाद भी चखा। उस परीक्षा में मेरा प्रदर्शन बस औसत रहा। मगर आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो यह अनुभव एक अत्यंत मूल्यवान सीख दे गया कि ऐसी परिस्थितियों में अपने ऊपर निगरानी रखने में बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि फिसल जाना अपेक्षाकृत आसान होता है। कुछ बातें मुझे अब, 13 से अधिक वर्षों बाद, समझ आई हैं। सबसे मूल्यवान सीख यह थी कि सामाजिक सुधार किसी एक व्यक्ति की नैतिकता या अनैतिकता पर नहीं टिक सकता। उसे इस तरह बनाया जाना चाहिए कि उसे लागू करने वाले लोगों का नैतिक स्तर अपेक्षाकृत कमज़ोर होने पर भी वह पर्याप्त अच्छी तरह काम करे। मान लें कि सामाजिक परिवर्तन का केंद्रीय व्यक्ति नैतिकता और न्याय का आदर्श ही हो, तब भी ऐसा आसानी से हो सकता है कि एक दिन वह रहे ही नहीं। उसके बावजूद परिवर्तन उसी गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ना चाहिए, उन लोगों के साथ भी जो दुनिया के तरह-तरह के प्रलोभनों के आगे कहीं अधिक झुक सकते हैं।

24 Luxemburg से घर लौटने की लंबी यात्रा

Luxemburg में परियोजना की अंतिम समापन बैठक एक असाधारण रोमांच बन गई। उड़ान से पहले अतिरिक्त समय की ज़रूरत को मैंने कम आँका था, और ऊपर से हवाई अड्डे पहुँचते समय Infostat के चालक ने ग़लत मोड़ ले लिया। मेरी उड़ान छूट गई। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। दूसरी उड़ान का टिकट ख़रीदना अधिक व्यावहारिक लगा, जिसके लिए अपने पैसे से 500 EUR देने पड़े। तनाव इतना था कि शायद मैं हल्की मनोविकृति में पहुँच गया, क्योंकि फिर कुछ बातों को ज़रूरत से ज़्यादा तीव्रता से अनुभव कर रहा था। प्रस्थान कक्ष में कुछ लोग Amsterdam की उड़ान की प्रतीक्षा कर रहे थे, जहाँ मुझे विमान बदलना था। वहाँ अश्वेत लोगों का एक समूह भी था। साथ ही एक श्वेत लड़का था जिसका सिर पूरी तरह मुँड़ा हुआ था। नहीं जानता कि मैं स्थिति को कितनी वस्तुनिष्ठता से देख रहा था, लेकिन उसके हावभाव से मुझे नस्लवाद धाराओं में बहता दिखाई दे रहा था। स्पष्ट था कि अश्वेत लोगों की उपस्थिति उसे परेशान कर रही थी। मैं सोच रहा था कि वह इसे कैसे देखता होगा और उसकी मनःस्थिति में उतरने की कोशिश कर रहा था। मेरा मानना है कि अपनी संस्कृति में ऐसी विविधता से बहुत कम परिचित रहे श्वेत लोगों में अलग रंग के लोगों से संपर्क को लेकर एक तरह का भीतरी प्रतिरोध प्रकृति ने ही बिठाया है। तीव्र भिन्नता, ख़ासकर जब जन्म से उसका सामना न हुआ हो, नकारात्मक भावनाएँ जगाती है। मगर मनुष्य के पास अपना दिमाग़ इसीलिए है कि वह अपने भीतर ऐसे आदिम पूर्वाग्रहों को जगह न दे। ताकि वह अपने प्राथमिक संकेत-तंत्र के कहे पर न चले, अपने ऊपर नियंत्रण रखे। मानव जीवन शुरू से अंत तक अपनी भावनाओं को आवश्यक और सकारात्मक ढंग से नियंत्रित करने से बुना हुआ है। यदि हम सब पहली प्रतिक्रिया में अपनी सारी भावनाएँ बाहर निकाल दें, तो सभ्यता एक सप्ताह में बिखर जाएगी।

उस मुँड़े सिर वाले लड़के को बेचैन होते देखकर मैंने कुछ ऐसा किया जिससे उसकी असहजता नाटकीय ढंग से और बढ़ गई। मैंने आइस टी की बोतल खोली और सीधे मुँह लगाकर उसमें से पीया। फिर उसी बोतल से अपने पास बैठे अश्वेत व्यक्ति को पीने का प्रस्ताव दिया। उसने पेय लेने से इनकार किया, लेकिन मुझे संदेह था कि वह समझ गया है कि मैंने ऐसा क्यों किया। उसने शिष्टता से धन्यवाद दिया और मुझे देखकर मुस्कराया। जब मुँड़े सिर वाले ने देखा कि मैं अपनी ही बोतल से एक अश्वेत व्यक्ति को पीने के लिए दे रहा हूँ, तो वह जैसे वहीं फट पड़ने वाला था। कुछ देर तक अपने इस क़दम से उसकी हुई उलझन पर मुझे मज़ा आया, फिर मैं विमान में चढ़ गया। Amsterdam में उतरा, जहाँ Luxemburg की उड़ान का इंतज़ार करना था।

Amsterdam के Schiphol हवाई अड्डे पर मैंने लगभग दो घंटे एक पिज़्ज़ेरिया में बैठे-बैठे बिताए। एयरहोस्टेस जैसी दिखने वाली एक रोमांचप्रिय महिला मेरे आसपास मँडरा रही थी। शायद वह स्थानीय थी, या शायद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे रोमांच ढूँढ़ती थी। साफ़ था कि मैं उसे पसंद आया था, और कुछ देर तक उसने मेरी ओर रिझाने के हर तरह के संकेत भेजे, जब तक उसे समझ नहीं आ गया कि इस बादल से बारिश नहीं होने वाली। उसकी मनःस्थिति समझने की कोशिश की तो मुझे लगा कि वह अक्सर हवाई अड्डे पर पुरुषों को एक बार के संबंधों के लिए रिझाती है और उसे इसमें काफ़ी मज़ा आता है।

Luxemburg पहुँचने पर अपने पुराने परिचित होटल में ठहरा और सोमवार की तैयारी की। पूरा सोमवार मैं फिर हर चीज़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहा। अंतिम प्रस्तुति में मैंने दिखाया कि क्या विकसित किया है — एक संपूर्ण प्रश्नावली

प्रणाली, जिसमें उपयोग की संभावना के उदाहरण के रूप में एक विशेष प्रश्नावली भी थी। साथ ही यह मौजूदा SDMX उपकरणों से जुड़ी थी, इसलिए डेटा एकत्र होते ही उसे SDMX में उपलब्ध कराया जा सकता था। उस दिन जिससे भी बात की, हर एक की मनःस्थिति में उतरने की कोशिश करता रहा। मुझे संदेह है कि यह किसी न किसी तरह दिखता भी होगा, क्योंकि ऐसा व्यवहार शायद सामान्य नहीं था।

वापसी की यात्रा वहाँ जाने से भी बड़ा रोमांच बनी। उड़ानों में फिर समस्या हुई। Amsterdam में Viedeň की उड़ान छूट गई। Luxemburg से Amsterdam की उड़ान में मैं एक आयरिश व्यक्ति के पास बैठा था। उसके भीतर भी गहराई से उतरने की कोशिश की। विमान में दिख जाने वाले उस बिलकुल अनजान व्यक्ति की कहानी जानने में मेरी दिलचस्पी थी। स्पष्ट था कि उसे मेरी ओर से कुछ होता हुआ महसूस हो रहा था, क्योंकि थोड़ी देर बाद उसने मुझसे बात शुरू कर दी। वह UBS में कोई बैंकर था। सबसे अधिक समय अपनी बेटियों के बारे में बात करता रहा। कह रहा था कि उनके लिए उसके पास अधिक समय नहीं है। मानो मेरे सामने उसे किसी बात की सफ़ाई देनी हो। Amsterdam पहुँचने के बाद Viedeň की अगली उड़ान छूट जाने के कारण मुझे Amsterdam में ही रात बितानी पड़ी। हवाई अड्डे के पास एक होटल में शायद केवल तीन घंटे सोया। सुबह पाँच बजे फिर हवाई अड्डे पर था, Viedeň की उड़ान की प्रतीक्षा में। Schwechat पहुँचकर महसूस हुआ कि मैं फिर उत्तेजना से भरा हुआ हूँ। नज़र एक ऐसे बोर्ड पर पड़ी जिसमें Viedeň जाने वाली ट्रेनों के समय थे। Bratislava जाने के बजाय मैं Viedeň की ओर चल पड़ा, क्योंकि बस यह मुझे अच्छा विचार लगा। Viedeň में किसी अच्छे रेस्तराँ में दोपहर का भोजन किया। Bratislava कैसे पहुँचना है, यह तय करने का मन नहीं था। इसलिए टैक्सी बुलवा ली, जिसने मुझे Bratislava में Infostat के पास पहुँचा दिया। वहाँ पिता मुझे लेने आए। Nitra पहुँचते ही मेरे माता-पिता ने जल्दी समझ लिया कि फिर क्या हो रहा है और मुझे अस्पताल ले गए। यह स्किज़ोफ़्रेनिया का मेरा आख़िरी दौरा था। सितंबर 2012 से आज तक ऐसी समस्या दोबारा नहीं हुई।

परियोजना का दूसरा विस्तार समाप्त होने के बाद Infostat को अगला अनुदान नहीं मिला। शायद इसलिए कि वे सही राजनीतिक संपर्क नहीं थे जो Infostat के पिछले परियोजना प्रमुख के पास थे। क्योंकि परिणाम की बात करें तो वह पहली परियोजना से एक स्तर ऊपर था। बस Eurostat के लोगों के सामने मैं उसका महत्व पर्याप्त अच्छी तरह नहीं दिखा पाया। परियोजना समाप्त होने पर Infostat के पास मेरे लिए दूसरा काम नहीं था, इसलिए उन्होंने जल्दी ही मुझे बाहर कर दिया। सौभाग्य से नौकरी समाप्त होने का मुआवज़ा मिला।

25 फ़ॉरेक्स रोबोट बेचने वाली कंपनी में काम

Infostat में काम समाप्त होने के बाद Martin ने अपने एक ग्राहक की सूचना प्रणाली पर काम में मदद करने का प्रस्ताव दिया। यह ऐसी परियोजना थी जिसके माध्यम से तथाकथित फ़ॉरेक्स रोबोट बेचे जाते थे। दावा था कि ये रोबोट फ़ॉरेक्स बाज़ारों में पैदा होने वाले अल्पकालिक आर्बिट्राज के अंतर पर सौदे करते हैं।

फ़ॉरेक्स वह बाज़ार है जहाँ मुद्रा-जोड़ों का व्यापार होता है। दूसरे शब्दों में, Martin का वह ग्राहक दावा करता था कि उसने ऐसे एल्गोरिद्म विकसित किए हैं जो फ़ॉरेक्स बाज़ारों में मुद्रा-जोड़ों के सौदे करके पैसा कमा सकते हैं।

क़रीब से देखने पर कंपनी का मॉडल कुछ पहलुओं में किसी पिरामिड योजना जैसा लगता था। ख़ासकर जब मैंने देखा कि वहाँ बहुस्तरीय विपणन को कितने विस्तार से विकसित किया गया है। जब मैंने Tibor को बताया कि यह कैसे काम करता है, तो उसने उसी क्षण परियोजना को ख़ारिज कर दिया। कारोबार अपेक्षाकृत कम समय चला। कुछ चेक सरकारी प्राधिकरणों ने उसे बंद करवा दिया। मेरे लिए यह सुविधाजनक था कि मेरे पास ऐसा काम है जिसे घर से कर सकता हूँ। उस समय तक मेरा मल्टिपल स्क्लेरोसिस काफ़ी बढ़ चुका था। कहीं भी पहुँचकर काम माँगना मेरे लिए संभव नहीं था, क्योंकि मैं पूरी तरह घर से ही काम कर सकता था। उस समय यह उतना सामान्य नहीं था जितना COVID के बाद हो गया।

इसलिए जो था, उसी में संतोष करके अपने को सीमित रखा और आशा करता रहा कि बात किसी उचित अंजाम तक पहुँचेगी। 2016 के दौरान किसी समय कुछ बातों को लेकर Martin और मेरे बीच झगड़ा हो गया, और मैं बिना काम के रह गया।

26 कार ख़रीदने के लिए अनुदान

यह वह समय था जब साफ़ होने लगा था कि शायद अंततः मुझे व्हीलचेयर पर आना पड़ेगा। गंभीर दिव्यांगता का ZŤP कार्ड बनवाते समय पता चला कि यदि ऐसे व्यक्ति के पास नौकरी हो, तो काम पर आने-जाने के लिए कार ख़रीदने हेतु काफ़ी बड़ा अनुदान माँगा जा सकता है। लेकिन एक शर्त थी: जिस संपत्ति में व्यक्ति रहता है, उसे छोड़कर उसकी अन्य संपत्ति 30 000 EUR से अधिक नहीं होनी चाहिए। मैं इस शर्त पर खरा नहीं उतरता था। हालाँकि कोई इसकी किसी तरह जाँच नहीं करता था। जब सोच रहा था कि अनुदान माँगूँ या नहीं, तब मेरे पास कोई स्थिर नौकरी नहीं थी। लग रहा था कि यदि ऐसा ही चलता रहा, तो मेरी संपत्ति घटते-घटते उस सीमा से नीचे पहुँच जाएगी। यह भी ध्यान में था कि दिव्यांगता पेंशन निश्चित रूप से मुझे ऐसे किसी केंद्र में रखने का ख़र्च नहीं उठा सकेगी जहाँ चौबीसों घंटे देखभाल मिलती है। भविष्य में, जब माता-पिता मेरी देखभाल नहीं कर पाएँगे, शायद मुझे उसकी ज़रूरत पड़ेगी। सब कुछ तौलने पर मुझे यही लगा कि अनुदान के लिए आवेदन करना अधिक समझदारी होगी।

मैं अपने एक सहपाठी की कंपनी में नौकरी करने लगा और अनुदान मिल गया। आख़िरकार मेरी हालत इतनी तेज़ी से बिगड़ी कि हाथ से नियंत्रित की जाने वाली कार मेरे लगभग किसी काम की नहीं रही। मैं अपने आप उसमें बैठ ही नहीं पाता था। बल्कि यह क़दम पूरी तरह नकारात्मक साबित हुआ। इसकी क़ीमत लगभग मेरे पिता को अपनी सेहत से चुकानी पड़ गई। उन्हें ऑटोमैटिक गियरबॉक्स की आदत नहीं थी। एक बार उन्होंने कार ग़लत ढंग से खड़ी की, वह चल पड़ी और उन्हें टक्कर मार दी। सौभाग्य से कोई नुकसान नहीं हुआ। यह देखकर मैंने अनुदान के रूप में मिली रकम सितंबर 2023 में सामाजिक एवं पारिवारिक मामलों के कार्यालय को वापस भेज दी।

2016 से 2019 का दौर ऐसा था जब मुझमें कहीं काम करने की ऊर्जा नहीं थी। मुझे अपनी बहुत बड़ी शारीरिक अक्षमता के साथ जीना सीखना था। जहाँ तक पैसे का प्रश्न था, जीवनयापन के लिए मुझे बहुत कम की आवश्यकता थी। हम माता-पिता के साथ Cabaj के उस घर में रहने लगे थे जिसे हमने मिलकर ख़रीदा था। मूलतः ख़र्च चलाने के लिए दिव्यांगता पेंशन और फ़्लैट के किराए से आने वाली आय पर्याप्त थी।

27 बड़ी कंपनियों के लिए काम

2019 के दौरान अपनी नई स्वास्थ्य-स्थिति से मैं किसी तरह उबरकर सँभलने लगा। मल्टिपल स्क्लेरोसिस ने मेरे पैरों को पूरी तरह बेकार कर दिया था और 2017 से मैं व्हीलचेयर पर था। हम गाँव में, शांत वातावरण के एक सुंदर एकमंज़िला घर में रहने लगे थे। घर के साथ 9 आर का बगीचा भी है, जिसकी देखभाल माता-पिता ने आदर्श ढंग से करनी शुरू कर दी। 2019 में किसी समय मैंने दृश्यमान धन पर व्यवस्थित रूप से काम शुरू किया। Tibor की बातों से जानता था कि वह अपनी कंपनी में किन तकनीकों का इस्तेमाल करता है। मैंने भी उसी तकनीकी स्टैक को अपनाने का निर्णय लिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर आगे चलकर हम एक-दूसरे के काम के पूरक बन सकें। केवल डेटाबेस अलग था। वहाँ मैंने, स्वाभाविक रूप से, Oracle चुना, जिसमें मेरा 20 वर्षों का अनुभव था। बैकएंड के लिए Python का FastAPI फ़्रेमवर्क इस्तेमाल किया। वह उस समय नया था, लेकिन आशाजनक लग रहा था। फ़्रंटएंड के लिए VUE.js चुना। पहले संस्करण में केवल उपयोगकर्ताओं का पंजीकरण था।

2020 के दौरान मैंने किसी नौकरी की तलाश शुरू की। मार्च 2021 में एक इतालवी कंपनी के लिए इंटरव्यू हुआ, जो दुनिया भर के कई देशों को ऋण रजिस्टर की प्रणालियाँ उपलब्ध कराती थी। Slovensko में उनकी एक विकास शाखा थी। इंटरव्यू अच्छा हुआ और अप्रैल 2021 से आख़िरकार मेरे पास फिर काम था। और कोई मामूली काम नहीं। स्वतंत्र ठेके पर काम करने वाले वरिष्ठ प्रोग्रामर की बाज़ार दर। मेरे जीवनयापन के ख़र्च मूलतः दिव्यांगता पेंशन से पूरे हो जाते थे, इसलिए इसका अर्थ था हर महीने अपेक्षाकृत बड़ी बचत।

पैसे का उपयोग करना मेरे लिए आसान था — कोई दृश्यमान धन में मेरी मदद कर सकता था। VUE डेवलपरों के एक फ़ोरम पर मुझे कई ऐसे उम्मीदवार मिल गए जो मदद करने में सक्षम और इच्छुक थे। उनमें एक भारतीय भी था जिसने मुझे चौंका दिया। मैंने उसे जो काम दिया था, वह उसने वैसा नहीं किया, बल्कि कुछ अलग किया और दावा किया कि यह मेरी माँग से बेहतर है। सोचने पर मुझे मानना पड़ा कि वह सही है। इसलिए चयन स्पष्ट था।

Abhishek — उसका यही नाम था — का योगदान शुरू से ही स्पष्ट महसूस होने लगा। परियोजना में आ रही कुछ तकनीकी समस्याओं को समझने और हल करने में उसने मेरी मदद की। परियोजना का विकास इस तरह व्यवस्थित है कि वह एक Linux वर्चुअल मशीन में होता है, जिसमें ज़रूरत की हर चीज़ पहले से स्थापित है। वर्चुअल मशीन कंप्यूटर के भीतर एक स्वतंत्र कंप्यूटर जैसी होती है, जिसमें कंप्यूटर और उसका व्यवहार वास्तव में अनुकरण के माध्यम से चलाया जाता है। कोई भी ऐसी वर्चुअल मशीन की आसानी से प्रतिलिपि बना सकता है और बिना कुछ और स्थापित किए तुरंत काम शुरू कर सकता है। मेरी ओर से अपेक्षाकृत अच्छी आर्थिक सहायता देखते हुए Abhishek दो और भारतीयों को साथ ले आया। इस तरह कुल तीन लोग उस पर काम कर रहे थे।

एक पूर्णकालिक काम करता था और दो के पास साथ में दूसरी नौकरियाँ भी थीं। इससे फ़्रंटएंड का विकास अपेक्षाकृत तेज़ी से आगे बढ़ा। मैं अपनी नौकरी के साथ-साथ डेटाबेस और बैकएंड पर काम कर पाता था। नौकरी में भी बहुत-सी बातें सीखीं। इतालवी लोगों ने कुछ चीज़ों को ऐसे विकसित किया था जैसा अपनी पहले की किसी नौकरी में नहीं देखा था। उदाहरण के लिए, कोड की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने Test Tool नाम की एक चीज़ बनाई थी।

यह दिए जा रहे सॉफ़्टवेयर की स्वचालित जाँच करने वाला अनुप्रयोग था। जाँच शुरू होने से पहले यह उन फ़ाइलों से आवश्यक डेटा डेटाबेस में डाल सकता था जिन्हें कुछ निर्धारित नियमों के आधार पर स्वयं बना सकता था। इस तरह स्वचालित जाँच का पहला चरण यह डेटा लोड करना होता। अगला चरण जाँची जाने वाली कार्यक्षमता को चलाना हो सकता था, और अंत में जाँच का मुख्य भाग पूरा होने के बाद अनुप्रयोग डेटाबेस को देखता। उसके पास एक SELECT क्वेरी होती, जिसे वह डेटाबेस पर चलाता और परिणाम की तुलना अपेक्षित स्थिति से करता। यदि सब ठीक हो, तो जाँच सफल घोषित की जाती। यदि नहीं, तो यह पड़ताल करनी होती कि समस्या कहाँ है। चूँकि यह अनुप्रयोग जाँचों के पूरे समूह को स्वचालित ढंग से चला सकता था, इसलिए कंपनी के लिए कोड की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में बड़ा सहायक था। किसी ग्राहक के यहाँ अनुप्रयोग का नवीनतम संस्करण लागू करने से पहले वाले सप्ताहांत में इस तरह हज़ारों जाँचें अपने आप चलती थीं। शुक्रवार शाम स्वचालित प्रक्रिया शुरू की जाती और सोमवार सुबह देखा जाता कि क्या-क्या सही नहीं हुआ। यदि सभी जाँचें सफल हो जातीं, तो लगभग यह सुनिश्चित हो जाता कि सब कुछ जैसा चाहिए वैसा ही काम कर रहा है।

28 दृश्यमान धन परियोजना का वर्तमान स्वरूप

इस परियोजना का उद्देश्य समाज में संपत्ति और वित्तीय प्रवाहों की पारदर्शिता बढ़ाना है। अपने वर्तमान स्वरूप में यह संपत्ति की घोषणा तैयार करने की सुविधा देती है—मसलन, किसी निश्चित समय की घोषणा, जिसमें उस समय व्यक्ति के पास मौजूद संपत्ति की सूची भर होती है। यह ऐप https://viditelnepeniaze.sk पर जाकर एक क्लिक करने से, या सीधे https://app.visiblemoney.org/?lang=sk पर उपलब्ध है।

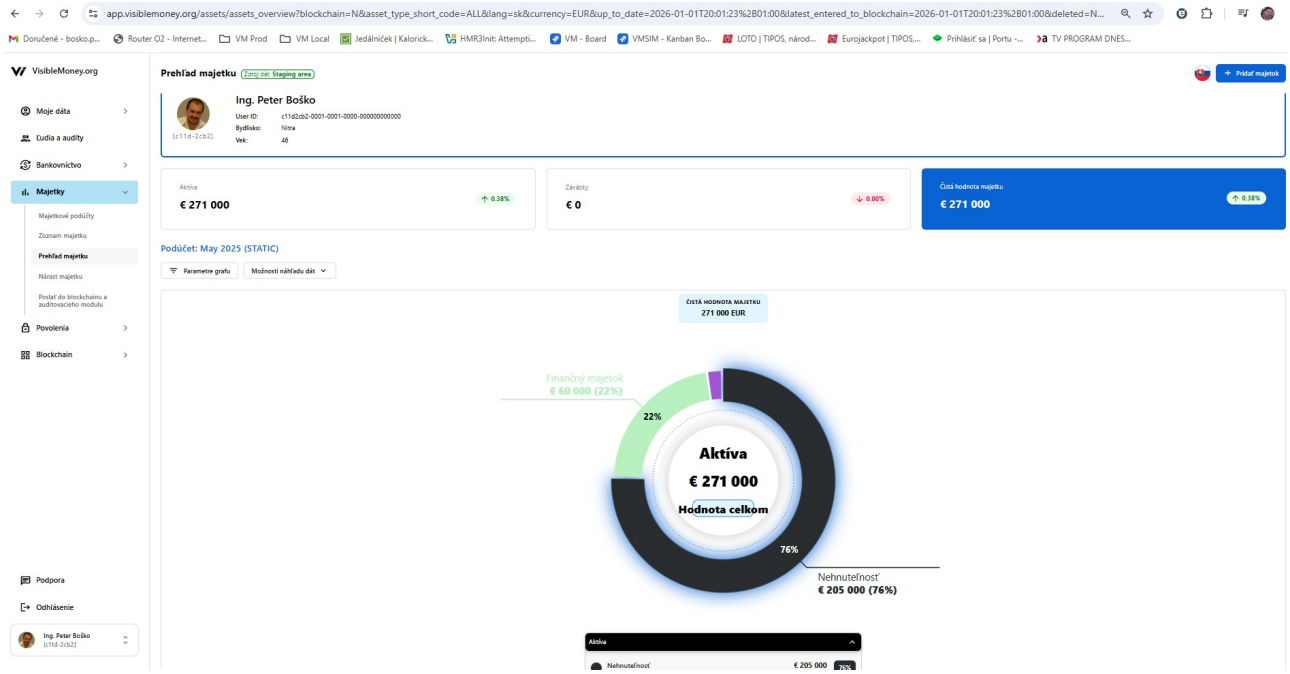

परियोजना में मई 2025 की स्थिति के अनुसार मेरी संपत्ति की घोषणा

परियोजना में विस्तृत संपत्ति घोषणा भी तैयार की जा सकती है। वह समय के अलग-अलग पड़ावों को समेटती है और उससे यह भी समझ में आता है कि किसी व्यक्ति ने, उदाहरण के लिए, अचल संपत्ति या किसी अन्य प्रकार की संपत्ति के सौदों से कितना कमाया। इस तरह विस्तार से दिखाई देता है कि उसकी संपत्ति अपने वर्तमान स्तर तक कैसे पहुँची।

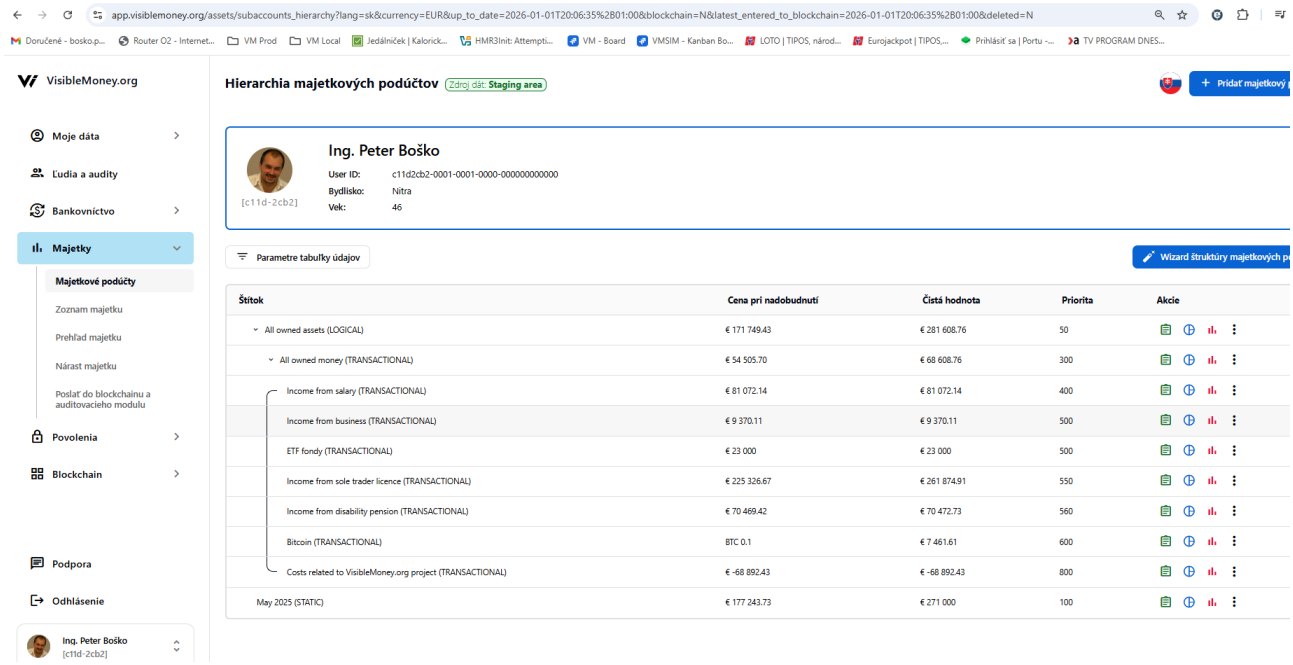

ऐप में मेरी विस्तृत संपत्ति घोषणा के अंतर्गत संपत्ति उपखातों की संरचना

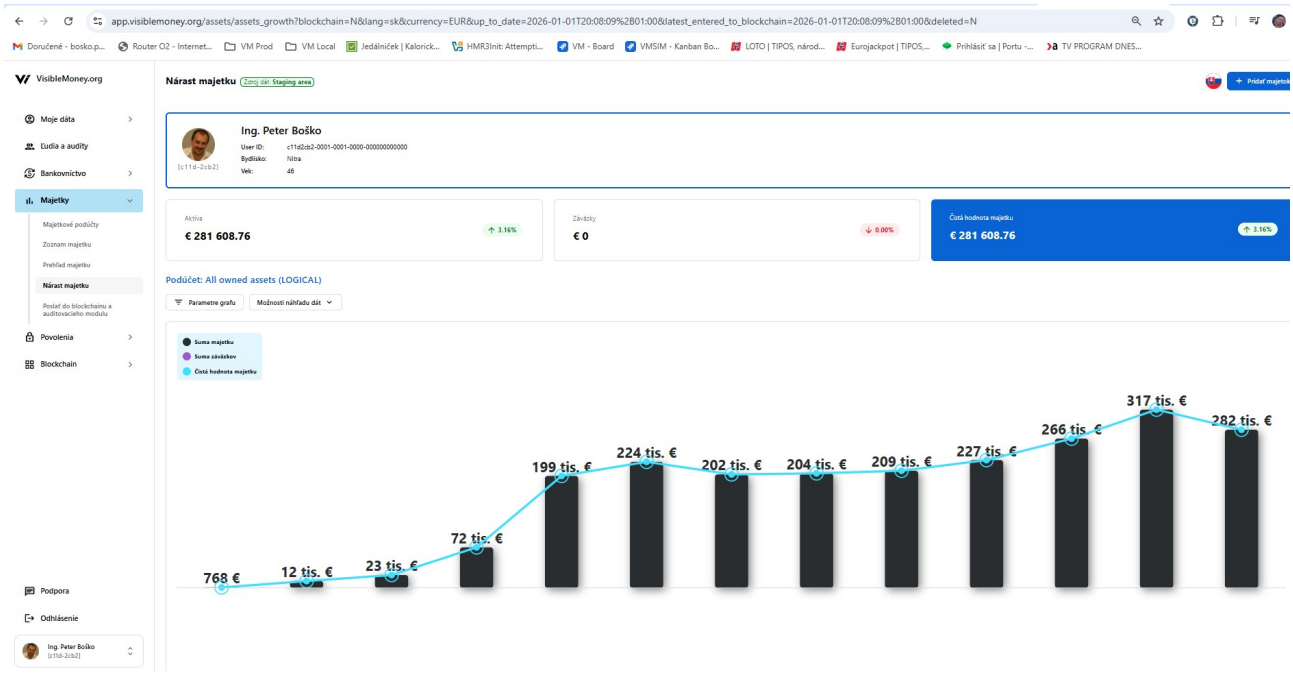

ऐप में समय के साथ मेरी संपत्ति की वृद्धि—1998 से 2025 तक

परियोजना की कार्यक्षमता का एक उतना ही महत्त्वपूर्ण हिस्सा तथाकथित लेखापरीक्षा है। लेखापरीक्षा परियोजना के दूसरे सदस्यों को किसी उपयोगकर्ता की संपत्ति संबंधी डेटा देखने देती है। किसे यह डेटा देखने का अधिकार होगा, इसे व्यक्ति द्वारा परियोजना में चुने गए पारदर्शिता के स्तर से नियंत्रित किया जा सकता है। इसके स्तर हैं: कोई पारदर्शिता नहीं, अनुरोध पर पारदर्शिता, किसी तीसरे व्यक्ति—तथाकथित सार्वजनिक लेखापरीक्षक—के माध्यम से पारदर्शिता, और पूर्ण पारदर्शिता। अनुरोध पर पारदर्शिता का अर्थ है कि किसी के द्वारा उपयोगकर्ता का डेटा देखने का अनुरोध किए जाने के बाद उपयोगकर्ता को उसे स्पष्ट रूप से स्वीकृति देनी होगी; उसके बाद ही डेटा उपलब्ध होगा। सार्वजनिक लेखापरीक्षक के माध्यम से पारदर्शिता

का अर्थ है कि लेखापरीक्षा का अनुरोध और उसका विवरण ऐसे तीसरे व्यक्ति के पास पहुँचेगा जिसे इस प्रकार के अनुरोधों का उत्तर देने का दायित्व सौंपा गया है। उसका काम दस्तावेज़ों का अध्ययन करना, फिर डेटा की लेखापरीक्षा करना और उसका परिणाम अनुरोध करने वाले व्यक्ति को लिखकर भेजना होगा। पूर्ण पारदर्शिता का अर्थ है कि ऐप का कोई भी सत्यापित उपयोगकर्ता किसी उपयोगकर्ता के डेटा की लेखापरीक्षा कर सकता है। डेटा कौन देख सकता है, इसे सीमित करने वाला एक और विकल्प वह सेटिंग है जिसके द्वारा लेखापरीक्षा का अधिकार केवल उन उपयोगकर्ताओं तक सीमित किया जा सकता है जिनकी पहचान किसी पहचान दस्तावेज़—अर्थात पहचान पत्र, पासपोर्ट या पहचान के किसी अन्य प्रमाण—से सत्यापित हुई हो। इस तरह यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि केवल अपने वास्तविक नाम से उपस्थित उपयोगकर्ता ही किसी उपयोगकर्ता की लेखापरीक्षा कर सके।

ऐप के जिस हिस्से में लेखापरीक्षा की जाती है, उसमें तथाकथित लेखापरीक्षा सूचना पट्ट की सुविधा अंतर्निहित है। यह एक प्रकार का ऑनलाइन सूचना पट्ट है, जिसमें लेखापरीक्षा तक पहुँच पाने वाले सभी उपयोगकर्ता अपनी टिप्पणियाँ या सुझाव दर्ज कर सकते हैं। लेखापरीक्षा मॉड्यूल में ऐप वर्तमान स्क्रीन का चित्र लेने और उस पर टिप्पणियाँ लिखने या किसी जानकारी को उभारने की सुविधा भी देती है। बाद में टिप्पणियों सहित ऐसे स्क्रीन चित्र उपयोगकर्ता के लेखापरीक्षा सूचना पट्ट पर जोड़े जा सकते हैं।

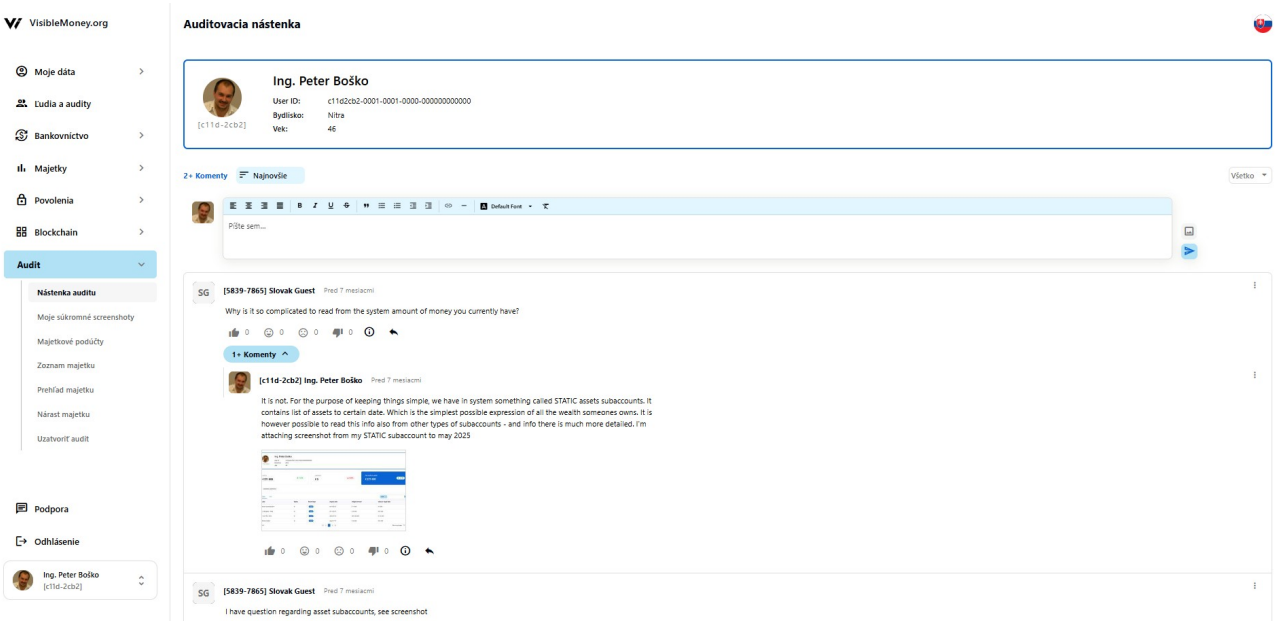

ऐप में लेखापरीक्षा सूचना पट्ट

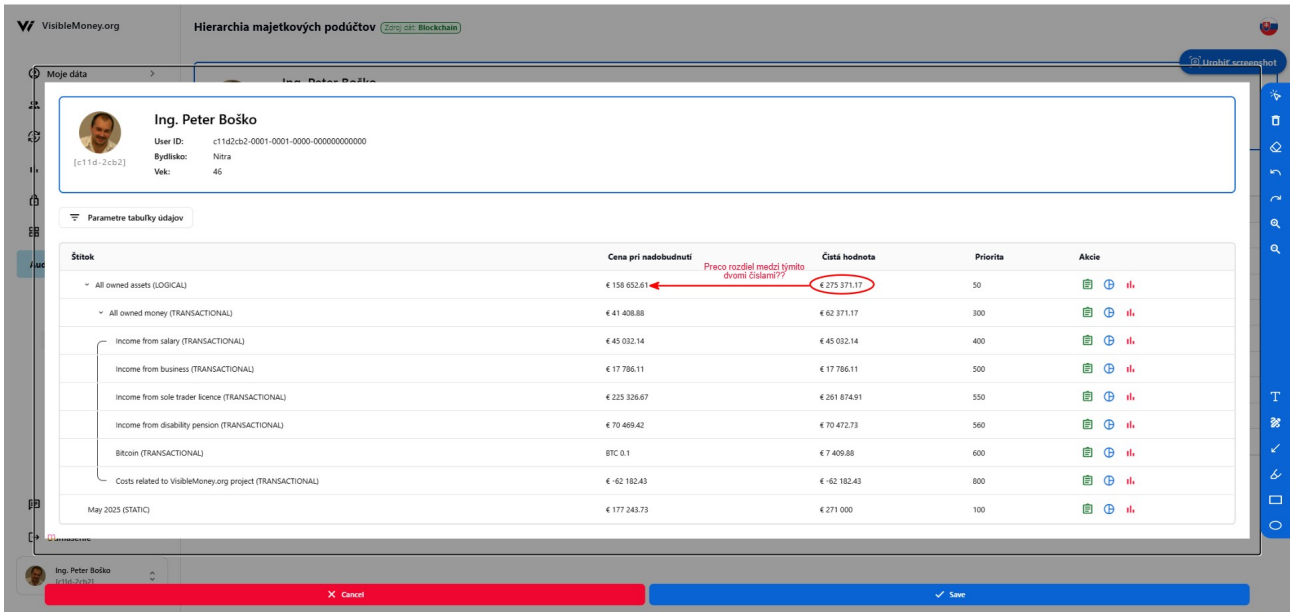

ऐप का लेखापरीक्षा मॉड्यूल, जिसमें अलग-अलग आँकड़ों पर टिप्पणी की जा सकती है

29 परियोजना की ब्लॉकचेन कार्यक्षमता

शुरू से ही परियोजना ऐसी तकनीकों और ऐसी सुरक्षा व्यवस्था पर बनाई जा रही है कि वह संभावित रूप से समाज की उस केंद्रीय निपटान प्रणाली की भूमिका निभा सके जिसका वर्णन Walsch ने अपनी पुस्तक में किया है। प्रणाली में ब्लॉकचेन की भूमिका डेटा की प्रामाणिकता की गारंटी देना और यह सुनिश्चित करना है कि डेटाबेस के स्तर पर कुछ डेटा यूँ ही मिटाया या बदल न दिया जाए। तकनीक के रूप में ब्लॉकचेन दरअसल ऐसा डेटाबेस है जिसमें एक बार कुछ दर्ज हो जाए, तो वह हमेशा के लिए रहता है—मानो पत्थर पर उकेर दिया गया हो। ब्लॉकचेन में पीछे जाकर कुछ बदलना, और साथ ही डेटा की अखंडता को अक्षुण्ण रखना, तकनीकी रूप से असंभव है। यदि संयोग से ब्लॉकचेन डेटाबेस में ऐसा हो भी जाए, तो पहली ही जाँच में उसका तुरंत पता चल जाता है।

इसलिए प्रणाली के सभी महत्त्वपूर्ण डेटा अपने बनने के कुछ ही समय बाद ब्लॉकचेन उपप्रणाली में प्रवेश कर जाते हैं। ब्लॉकचेन उपप्रणाली में हर डेटा को उसके पाठ्य रूप में बदला जाता है—डेटा का JSON निरूपण। इसके बाद उस पाठ्य मान का हैश ब्लॉकचेन में प्रवेश करता है। GDPR के अनुरूप डेटा मिटाने की सुविधा की गारंटी देने की आवश्यकता के कारण ब्लॉकचेन में डेटा के पूरे पाठ्य मान दर्ज नहीं किए जाते, केवल उनके SHA256 हैश दर्ज होते हैं। यदि कोई उपयोगकर्ता कहे कि वह परियोजना छोड़ना चाहता है और उसका डेटा हमेशा के लिए मिटा दिया जाए, तो हम ऐसा कर सकते हैं। इसके लिए हमें ब्लॉकचेन वाले हिस्से को छूने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि ब्लॉकचेन में केवल मानों के हैश होते हैं, स्वयं वे मान नहीं। और जिस मूल मान से हैश की गणना की गई थी, उसके बिना—और उसे हम मिटा देंगे—वे हैश किसी काम के नहीं रहते।

प्रणाली में डेटा दर्ज करने के तरीके के संबंध में यह भी कहना आवश्यक है कि प्रणाली में किया गया कोई भी अद्यतन ब्लॉकचेन वाले हिस्से में इस प्रकार होता है: डेटाबेस में संबंधित ऑब्जेक्ट का एक नया संस्करण बनाया जाता है, और उसके साथ यह समय-मुद्रा भी दर्ज होती है कि वह कब बनाया गया। मान लें कि कोई व्यक्ति 1.1.2025 को ब्लॉकचेन में दर्ज करता है कि उसने 50 000 EUR में एक कार खरीदी। फिर आधे साल बाद वह खरीद की कीमत बदलकर 80 000 EUR कर देता है। उसकी लेखापरीक्षा करने वाला उपयोगकर्ता संभावित रूप से दोनों मान देख सकेगा। यदि वह 1.1.2025 को बनाए गए स्नैपशॉट की लेखापरीक्षा करेगा, तो उसे 50 000 का मान दिखाई देगा; और यदि 1.6.2025 वाले स्नैपशॉट की करेगा, तो 80 000 EUR का मान दिखाई देगा। डेटा दर्ज करते समय यह याद रखना चाहिए कि जो एक बार ब्लॉकचेन में प्रवेश कर गया, वह वहाँ हमेशा के लिए रह जाता है।

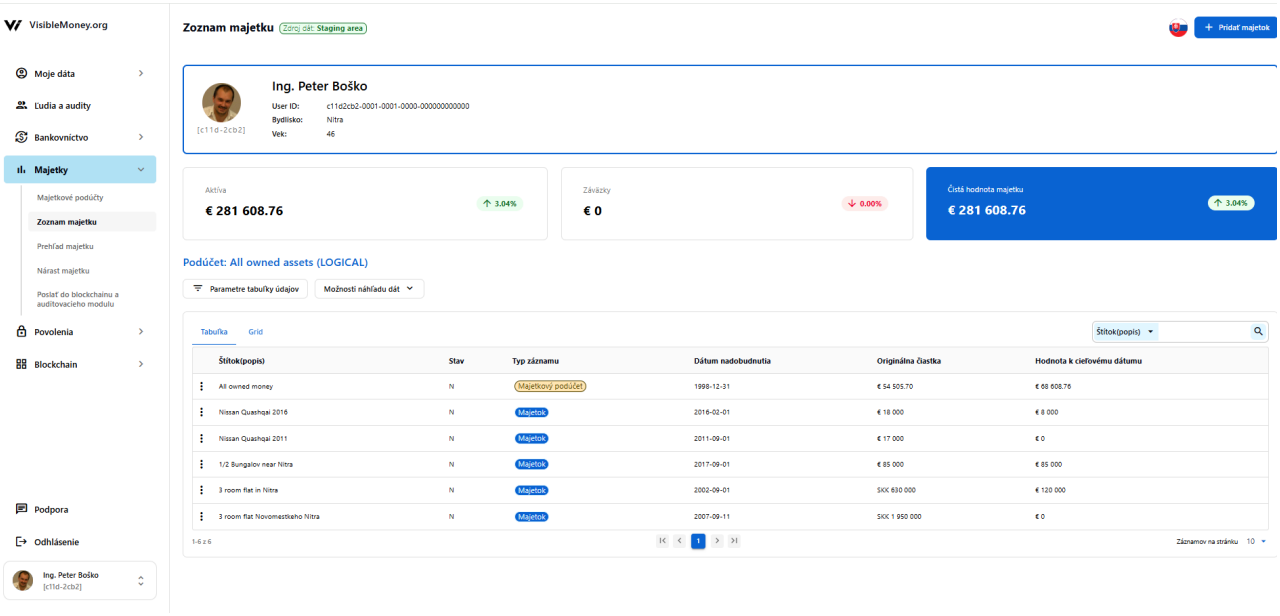

संपत्ति सूची की स्क्रीन

30 समाज का केंद्र बनने से पहले परियोजना को हर प्रकार के दुरुपयोग से सुरक्षित करना

यदि परियोजना इस तरह सफल होती है कि समाज का पूरा संचालन उस पर स्थानांतरित करना उचित लगने लगे, तो कंप्यूटर सुरक्षा के क्षेत्र में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों को परियोजना के प्रति समूचे दृष्टिकोण की फिर से समीक्षा करनी होगी। परियोजना को विकसित करने के तरीके से लेकर, उदाहरण के लिए, बैकऑफिस कर्मचारियों द्वारा प्रणाली का डेटा देखने के तरीके तक, और समस्याओं की जाँच के दौरान परियोजना के डेवलपरों द्वारा वास्तविक संचालन वाले डेटाबेस पर SQL क्लाइंट इस्तेमाल करने के तरीके तक—सबकी।

यह नियम लागू होना चाहिए कि डेटा को हर बार देखे जाने का रिकॉर्ड प्रणाली के स्तर पर इस तरह दर्ज हो कि उसे बंद न किया जा सके। चाहे ऐप की सुविधाओं के माध्यम से डेटा की लेखापरीक्षा की जा रही हो, बैकऑफिस का कोई उपयोगकर्ता डेटा देख रहा हो, या वास्तविक संचालन वाले डेटाबेस पर SQL क्लाइंट से कोई SQL कमांड चलाया जा रहा हो। डेटा के स्वामी को ऐप के माध्यम से यह जान सकने की सुविधा होनी चाहिए कि उसका डेटा हर बार कब-कब देखा गया।

ऐप में त्रुटियों की डिबगिंग जैसी कार्यविधियों में ऐसे चरण शामिल करने होंगे जो, उदाहरण के लिए, त्रुटियाँ दूर करने के उद्देश्य से वास्तविक संचालन के वातावरण से डाउनलोड किए गए डेटा को पहचानरहित बनाएँ। मैं अपनी टीम के साथ ऐसी ऐप विकसित कर रहा हूँ जो किसी उपयोगकर्ता का डेटा एक डेटाबेस से निर्यात करके, वास्तविक संचालन की स्थिति का अनुकरण करने के लिए, उदाहरण के तौर पर किसी परीक्षण वातावरण में आयात करने देगी। ऐसे उपकरण में डाउनलोड किए गए डेटा को पहचानरहित बनाने की सुविधाएँ बहुत अच्छी तरह विकसित होनी चाहिए। डेटा को परीक्षण वातावरण में स्थानांतरित करने का यह काम संभवतः किसी विशेष टीम को करना होगा, जिसके लिए स्पष्ट कार्यविधियाँ निर्धारित हों कि ऐसा काम कैसे किया जाएगा।

फिलहाल मैं कंप्यूटर सुरक्षा का इतना बड़ा विशेषज्ञ नहीं हूँ कि पहली ही कोशिश में तुरंत बता दूँ कि हर चीज़ किस तरह सुरक्षित की जानी चाहिए। ठीक इसी कारण मैं लिख रहा हूँ कि परियोजना की ऐसी सुरक्षा समीक्षा विशेषज्ञों द्वारा की जानी चाहिए। प्रस्तावित उपायों पर दूसरे विशेषज्ञों को अपनी टिप्पणियाँ देनी होंगी और उन्हें बार-बार संशोधित करना होगा, जब तक सभी इस बात पर सहमत न हो जाएँ कि सुरक्षा व्यवस्था इतने महत्त्व की परियोजना के लिए भी पर्याप्त होगी।

इस कदम को कम आँकना बाइबिल में वर्णित प्रलयों जैसे पैमाने की विपत्ति ला सकता है। इसलिए सुरक्षा के स्तर पर सर्वसम्मति के लिए बिना शर्त आग्रह करना चाहिए, और किसी भी परिस्थिति में किसी बात को कम नहीं आँकना चाहिए। परियोजना की सुरक्षा पर लगातार नज़र रखी जानी चाहिए और उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए, ताकि उसमें सूचना प्रौद्योगिकी और मानवीय ज्ञान की नवीनतम स्थिति के अनुरूप सभी वर्तमान जानकारियाँ शामिल होती रहें।

प्रणाली में डेटा देखे जाने के लॉग की नियमित जाँच होनी चाहिए, और डेटा देखने के पीछे की प्रेरणाओं की वैधता भी परखी जानी चाहिए। संभवतः किसी भी तरह डेटा देखे जाने से पहले कोई औपचारिक प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी करनी होगी जो उस पहुँच को वैध आधार दे।

परियोजना के वास्तविक संचालन वाले डेटा के साथ काम करने की ऐसी कार्यविधियाँ और नियमावली इस तरह बनाना कि उनमें कोई सेंध न लग सके, निश्चित ही आसान नहीं होगा। फिर भी मुझे संदेह नहीं कि सही लोग यह काम हाथ में लेंगे, तो चमत्कार होंगे। जब एक अकेला व्यक्ति Bitcoin जैसी किसी चीज़ की कल्पना करके उसे साकार कर सका, तो विकेंद्रीकृत क्रिप्टोकरेंसी की तुलना में यह काम सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों के लिए बच्चों का खेल होगा।

क्वांटम कंप्यूटरों के संभावित आगमन के बाद ब्लॉकचेन तकनीक की सुरक्षा का प्रश्न लें। यदि क्वांटम कंप्यूटर संभवतः यह गणना कर सकें कि कोई निश्चित हैश पाने के लिए डेटा कैसा होना चाहिए, तो मेरे विचार में वांछित डेटा के एकाधिक हैश बनाकर इस समस्या को आसानी से हल किया जा सकेगा। एक हैश के स्थान पर, उदाहरण के लिए, तीन हैश रखे जाएँगे—जैसे Peter मान के लिए पहला हैश Peter स्ट्रिंग से, दूसरा Peter1 स्ट्रिंग से और तीसरा Peter2 स्ट्रिंग से निकाला जाएगा। क्वांटम कंप्यूटर शायद यह जान ले कि इनपुट में ऐसा क्या बदलाव किया जाए जिससे पहला हैश Peter स्ट्रिंग के हैश के समान हो, लेकिन वह यह नहीं खोज पाएगा कि स्ट्रिंग को कैसे बदले ताकि उसका हैश Peter और साथ ही Peter1 के हैश के अनुरूप हो, क्योंकि ऐसा संयोजन शायद अस्तित्व में ही न हो। शायद सटीक गणना करके यह पता लगाया जा सकता है कि कितने हैश आवश्यक हैं, जिससे हर बार सभी वास्तविक संभावनाएँ विश्वसनीय रूप से समाप्त हो जाएँ और हैश के अनुकूल संयोजन असंभव हो जाएँ, क्योंकि वे अस्तित्व में ही न हों।

31 राष्ट्रपति चुनाव

2023 की शुरुआत में मैंने उस अवसर का लाभ उठाने का निर्णय लिया जो इस कारण खुल रहा था कि फ़रवरी 2024 में Slovensko में राष्ट्रपति चुनाव थे और जून 2024 में यूरोपीय संसद के चुनाव। परियोजना को इतना जल्दी पूरा करना कि मैं 2023 की शरद ऋतु के संसदीय चुनावों तक तैयार हो सकूँ, मेरे लिए संभव नहीं था—यह इसलिए भी कि संसदीय चुनाव अप्रत्याशित थे, समय से पहले कराए जा रहे थे।

मुझे आशा थी कि मैं राष्ट्रपति पद के कुछ ईमानदार उम्मीदवारों को ऐप के माध्यम से अपनी संपत्ति का विवरण सार्वजनिक करने के लिए राज़ी कर सकूँगा। दफ़्तर में परियोजनाएँ किसी तरह एक संक्रमण के दौर से गुज़र रही थीं, और चूँकि कंपनी को उस समय मेरे लिए कोई और काम खोजने में कठिनाई हो रही थी, मैंने स्वयं छह महीने का अवैतनिक अवकाश लेने का प्रस्ताव रखा, ताकि दृश्यमान धन को पूरा कर सकूँ और राष्ट्रपति चुनावों के लिए तैयार कर सकूँ।

व्यावसायिक दृष्टि से राष्ट्रपति चुनावों का परिणाम मेरे लिए बुरा रहा। मैं किसी को भी प्रणाली में पंजीकरण कराने और अपनी संपत्ति का विवरण सार्वजनिक करने के लिए राज़ी नहीं कर पाया। कुछ समय तक शायद Ivan Korčok का कोई सहायक मुझसे बात करता रहा, पर अंततः वह बात भी ठंडी पड़ गई। संभव है कि आख़िरकार यह अच्छा ही हुआ हो, क्योंकि उस समय ऐप का ग्राफ़िक रूप अच्छा नहीं था और उसकी कार्यक्षमता भी लड़खड़ा रही थी—असल में केवल किसी निश्चित समय की संपत्ति घोषणाएँ तैयार की जा सकती थीं, यानी उस समय की संपत्ति की सूची दी जा सकती थी।

काम से कई महीनों के विराम के बाद वह समय आया जब मुझे इतालवी लोगों के लिए काम पर लौटना था। लेकिन पता चला कि परियोजनाओं में कुछ बदलाव हो गए थे और तय होने के बावजूद उनके पास मेरे लिए काम नहीं था। इसलिए मुझे कहीं और काम खोजना पड़ा। लगभग आधे वर्ष की तलाश के बाद मुझे एक अन्य अंतरराष्ट्रीय निगम में बैंकिंग प्रणाली पर काम करने की नौकरी मिल गई—यहाँ भी वरिष्ठ Oracle प्रोग्रामर, यानी डेटाबेस विशेषज्ञ के रूप में।

इसके विपरीत, स्वयं परियोजना में बहुत बड़ी सकारात्मक प्रगति हुई। मुझे एक कुशल महिला ग्राफ़िक डिज़ाइनर मिल गई, जिसने प्रणाली को अधिक मानवीय रूप दिया। आख़िरकार वह वैसी दिखने लगी जैसी उसे दिखना चाहिए था। मैंने उसकी कार्यक्षमता में भी परिवर्तन किए, जिनसे संपत्ति का अधिक विस्तृत रिकॉर्ड रखना और केवल किसी निश्चित समय की संपत्ति घोषणा ही नहीं, बल्कि विस्तृत घोषणा भी तैयार करना संभव हुआ। उससे यह भी जाना जा सकता था कि किसी व्यक्ति ने उन अचल संपत्तियों के सौदों में, जो अब उसके पास नहीं हैं, कितना कमाया। इसके साथ क्रिप्टोकरेंसी के सौदों का रिकॉर्ड रखने और समय के साथ, उदाहरण के लिए, आवास ऋण की स्थिति तथा उसकी अदायगी पर नज़र रखने की सुविधा भी जुड़ गई। मई 2025 तक ऐप आख़िरकार उस मुकाम पर पहुँच गई जहाँ मुझे सचमुच उसके लिए शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं थी।

प्रचार की गतिविधियों के अंतर्गत मैंने परियोजना के अस्तित्व और उसके उद्देश्य के बारे में, उदाहरण के लिए, यूरोपीय संसद के सदस्यों को ईमेल भेज-भेजकर स्पैम करना शुरू किया। मेरे ख़याल से यूरोपीय संसद में 700 से अधिक सदस्य हैं। भेजे गए 700 ईमेलों में दिए गए वेबसाइट के लिंक पर लगभग 6 सांसदों ने क्लिक किया। यूरोपीय सांसदों के दो सहायकों ने तो मुझे कुछ उत्तर भी दिया। उनमें से एक के बारे में मैंने पढ़ा था कि उसका झुकाव रूस के पक्ष में है—ऐसे व्यक्ति से मैं कोई संबंध नहीं रखना चाहता था। और दूसरा एक चेक यूरोपीय सांसद था, जिसने मुझे परियोजना में भरपूर सफलता की शुभकामनाएँ दीं; लेकिन जब मैंने उसे प्रणाली में अपनी संपत्ति की घोषणा तैयार करने के लिए कहा, तो संवाद वहीं ठंडा पड़ गया।

32 राजनीतिक आकांक्षाएँ

मुझे समझ में आने लगा कि परियोजना के आगे बढ़ने की कोई संभावना नहीं है, जब तक मैं स्वयं उदाहरण प्रस्तुत न करूँ और दूसरों को यह न दिखाऊँ कि राजनीति वास्तव में ईमानदारी से कैसे की जानी चाहिए—व्यावहारिक समझ के साथ, पूर्ण पारदर्शिता के साथ, और उतना ही महत्त्वपूर्ण, वैश्विक स्तर पर।

इसलिए मैंने तय किया कि अभी कम-से-कम अनौपचारिक रूप से ही सही, एक राजनीतिक दल बनाऊँगा जो इन तीन स्तंभों पर खड़ा होगा।

पहला स्तंभ—सहज विवेक

पहले स्तंभ को एक दस्तावेज़ में व्यक्त किया गया है, जिसमें बताया गया है कि वर्तमान में चर्चा में रहने वाले विभिन्न सामाजिक विषयों के प्रति नए दल का दृष्टिकोण क्या होगा। उसमें लिखी कुछ बातों पर मैं जीवन भर सोचता रहा हूँ। उन प्रस्तावों में मैंने वह सारा विवेक समेटने का प्रयास किया है जो जीवन में कभी मुझे मिला। मुझे नहीं लगता कि उन विषयों के प्रति उस दस्तावेज़ में बताए गए तरीकों से अधिक समझदारी भरा दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। उसमें मैं ऐसी बातों को भी ध्यान में रखता हूँ कि कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका सही निर्णय किसी सहायक तंत्र के बिना एक सामान्य मनुष्य कर ही नहीं सकता। इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि पूरे ग्रह के स्तर पर एक परिषद बनाई जाए, जो मानव सह-अस्तित्व के उन नैतिक प्रश्नों की ज़िम्मेदारी संभाले जिन्हें पहली नज़र में सुलझाना कठिन लगता है। ऐसी परिषद के निष्कर्ष दुनिया की सभी सरकारों के लिए बाध्यकारी होने चाहिए। क्योंकि यदि ऐसी परिषद किसी विषय पर एकमत हो जाती है, तो उसका आकलन कहीं अधिक सक्षम होगा, उसके पीछे परिषद का पूरा अधिकार और उसके पास उपलब्ध सभी साधन होंगे, और साथ ही वह निष्पक्ष, वस्तुनिष्ठ तथा किसी भी लोकलुभावनवाद से अछूता होगा। उदाहरण के लिए, मैं ऐसी परिषद के सामने यह प्रश्न रखता कि क्या और किन परिस्थितियों में भिन्न यौन अभिरुचि वाले लोगों को बच्चा गोद लेने देना उचित है या नहीं।

ऐसी किसी बात का समझदारी भरा निर्णय कोई राजनेता अपनी मेज़ पर बैठे-बैठे नहीं कर सकता। समान लिंग के जोड़ों को बच्चा गोद लेने की अनुमति कब और किन परिस्थितियों में दी जाए या न दी जाए, इसकी कार्यविधि बनाने के लिए बहुत बड़ी संख्या में ऐसे मामलों का गहन अध्ययन आवश्यक है जिनमें दत्तक ग्रहण अच्छा रहा हो और ऐसे मामलों का भी जिनमें परिणाम बुरा रहा हो। ऐसे अनेक सफल और असफल मामलों का अध्ययन करने के बाद ही यह कार्यविधि तैयार की जा सकेगी कि किस परिस्थिति में कैसे आगे बढ़ना चाहिए। ऐसी प्रक्रिया में भावी माता-पिता का मनोवैज्ञानिक और यौन-विज्ञान संबंधी आकलन शामिल हो सकता है, और संभव है कि कई बहुत लंबी प्रक्रियाएँ भी हों जो आवेदन करने वाले माता-पिता को सुखद न लगें। लेकिन यदि लगभग पूर्ण परिवार बसाने की ऐसे जोड़े की इच्छा सच्ची और गंभीर है, तो उन्हें यह प्रक्रिया पूरी करने में समस्या नहीं होगी। किसी राजनेता का अपनी मेज़ पर बैठे-बैठे मनमाना निर्णय कर देना कि केवल यौन अभिरुचि के कारण किसी को पूर्ण पारिवारिक जीवन का अधिकार नहीं है, आदिम सरलीकरण और लोकलुभावनवाद का संकेत है, जिसका आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

अपरंपरागत दृष्टिकोण का एक और उदाहरण प्रवासियों और प्रवासन के प्रति दृष्टिकोण है। मेरा मानना है कि यदि कोई व्यक्ति सौभाग्य से दुनिया के किसी विकसित क्षेत्र में जन्म लेता है, तो उसके साथ केवल अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी जुड़े

होते हैं। ऐसे कर्तव्यों में यह भी है कि अपनी सुविधाजनक स्थिति से, आवश्यकता पड़ने पर, किसी दूसरे मनुष्य की ओर सहायता का हाथ बढ़ाया जाए। प्रवासियों के समाज में ठीक से न घुल-मिल पाने जैसी समस्याएँ दृश्यमान धन की सहायता से आसानी से सुलझाई जा सकेंगी। नई भूमि में प्रवासी एक अतिथि होता है और उसे अपने नए घर के नियमों के अनुसार चलना चाहिए। अन्यथा मेज़बान देश उसे अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। इन नियमों में, उदाहरण के लिए, यह शर्त भी हो सकती है कि प्रवासियों पर दृश्यमान धन में धन की पारदर्शिता का सबसे कठोर स्तर लागू हो। इसका अर्थ होगा कि ऐसे व्यक्ति के सभी आर्थिक लेन-देन उसके आसपास के लोगों की पैनी नज़र में होंगे। जिस क्षण वह गौरैयों को मारने के लिए एयरगन खरीदेगा, उसके आसपास के लोग शोर मचाने लगेंगे और उसे स्पष्टीकरण देना होगा। इस तरह की व्यवस्था में रहने वाले प्रवासी दुनिया के सबसे अच्छे प्रवासी होंगे।

प्रवासन के समर्थन के अन्य कारण, जैसे जनसंख्या में गिरावट, आम तौर पर जाने-पहचाने हैं। लेकिन मैं उन्हें अपने तर्क के रूप में नहीं उछालना चाहता, क्योंकि मेरा मानना है कि विशेष रूप से विज्ञान द्वारा मानव अमरता का प्रश्न सुलझा दिए जाने के बाद ग्रह को जनसंख्या में गिरावट के उलट समस्या का सामना करना पड़ेगा। यदि लोग न बीमारियों से मरेंगे, न बुढ़ापे से, तो ग्रह को लोगों की कमी नहीं, अधिक जनसंख्या का समाधान खोजना होगा।

राजनीतिक दल का दूसरा स्तंभ—मज़बूत पारदर्शिता

दूसरा स्तंभ, मज़बूत पारदर्शिता, दृश्यमान धन परियोजना पर बहुत अधिक निर्भर करेगा। नए दल के प्रत्येक सदस्य को परियोजना में विस्तृत संपत्ति घोषणा तैयार करनी होगी, जिसे या तो पूरी जनता द्वारा, या कम-से-कम राजनेता के भरोसेमंद निकटवर्ती लोगों द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए। मेरा मानना है कि यदि परियोजना सफल सिद्ध होती है, तो ऐसे कानून पर विचार करना उचित होगा जो सार्वजनिक जीवन में सक्रिय राजनेताओं के लिए परियोजना में अपनी संपत्ति का अद्यतन विवरण रखना अनिवार्य बनाए। इसके अतिरिक्त राजनेताओं को परियोजना से जीवन भर जुड़े रहना चाहिए—अर्थात राजनीति छोड़ने के बाद भी—ताकि संपत्ति के ऐसे संभावित प्रवाह दिखाई दे सकें जो अनुचित हों, भले ही वे राजनीति से विदा होने के बाद हों। परियोजना का दीर्घकालिक लक्ष्य है कि उसमें केवल राजनेता नहीं, सभी लोग शामिल हों। क्योंकि तभी उसके प्रभाव पूरी तरह सामने आएँगे। लेकिन कम-से-कम शुरुआत में बहुत से लोग ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेंगे। पहले परियोजना के सकारात्मक प्रभावों को परखना होगा। इस परीक्षण के लिए स्पष्ट पहली पसंद राजनेता और सार्वजनिक धन से वेतन पाने वाले लोग हैं, क्योंकि उनका भ्रष्टाचार से अछूता होना प्रमाणित किया जा सके, यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह स्पष्ट है कि परियोजना में शुरू से ही बहुत-सी छोटी-बड़ी कमियाँ होंगी, लेकिन मुझे आशा है कि मेरी टीम इसी काम के लिए होगी कि संभावित कमियों को दूर किया जाए और परियोजना इच्छित दिशा में आगे बढ़े।

तीसरा स्तंभ—वैश्विकता

ग्रह पर व्यापार और आर्थिक जीवन के वैश्विक हो जाने के बाद अब समय आ गया है कि राजनीति भी वैश्विक हो। यह लज्जाजनक है कि जिस समय मानवता कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाकर संज्ञान को डिजिटल रूप देने में सफल हो चुकी है, उस समय भी पूरे ग्रह का औपचारिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व हमारे पास नहीं है। संयुक्त राष्ट्र के पास व्यवहार में लगभग कोई

वास्तविक राजनीतिक अधिकार नहीं हैं, और इस बेअसरी के कारण दुनिया के अलग-अलग देशों के राजनेता जो चाहें करते हैं। 21वीं शताब्दी में राष्ट्रों या जनसमूहों के बीच युद्ध जैसी चीज़ों का मौजूद होना शर्मनाक है।

मानवता को एक करने के लिए प्रयासरत आधुनिक राजनीतिक शक्ति को वैश्विक कंपनियों—उदाहरण के लिए Mc Donalds—जैसे सिद्धांतों पर काम करना चाहिए। जिस तरह Mc Donalds के किसी मुख्यालय में उत्पाद विकसित किए जाते हैं जो बाद में पूरी दुनिया में बेचे जाते हैं, उसी तरह वैश्विक राजनीतिक दल का भी ऐसा मुख्यालय होना चाहिए जहाँ सर्वोत्तम संभव राजनीतिक उत्पाद तैयार हों। हर वर्तमान समस्या, जिसका समाधान खोजना आवश्यक हो, को उस वैश्विक दल का मुख्यालय अपनी समस्या माने और उसका जितना अच्छा समाधान संभव हो, तैयार करे—सहज विवेक को ध्यान में रखते हुए, पूरी तरह तथ्यपरक ढंग से और लोकलुभावनवाद से सख़्ती से दूर रहते हुए। अलग-अलग देशों में इस दल के स्थानीय राजनेता राजनीति करते समय केंद्रीय रुख़ से बँधे होंगे, इसलिए लोकलुभावनवाद और अवांछित मनमाने उपायों का प्रलोभन दब जाएगा। यदि दुनिया में कोई समस्या है, तो संबंधित क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों की टीम को बैठकर यह तय करना चाहिए कि उसे कैसे सुलझाया जाए। ऐसी टीम को हर बार यथासंभव सबसे विवेकपूर्ण समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, जो स्थानीय राजनेताओं के लिए बाध्यकारी हो। इससे बार-बार पहिए का आविष्कार करने की अनावश्यक मशक्कत समाप्त होगी—स्थानीय स्तर पर बस केंद्र से यह लिया जाएगा कि मामलों को कैसे सुलझाना है। और ये समाधान संबंधित विषय में ग्रह के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्कों द्वारा तैयार किए जाएँगे। अवांछित लोकलुभावनवाद के बिना, और हमेशा सहज विवेक के अनुरूप।

बाद में, जब स्थानीय राजनीतिक दलों की पर्याप्त संरचनाएँ खड़ी हो जाएँगी, तो एक साझा रुख़ तैयार करने का काम मुख्यालय से दल के भीतर एक ऐसी परिषद के पास चला जाएगा जिसमें अलग-अलग स्थानीय शाखाओं के शीर्ष नेता होंगे। वह ग्रह के मस्तिष्क के भीतर किसी मस्तिष्क जैसी होगी।

मेरे विचार में दुनिया के इस तरह काम करने को ही नई विश्व व्यवस्था कहा जाता है। षड्यंत्र संबंधी सिद्धांतों में नई विश्व व्यवस्था को किसी ऐसी अँधेरी तानाशाही के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसका उद्देश्य मानवता को ग़ुलाम बनाना है। वास्तव में मुझे लगता है कि सच ठीक इसका उलटा है। नई विश्व व्यवस्था वास्तव में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर मानवता के काम करने का एक नया ढंग है। ऐसा ढंग जिसमें मनुष्यों के निष्पक्ष और न्यायपूर्ण सह-अस्तित्व की कुंजी एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था हो जो उदार लोकतंत्र की बुनियाद पर बनी हो और वित्तीय तथा संपत्ति संबंधी प्रवाहों की लगभग पूर्ण पारदर्शिता से विस्तृत की गई हो। मेरे विचार में व्यवस्था का ऐसा परिवर्तन आवश्यक है, ताकि आज की तकनीकों के युग में भी मानवता अपेक्षाकृत सुरक्षित रूप से विकसित हो सके और आगे बढ़ती रहे।

33 निजी ब्लॉग के कुछ अंश

Diebus solitudinis

एकांत के दिन, या Nothing else matters।

जब अपने मन की निर्मलता तुम्हें स्पष्ट कर्म की ओर ले जाती है।

जब बाएँ पैर की तरह तुम अकेले होते हो, जानते हो कि कहीं दायाँ पैर भी है।

हम नदी के किनारे खड़े मनुष्य हैं—क्या वे इसे युगों से जानते हैं?

नदी के दो किनारे तो होने ही चाहिए। मैं उसमें निर्वस्त्र उतरना चाहूँगा।

लौट चलूँ उस समय में, जब माँ की माँ ने बपतिस्मा दिया था। और विश्वास से जीवन पवित्र किया था।

गिरजाघर में इस क्षति की विशालता—आत्मा की गहराई में, किसी प्रतिफल के बिना इसका मूल्य नहीं चुकाऊँगा।

इन पंक्तियों की तीव्र निर्मलता हृदय में जीवनदायी जल का स्रोत बुन देती है।

पिता, आत्मा और पुत्र के नाम पर—स्फटिक-सी आँख से सत्य को पकड़ती है।

उस दर्पण में, इतनी निर्मलता से, छवियाँ निश्चित ही जीवन में बदल जाती हैं।

और इस तरह तुम भी, इसी क्षण, जीवित हो उठे हो।

Katka Knechtová—Spomaľ—एक अनोखा संवाद

स्त्री: किसी पौराणिक स्वप्न के पीछे, उन बाग़ों की ओर जहाँ कोई सलीब नहीं।

इस दीवानगी में कहाँ भागे जा रहे हो? मैं तुम्हारे साथ चल नहीं पा रही।

धीमे चलो—तुम्हारी रफ़्तार बहुत तेज़ है, उसे मैं केवल छठी इंद्रिय से महसूस कर पाती हूँ।

मेरा सिर चकरा रहा है।

तुम्हारे साथ-साथ दौड़ रही हूँ, और बेवजह के जुर्मानों से अब ऊब चुकी हूँ।

क्या मुझे डरना चाहिए?

पुरुष: नहीं, मेरी प्रिय, तुम्हें निश्चित ही डरने की ज़रूरत नहीं।

हालाँकि थोड़ा-सा डर शायद हानिकारक भी नहीं।

कुछ अत्यंत सुंदर जन्म ले रहा है।

एक देश, या शायद उससे भी बढ़कर पूरी दुनिया, जहाँ अब कोई पीड़ा नहीं।

एक दुनिया, जहाँ मनुष्य खुलकर साँस लेता है।

एक दुनिया, जहाँ मनुष्य सदा युवा रहता है।

एक दुनिया, जहाँ मनुष्य वही करता है जिसमें उसका मन सचमुच रमता है।

एक संगीत रचता है, दूसरा नगर के चौक में आइसक्रीम बाँटता है।

तीसरा अपने बच्चों को पालने-पोसने में जीवन लगाता है।

ताकि अधिक गहराई से महसूस कर सके कि समय कैसे उड़ जाता है।

बस वेदी के सामने उसे वचन देना होगा कि बच्चों के वयस्क जीवन की शुरुआत तक उनकी माँ के साथ एक आदर्श जोड़ी बना रहेगा।

एक दुनिया, जहाँ मूल्यों को धन से मापना बंद हो गया है, जहाँ मनुष्य के सुख की सच्चे मन से रक्षा की जाती है।

जहाँ अब कोई बीमारी नहीं, जहाँ मानवता पराधीनता से मुक्त हो जाएगी।

एक दुनिया, जहाँ अब कोई अभाव नहीं, जहाँ मनुष्य अपनी ऊर्जा केवल उन बातों पर लगाता है जिनमें सचमुच प्रेम बसता है—

परिवार, सुख, आस्था, और वे बातें जो उसके जीवन को अर्थ देती हैं।

आज की मानवता की 3 बुनियादी चुनौतियाँ और उनके प्रति मेरा उत्तर

आज के समय की 3 चुनौतियाँ, जिन्हें मैंने अपनी ऊर्जा देने का निर्णय किया है। समाज के नियमों में परिवर्तन से लेकर अनंत जीवन तक, और फिर अस्तित्वमीमांसा में प्रगति तक।

चुनौती संख्या 1—समाज के संचालन के नियमों में थोड़ा-सा परिवर्तन, जिसका मानव सह-अस्तित्व की प्रभावशीलता पर नाटकीय प्रभाव पड़े—दृश्यमान धन की स्थापना

पेशेवर जीवन में मैं प्रोग्रामर हूँ। प्रोग्रामिंग में यह बहुत सामान्य है कि ग्राहक के लिए कोई सुविधा तैयार करने और सब कुछ ठीक से चलने लगने के बाद आप पूरी समस्या पर एक बार फिर सोचते हैं—लेकिन इस बार उन सभी अनुभवों के साथ, जो शुरुआत करते समय आपके पास नहीं थे। फिर यदि परिस्थितियाँ अनुमति दें, तो पूरी चीज़ दोबारा प्रोग्राम करते हैं, इस बार पहले से कहीं अधिक सुविचारित ढंग से। अब आप जानते हैं कि समस्या सुलझाते समय किन कठिनाइयों का सामना होगा, आपकी प्रणाली को किन अपवादों के साथ काम करना आना चाहिए, इत्यादि। इस प्रक्रिया को रीफ़ैक्टरिंग कहते हैं। और पूरे समाज के संचालन को व्यापक दृष्टि से देखकर रीफ़ैक्टरिंग की यह प्रक्रिया आख़िरी बार Ježiš Kristus ने, 2000 वर्ष पहले की थी। 2000 वर्ष बीत गए, और इस दौरान किसी ने अधिक अच्छे, अधिक सुविचारित ढंग से मानव समाज के चलने के बारे में नहीं सोचा। मसीह के कथन—“तुममें जो निष्पाप है, वही सबसे पहले उस पर पत्थर फेंके” और “तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ जैसा व्यवहार करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो”—Mojžiš की दस आज्ञाओं की तुलना में एक प्रगति थे, लेकिन Nazaret के उस पुरुष के समय से समाज के नियम लगभग अपने-आप ही विकसित होते रहे हैं। मैं यह कहना चाहता हूँ कि शायद 2000 वर्षों का अनुभव प्राप्त करने के बाद अब थोड़ा पीछे हटकर यह प्रस्तावित करने का समय आ गया है कि मानव समाज अधिक अच्छे ढंग से कैसे चल सकता है। तीसरी सहस्राब्दी का मानव समाज कैसा होना चाहिए, इसका उत्तर मुझे पहली बार अमेरिकी लेखक Neale Donald Walsch की पुस्तक ईश्वर से संवाद 2 में दिखाई दिया। मैंने वह पुस्तक 90 के दशक के मध्य में पढ़ी थी, जब Slovensko में उग्र मेचियारवाद और तत्कालीन निजीकरण से निकली

संपत्तियों पर कब्ज़े की लड़ाई चरम पर थी। मूलतः पूरा विचार बिल्कुल सरल है। लेखक के अनुसार विकसित समाजों में—अर्थात ऐसे समाजों में जहाँ कोई दूसरे की कीमत पर कुछ नहीं चाहता—धन पूरी तरह पारदर्शी और दृश्यमान होता है। दूसरे शब्दों में, समाज का हर व्यक्ति किसी भी समय यह पता लगा सकता है और सत्यापित कर सकता है कि किसके पास कितना धन है, कौन-सी संपत्तियाँ हैं और उसके वित्तीय प्रवाह क्या हैं, इत्यादि। सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ के रूप में मुझे समझ में आया कि ऐसी बैंकिंग प्रणाली स्थापित करके यह साकार किया जा सकता है जिसमें यह जानकारी हो, जो उसे उपलब्ध करा सके, और साथ ही पूरे समाज का केंद्रीय निपटान केंद्र भी हो। यदि आपके मन में लगभग हज़ार कारण आ रहे हैं कि आपके विचार में यह क्यों नहीं चल सकता, तो पहले https://viditelnepeniaze.sk पर थोड़ा घूमकर देखिए; वहाँ मैंने इस विचार को दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे, हर ओर से परखा है। चाहें तो अपना ईमेल देकर न्यूज़लेटर पाने के लिए पंजीकरण भी करा सकते हैं। न्यूज़लेटर मेरे लिए इस बात का एक महत्त्वपूर्ण पैमाना है कि मैं जनता तक पहुँचने में कितना सफल या असफल हो रहा हूँ।

लेकिन इस बात को अंततः समेटते हुए मैं कहूँगा कि पूरे समाज का ऐसी पारदर्शी वित्तीय प्रणाली की ओर जाना, जिसमें धन, संपत्तियाँ और उनके प्रवाह पूरी तरह दिखाई दें, शायद केवल मानवता के समग्र संचालन को बेहतर बनाने वाली चीज़ ही नहीं, बल्कि एक आवश्यकता भी है। इससे समाज के उन संवेदनशील बिंदुओं पर निगरानी के तंत्र लगाए जा सकेंगे जिनकी सुरक्षा निर्णायक हो सकती है, और जिनकी रक्षा की समस्या को पारंपरिक पूँजीवाद छूता तक नहीं। सबसे स्पष्ट उदाहरण के रूप में मेरे मन में यह आता है कि दृश्यमान धन के कारण कहीं बेहतर ढंग से निगरानी की जा सकेगी कि, मसलन, कोई नया घातक वायरस विकसित करने में सक्षम जैविक प्रयोगशालाएँ वास्तव में क्या कर रही हैं।

चुनौती संख्या 2—चिकित्सा में ऐसी प्रगति जो सभी बीमारियों, यहाँ तक कि बुढ़ापे का भी इलाज करने की क्षमता दे—अनंत जीवन प्राप्त करना

मेरे विचार में आज के समय का सबसे बड़ा व्यावसायिक अवसर स्वयं चलने वाली इलेक्ट्रिक कारें नहीं हैं, बल्कि कोई ऐसी चीज़ है जो किसी आकर्षक भौतिक वस्तु की तुलना में हर व्यक्ति की आवश्यकता को कहीं अधिक व्यक्तिगत और अंतरंग स्तर पर पूरा करे। सभी विज्ञानों में हो रही प्रगति एक ऐसे मार्ग पर प्रकाश डाल रही है जो देर-सवेर वास्तविकता बन जाएगा। मेरा आशय चिकित्सा में प्रगति से है। लेकिन केवल बीमारियों के इलाज से नहीं। किसी भी बीमारी को ठीक करने की क्षमता से मनुष्य के शरीर की जैविक प्रक्रियाओं को उलटने तक केवल एक छोटा-सा कदम है—अर्थात उम्र बढ़ने की प्रक्रिया रोक देना, या मनुष्य की जैविक घड़ी को सचमुच उलटी दिशा में चला देना।

सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ के रूप में मुझे प्रत्येक मनुष्य से जुड़ी इस समस्या के समाधान में सॉफ़्टवेयर तकनीकों के लिए असाधारण संभावनाएँ दिखाई देती हैं। चिकित्सा की समस्या दरअसल प्रतिक्रिया की जानकारी है। डॉक्टर वास्तव में कभी 100 % निश्चितता से नहीं बता सकता कि किसी दवा पर आपका शरीर कैसे प्रतिक्रिया करेगा। और यदि आप लगातार 10 वर्ष तक वह दवा लें, तो उसके क्या दुष्प्रभाव होंगे, यह तो और भी नहीं। शरीर के सॉफ़्टवेयर मॉडल इस समस्या को सुलझा सकते हैं। मानव शरीर का सॉफ़्टवेयर मॉडल ऐसी प्रणाली है जो गणना कर सकती है कि कुछ निश्चित बाहरी परिस्थितियों में शरीर का कोई हिस्सा कैसे व्यवहार करेगा। मानव शरीर का ऐसा आभासी प्रतिरूप चिकित्सा का परम साध्य

बन जाएगा। अलग-अलग रसायनों या उपचारों पर शरीर कैसे प्रतिक्रिया करेगा, इसे पहले परख सकने की सुविधा से डॉक्टरों के हाथ में ऐसा उपकरण आ जाएगा जिसके सहारे वे मानव शरीर की हर एक कोशिका पर पूर्ण नियंत्रण रख सकेंगे।

अपने स्वास्थ्य में हर व्यक्ति की गहरी रुचि होती है, और इस क्षेत्र में किसी भी प्रगति का पुरस्कार बहुत बड़ी व्यावसायिक सफलता होगा। यह भी संभव है कि कृत्रिम तंत्रिका नेटवर्क बनाने की अपेक्षा मानव मस्तिष्क के रसायन और प्रक्रियाओं का अनुकरण करने के प्रयास से सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता पहले प्राप्त हो जाए।

इस चुनौती के निष्कर्ष को पूरे लेख के शीर्षक से जोड़ते हुए मेरा मानना है कि यदि मैं पहले कदम से इतना धन कमा सकूँ कि चुनौती 2 के शोध का ख़र्च उठा सकूँ, भले ही वह कई दशकों तक चले, तो इस चुनौती को साकार करना संभव होगा। मैं जानता हूँ कि मेरे होने या न होने से स्वतंत्र रूप से कुशल उद्यमी इस अवसर को पकड़ लेंगे। लेकिन यदि मैं पूरी बात को व्यवस्थित ढंग से और लक्ष्य पर नज़र टिकाए हुए आगे बढ़ाऊँ, तो निश्चित ही पूरी प्रक्रिया में कुछ वर्षों की कटौती की जा सकती है। मेरी पीढ़ी के लोगों के लिए यह जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। मैं इसे सुधारता हूँ—अनंत जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर।

मेरा मानना है कि पूरा विचार 20 वर्षों के भीतर उसी तरह साकार किया जा सकता है जिस तरह मानव जीनोम को पढ़ना साकार किया गया था। सहस्राब्दी बदलने के समय किसी एक व्यक्ति के जीनोम को पढ़ने की अनुमानित लागत एक अरब डॉलर थी। उसके 20 वर्ष बाद आनुवंशिक अनुक्रमण व्यावसायिक रूप से 1000 यूरो में किया जा रहा है। जिस काम का मैं वर्णन कर रहा हूँ, वह बेशक एक स्तर अधिक कठिन है, लेकिन उसे 20 वर्ष अधिक नई तकनीकों के साथ किया जा सकता है।

चुनौती संख्या 3—अस्तित्वमीमांसा में प्रगति—100 % प्रमाण प्राप्त करना कि बाहरी दुनिया और आसपास के लोग मेरे जितने ही वास्तविक हैं—अकेलेपन की समस्या सुलझाना

यह चुनौती जीवन और अस्तित्व के उस गुण को छूती है जो मेरे विचार में मनुष्य और स्वयं अस्तित्व का सबसे बड़ा अभिशाप भी है और सबसे बड़ा वरदान भी। मेरा अनुमान है कि लोग इस अनुच्छेद को कम ही समझ पाएँगे। मेरे अधिकांश समवयस्क अपने ऊपर निर्भर आसपास के लोगों की देखभाल में पूरी तरह व्यस्त हैं—मेरा आशय माता-पिता की भूमिका से है। जब किसी के पास ऐसी ज़िम्मेदारियाँ हों, तो दिन के अंत में वह इतना भर पाकर ख़ुश होता है कि किसी तरह दिन बीत गया, और भृंग की अमरता जैसे विषयों पर इस प्रकार के चिंतन उसे बेमानी और अनावश्यक लगेंगे। लेकिन यदि बिंदु 2 की चुनौती सचमुच पूरी हो गई और मनुष्य असीमित समय तक जीने लगे, तो स्थिति नाटकीय रूप से बदल जाएगी। बच्चे बड़े होकर चले जाएँगे। यह भी संभव है कि ग्रह के सीमित संसाधनों के कारण वर्तमान की तरह असीमित संख्या में बच्चे पैदा करना संभव न हो। जीवन का प्रारंभिक चरण पार करने के बाद लोग बहुत विरल परिस्थितियों में ही और बच्चे पैदा करेंगे। उनके पास आत्मनिरीक्षण और अपने भीतर देखने के लिए अधिक समय होगा।

चूँकि लेख का यह हिस्सा बहुत संभव है कि अत्यंत व्यक्तिगत हो, इसलिए मेरी अपनी परिस्थिति का परिप्रेक्ष्य देना शायद उचित होगा। मैं 42 वर्ष का हूँ, मल्टिपल स्क्लेरोसिस के कारण व्हीलचेयर से बँधा हूँ, और संभव है कि बीमारी ने अभी अपनी आख़िरी बात न कही हो। ऐसी परिस्थितियों में परिवार बसाने का साहस जुटाने के लिए मुझे थोड़ा पागल होना पड़ेगा।

मैं यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि मेरी व्यक्तिगत स्थिति काफ़ी विशेष है, और शायद मैं उन बातों पर भी सोचता हूँ जहाँ सामान्यतः मनुष्य का मन नहीं भटकता।

मनुष्य को बहुत कम बातों के बारे में पूर्ण, 100 % निश्चितता होती है। इस विशेषाधिकार प्राप्त सूची में शामिल बातों में से एक है René Descartes का कथन: "मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ।" यदि प्राथमिक तर्क सही है, तो इस तथ्य से, जिसे मनुष्य इस क्षण अनुभव कर रहा है—अर्थात वह सोचता है—अनिवार्य रूप से यह निकलता है कि उसे वास्तविक सत्ता होना ही चाहिए, क्योंकि वह विचार उत्पन्न कर रहा है। जीवन की अधिकांश दूसरी बातें उस निश्चितता से कोसों दूर हैं जो मनुष्य को अपने अस्तित्व के बारे में होती है। मनुष्य की अनुभूति और वास्तविकता के बीच उतनी ही दूरी हो सकती है जितनी उस व्यक्ति के अनुभव और सत्य के बीच है जो Platón की प्रसिद्ध गुफ़ा में केवल छायाएँ देखता है। मनुष्य अपने परिवेश के बारे में केवल वही जान सकता है जो उसकी इंद्रियाँ उसे पहुँचाती हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपकी अनुभूति में कोई दोष हो—जैसे आप रंगांध हों—तो आप कभी नहीं समझ पाएँगे कि स्वस्थ लोग दुनिया को कैसे देखते हैं। सैद्धांतिक रूप से बाहरी दुनिया का वास्तविक होना आवश्यक ही नहीं; आपकी इंद्रियों को उसका ऐसा दिखाई देना काफ़ी है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य के पास अपने आसपास की दुनिया का कोई प्रमाण नहीं है। उसके चारों ओर सब कुछ अवास्तविक हो सकता है; इतना पर्याप्त है कि उसकी इंद्रियाँ उसे लगातार धोखा देती रहें। मेरा मानना है कि अनुभूति में सबसे बड़ी गुणात्मक छलाँग, जिसे शायद कोई मनुष्य अनुभव कर सके, ऐसी निश्चितता पाना है जो अपने होने के ज्ञान की निश्चितता के समान स्तर की हो—यह निश्चितता कि बाहरी दुनिया में जिसे वह महत्त्व देता है, वह सचमुच उतना ही वास्तविक है जितना वह स्वयं। यदि मैं बाहरी दुनिया के बारे में ऐसी निश्चितता प्राप्त कर लूँ, तो बस बैठ जाऊँगा और राहत के आँसू तीन दिन तक बहाऊँगा। यह अत्यंत भयावह और निराशाजनक है कि जिन बातों को हम सबसे अधिक महत्त्व देते हैं, उनके अस्तित्व के बारे में भी हमारे पास कोई निश्चितता नहीं है।

इस चुनौती की शुरुआत में मैंने लिखा था कि अपने परिवेश के बारे में निश्चितता का न होना मनुष्य का सबसे बड़ा अभिशाप ही नहीं, वरदान भी है। वरदान इसलिए कि यदि इस प्रश्न में वैज्ञानिक प्रगति हुई, तो शायद हम उस बिंदु तक पहुँच जाएँ जहाँ मन की पहचान को, कहें तो, लूटा जा सके। आज यदि कोई अरबपति है, तो ऐसा कभी नहीं होगा कि वह एक अरब हैमबर्गर खा ले और उनसे उतना सुख पाए जितना एक-एक हैमबर्गर खाने वाले एक अरब अलग-अलग लोगों का सम्मिलित सुख होता है। यदि दूसरे मनुष्य के मन को, कहें तो, लूट सकना संभव हो, और इस तरह यह निश्चितता मिल सके कि वह व्यक्ति भी उतना ही वास्तविक है जितने आप, तो शायद उन लोगों के सुखों का संचयी अनुभव करना संभव हो जाए जिनके मन आपने लूट लिए हैं। इसलिए ऐसी वैज्ञानिक प्रगति दोधारी तलवार हो सकती है।

निष्कर्ष

मैंने तीन चुनौतियों का वर्णन किया है, जिन्हें थोड़ी शक्ति और इच्छाशक्ति होने पर अपनी ऊर्जा देने का निर्णय लिया है। पहली चुनौती पर मैं 90 के दशक के मध्य से ही मन के किसी कोने में लगातार सोचता रहा हूँ। दृश्यमान धन को स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम लगभग एक वर्ष पहले उठाने शुरू किए—इस विचार के लिए वेबसाइट बनाकर और वह सॉफ़्टवेयर विकसित करके जिस पर दृश्यमान धन की प्रणाली चल सके। दूसरी चुनौती पहली की संभावित सफलता से जुड़ी

है। यदि पहली चुनौती के माध्यम से वित्तीय सफलता मिल गई, तो मैं उपलब्ध संसाधनों का आवश्यक हिस्सा मानव शरीर के सॉफ़्टवेयर मॉडल विकसित करने में लगाऊँगा।

तीसरी चुनौती ही ऐसी है जिसमें अभी सुरंग के अंत पर कोई प्रकाश दिखाई नहीं देता। वह ऐसी वैज्ञानिक प्रगति पर निर्भर है जिसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता—वह पास ही हो सकती है, या सहस्राब्दियों दूर। लेकिन 18वीं शताब्दी का मनुष्य आज के मोबाइल फ़ोनों और इंटरनेट की क्षमताओं के बारे में भी कुछ ऐसा ही अनुमान लगाता।

कर्म कैसे काम करता है

मेरे विचार में जीवन की कुछ बातें कैसे काम करती हैं, यह समझने के लिए यह समझना बुनियादी महत्त्व रखता है कि जीवन में कर्म कैसे काम करता है। ऐसा नहीं है कि आकाश में किसी बादल पर एक बूढ़ा बैठा है, जो अपनी नोटबुक में लिखता जाता है कि किसने कब किसके साथ अच्छा या बुरा किया, और फिर कुछ अवसरों पर लोगों को उनके पिछले कर्मों के अनुसार दंड देता है।

इसके बजाय मेरा मानना है कि जीवन की इस बूमरैंग जैसी प्रक्रिया में भी हमारे अपने, भीतर से किए गए अनुभव का प्रभाव कहीं अधिक होता है। हम स्वयं और हमारी चेतना ही बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि हमने कब किसके साथ क्या अच्छा या बुरा किया। यदि हमारा हिसाब नकारात्मक है, तो हमारा अवचेतन जीवन में बुरी चीज़ों को आकर्षित करता है, और इसका उलटा भी होता है।

यदि जीवन में कोई नकारात्मक घटना होती है—उदाहरण के लिए गर्भसमापन करवाना—तो भले ही ऐसा निर्णय लेते समय व्यक्ति को लगे कि वह उसके परिणामों से मानसिक रूप से समझौता कर चुका है, दीर्घकाल में यह विनाशकारी परिणामों वाली एक ग़लत धारणा सिद्ध हो सकती है। हम मानव भ्रूण का जीवन समाप्त करना किसी जीवित मनुष्य की हत्या जितना ही अपराध मानें, या किसी बेडौल जैविक पदार्थ के जीवन का ऐसा अंत जिसके कोई परिणाम नहीं होंगे और जो ऐसा न करने पर हमारा जीवन बर्बाद कर देता—इन दोनों ही स्थितियों में आगे चलकर जीवन हमें ऐसी परिस्थितियों में पहुँचा सकता है जहाँ हमारा दृष्टिकोण बदल जाए। बल्कि ऐसा न होने की संभावना बहुत कम है। एक विशेष दृष्टिकोण से गर्भपात को किसी दूसरे मनुष्य की हत्या से कई गुना अधिक गंभीर अपराध समझा जा सकता है। क्योंकि इसे अपनी ही संतान की हत्या के रूप में देखा जा सकता है। मैं जो कहना चाहता हूँ, उसे स्पष्ट कर दूँ—इसे अपनी ही संतान की हत्या के रूप में देखा जा सकता है, यह बात ही जीवन को अचूक निश्चितता के साथ नष्ट कर देने के लिए पर्याप्त है। अपने जीवन में मैं ऐसे चार लोगों को निकटता से जान पाया हूँ जिन्होंने कुछ ऐसा किया था। उनमें से तीन उसके परिणामों से इतने पंगु हो गए थे कि बिल्कुल सरल परिस्थितियों का भी ग़लत आकलन करते थे और आसपास के लोगों का जीवन नरक बना देते थे। ऐसे व्यक्ति की आँखों के सामने मानो एक विशाल अवरोध हो, जो उसे दुनिया को निष्पक्ष ढंग से देखने से रोकता है। वह जो कुछ भी करता है, उस पर मुख्य रूप से इस बात का प्रभाव रहता है कि वह हर चीज़ में ऐसी पूरी तरह असंबद्ध बातें ले आता है जिनका प्रमुख उद्देश्य किसी-न-किसी प्रकार से जीवन के विरुद्ध किए गए उस अपराध को उचित ठहराना होता है।

इसलिए अपनी बात समेटते हुए कहूँगा कि गर्भपात जैसी किसी प्रक्रिया से गुज़रना ऐसी बात है जो जीवन पर बुनियादी रूप से नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। भले ही वर्तमान क्षण में वह एक अच्छा, व्यावहारिक विकल्प लगे, जो जीवन की सुख-सुविधाओं को ढहने से बचा लेगा। अधिकांश मामलों में यह शैतान के साथ किया गया ऐसा सौदा होता है जिसमें व्यक्ति, कहें तो, दिखने में आरामदेह जीवन के बदले अपने निष्कलंक अंतःकरण को छोड़ देता है। यह बात विशेष रूप से उन युवतियों को गहराई से समझाना अनिवार्य होना चाहिए जो ऐसा करवाने का इरादा रखती हैं। इसके संभावित प्रभाव को समझाने वाला एक कारगर प्रतिउपाय, उदाहरण के लिए, अस्पताल के नवजात शिशु विभाग में कुछ समय बिताना अनिवार्य करना हो सकता है। यदि इससे क्या हो सकता है, यह इतनी गहराई से समझाए जाने और नवजात शिशु विभाग में नए जीवन से संपर्क के बाद भी महिला अपने निर्णय पर अड़ी रहे, तो संभवतः उसके कारण इतने गंभीर हैं कि उनका सम्मान किया जाना चाहिए।

ब्रह्मांड का सीमित होना क्यों आवश्यक है—एक चिंतन

यह चिंतन किसी कठोर प्रमाण से बहुत दूर है, फिर भी मुझे लगता है कि इसके विचार-प्रवाह में कुछ ऐसी बातें सामने आती हैं जिन्हें जानना उपयोगी है।

Albert Einstein ने कभी कहा था कि ब्रह्मांड और मनुष्य की मूर्खता अनंत हैं, हालाँकि पहले के बारे में उन्हें निश्चितता नहीं है। इस लेख में मैं यह प्रमाण देने का प्रयास करूँगा कि ब्रह्मांड के मामले में Einstein ग़लत थे।

कल्पना करें कि ब्रह्मांड सचमुच अनंत है। तब उसके किसी भी बिंदु पर कहा जा सकता है कि 10^{36} प्रकाशवर्ष दूर पृथ्वी 2 मौजूद है और उस पर Peter Boško2। यदि वह 10^{36} वर्ष की दूरी पर न हो, तो 10^{54} वर्ष और आगे हो सकता है। यदि ब्रह्मांड अनंत है, तो Boško 2 की खोज को आगे बढ़ाते जाने की हमारी संभावनाएँ भी अनंत होंगी, और इसलिए उसका सफल होना निश्चित होगा। अनंत बार सफल होना। लेकिन Peter Boško 2 तकनीकी रूप से इतना उन्नत होगा कि यदि मैं अभी अपना हाथ फैलाऊँ, तो वह इतनी दूर से मेरे हाथ पर 500 EUR भेज सकेगा। देख रहे हैं कि हम कैसी बेतुकी बातों तक पहुँच रहे हैं? जिस Peter Boško 2 का मैंने वर्णन किया, वह मौजूद नहीं है, क्योंकि अभी मेरे हाथ पर 500 यूरो का नोट आकर नहीं गिरा।

बातों को ठीक-ठीक स्पष्ट करने के लिए लिखना ज़रूरी है कि यह प्रमाण परोक्ष रूप से दो मान्यताओं का उपयोग करता है:

मैं अनंत ब्रह्मांड उसे मानता हूँ जिसमें पदार्थ का वितरण वैसा ही अनवरत दोहराता रहे जैसा हमें दिखाई देने वाले ब्रह्मांड के उस हिस्से में मिलता है जिसे हम देखते हैं। उसमें पदार्थ का वितरण अनंत तक कमोबेश यादृच्छिक होना चाहिए, और उसमें वैसी आकाशगंगाएँ तथा तारकीय प्रणालियाँ संभव होनी चाहिए जिन्हें हम जानते हैं। लेकिन यदि, उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड केवल एक निश्चित दूरी तक—भले ही वह बहुत बड़ी हो—हमारे देखे हुए ब्रह्मांड जैसा हो और उस सीमा के आगे केवल ख़ाली अंतरिक्ष हो, तो ऐसे ब्रह्मांड को मैं सीमित मानता हूँ।

यह मान्यता कि पर्याप्त तकनीकी विकास होने पर किसी न किसी प्रकार से बहुत बड़ी दूरी पर भौतिक हस्तक्षेप करना संभव होगा—उदाहरण के लिए किसी भी दूरी से मेरे पास एक नोट टेलीपोर्ट करना। यदि पहला Peter Boško 2, 10^100 प्रकाशवर्ष दूर मौजूद हो, लेकिन अपर्याप्त तकनीकी विकास के कारण मुझे नोट न भेज सके, तो मेरे प्रमाण पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि मैं बस किसी दूसरे की खोज जारी रखूँगा, जिसके पास आवश्यक तकनीक भी होगी। मेरे प्रमाण के सही होने के लिए केवल इतना आवश्यक है कि किसी अत्यंत उन्नत तकनीक से किसी भी दूरी तक नोट भेजना भौतिक रूप से संभव हो।

ब्रह्मांड अनंत नहीं हो सकता, क्योंकि अनंत का तत्व ऐसी प्रमाणित की जा सकने वाली बेतुकी स्थितियाँ पैदा करता है, जैसे नोट भेजा जाना, जो प्रमाणित रूप से नहीं हो रहा। लेकिन नोट भेजना तो केवल एक स्पष्टतः बेतुका उदाहरण है, जिसका उद्देश्य अनंत ब्रह्मांड के निरर्थक परिणामों को दिखाना है। वास्तव में जो होना चाहिए, उसका दायरा कहीं अधिक व्यापक है। मूलतः वह सब होना चाहिए जो मैं सोच सकता हूँ और वह भी जो नहीं सोच सकता—केवल मेरे साथ नहीं, पूरे ब्रह्मांड में। यदि

ब्रह्मांड अनंत होता, तो जो कुछ भी हो सकता है, वह हर जगह होना चाहिए। और यह तो अनस्तित्व की परिभाषा है। और वास्तव में वही अनंत है।

अस्तित्व का एकमात्र पहलू जिसमें किसी अर्थ में अनंतता का गुण है, यह तथ्य है कि मुझे अपना बोध है। या यदि आप चाहें, तो यह कि चेतन प्राणियों को अपना बोध होता है। लेकिन उनके बारे में यह मैं केवल परोक्ष रूप से जानता हूँ; अपने बारे में 100 % निश्चितता से जानता हूँ, क्योंकि यह सीधे मेरे भीतर घटता है।

लेकिन इस पर शायद फिर कभी।

दृश्यमान धन (VP) प्रणाली की संरचना—ब्लॉकचेन से सुरक्षित पहली पारदर्शी बैंकिंग प्रणाली 1

कुछ समय पहले मैंने अपने ब्लॉग पर एक लेख प्रकाशित किया था कि क्रिप्टोकरेंसी की दुनिया के नवाचार किस तरह लोगों के एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में बुनियादी बदलाव ला सकते हैं। संक्षेप में विचार यह है कि यदि समाज में लोगों का निजी धन और उनकी संपत्तियाँ भी कुछ सीमा तक पारदर्शी हों, तो संभवत: धीरे-धीरे उन अधिकांश समस्याओं का समाधान निकल आए जो संसाधनों के लिए मनुष्यों के बीच अनादि काल से चले आ रहे संघर्ष से पैदा होती हैं।

आज के लेख में मैं उस प्रणाली की संरचना पर ध्यान देना चाहता हूँ जो पूरे समाज के लिए एक पारदर्शी निपटान प्रणाली की आवश्यकताएँ पूरी करे, और जिसे मैं धीरे-धीरे विकसित कर रहा हूँ। शुरुआत में क्रिप्टोकरेंसी की दुनिया की एक छोटी-सी तकनीकी झलक आवश्यक होगी।

हैशिंग एल्गोरिद्म—यह प्रमाण देने की कुंजी कि कुछ बातें ठीक वैसी ही हैं जैसी आपने कहीं दर्ज की हैं, और बहुत अधिक निश्चितता के साथ कहा जा सकता है कि वे कुछ और नहीं हैं

सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में, और विशेष रूप से क्रिप्टोकरेंसी के क्षेत्र में, तथाकथित हैशिंग एल्गोरिद्म एक प्रमुख अवधारणा है। इसका सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाला संस्करण, जिसे SHA256 कहते हैं, ऐसा एल्गोरिद्म है जिसे आप इनपुट में कोई छोटा पाठ दें या कई टेराबाइट की फ़ाइल भी दे दें, तो वह उस इनपुट के लिए 64 अक्षरों और अंकों की एक स्ट्रिंग उत्पन्न करता है, जो इस तरह दिखती है:

उदाहरण के लिए “Peter” पाठ का SHA256 हैश यह मान है:

```
ea72c79594296e45b8c2a296644d988581f58cfac6601d122ed0a8bd7c02e8bf
```

लेकिन “Peter1” पाठ का SHA256 हैश यह मान है:

```
c2a455a6fba64a8aa2dabed5d193a6bd89813376c02ae40b86f56af6473d4323
```

जैसा कि आप देख सकते हैं, एल्गोरिद्म द्वारा लौटाए गए दोनों मान एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं और एक-दूसरे पर निर्भर नहीं हैं। हैश फ़ंक्शन दरअसल तथाकथित हिमस्खलन प्रभाव से काम करता है। इनपुट स्ट्रिंग में केवल एक बिट बदलने से परिणाम में इतने नाटकीय परिवर्तन होते हैं कि अंतत: परिणाम पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं, भले ही वे मिलते-जुलते डेटा, यानी इनपुट, से उत्पन्न हुए हों। SHA256 सूचना प्रौद्योगिकी की पूरी दुनिया में एकसमान है—अर्थात यदि कोई आपसे कहता है कि उसने किसी इनपुट का SHA256 निकाला है, तो परिणाम पूरी तरह अलग ऑपरेटिंग सिस्टम या प्रोग्रामिंग भाषा में भी वही होना चाहिए। क्योंकि अपनाई जाने वाली विधि हर जगह एक ही है।

SHA256 हैशिंग की एक और विशेषता यह है कि यदि आप किसी को उसका परिणाम दें—उदाहरण के लिए वही मान ea72c79594296e45b8c2a296644d988581f58cfac6601d122ed0a8bd7c02e8bf—और यह न बताएँ कि वह Peter मान का हैश है, तो उसके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं होगा। इसे जानने का एकमात्र तरीका यह होगा कि वह इस उम्मीद पर भरोसा करे कि हैश फ़ंक्शन में दिया गया आपका इनपुट पाठ बहुत लंबा नहीं था और आपने उसमें, उदाहरण के लिए, केवल अक्षर तथा अंक इस्तेमाल किए थे। फिर वह कोशिशें शुरू करे—मसलन पहले एक अक्षर “a” ले, फिर उसमें b जोड़कर “ab” बनाए, और इस तरह बनाए गए इनपुट पर SHA256 फ़ंक्शन चलाकर उसके

परिणाम की तुलना आपके दिए हुए परिणाम से करे। वह यह तब तक करता रहे जब तक उसे अक्षरों और अंकों का ऐसा क्रम न मिल जाए जो वही परिणाम दे जो आपने दिया था। दूसरे शब्दों में, यदि आप इस तरह के पाठ का हैश निकालें:

```
{
“account_from”:”SK11 1100 0000 0000 2644 5963”,
“account_to”: ”SK15 1100 0000 0000 2677 5968”,
“amount”: 5000,
“currency”:”EUR”
}
```

(यह उदाहरण पूरी तरह काल्पनिक है; इसमें दिए गए खाता नंबर भी वास्तविक नहीं हैं।)

तो उसका मान होगा:

7b4f22193ad7675da45be8d5e22f042b36cdc78c397f92dd572786dca61b326b। अब यदि वह व्यक्ति, उदाहरण के लिए, उस पाठ को इस तरह बदलना चाहे कि राशि 5000 से 10000 हो जाए, तो वह ऐसा कर तो सकता है, लेकिन लेन-देन के शेष पाठ को इस प्रकार बदल पाना बहुत कठिन होगा कि उसमें उसकी इच्छित राशि 5000 के स्थान पर 10000 भी हो और पूरे पाठ का हैश मान भी न बदले। सीधी बात है कि वह एल्गोरिद्म को जो डेटा देगा, वह अलग होगा, और उसे लेन-देन के पाठ में ऐसा परिवर्तन खोजने में अरबों वर्ष लग जाएँगे जिससे हैश फ़ंक्शन का अंतिम मान पहले जैसा ही रहे, जबकि राशि उसकी इच्छा के अनुसार बदल चुकी हो।

हैश फ़ंक्शन के इस गुण का उपयोग इस प्रकार किया जाता है: यदि आप किसी को ऐसा पाठ दें जो वह कहीं से प्राप्त कर सकता हो—उदाहरण के लिए लेन-देन के किसी डेटाबेस से—और साथ ही उसे यह बताएँ कि उस पाठ के बनते समय उसका हैश मान क्या था, तो वह बहुत जल्दी जाँच सकता है कि आपके द्वारा मूल हैश मान निकाले जाने के बाद से उस पाठ में परिवर्तन हुआ है या नहीं। इसी प्रक्रिया को इस बात का प्रमाण माना जाता है कि जिस क्षण डेटा का हैश निकाला गया था, उसके बाद से डेटा बदला नहीं है।

ब्लॉकचेन—स्टेरॉयड की ताक़त से बढ़ा हुआ हैश फ़ंक्शन का इस्तेमाल

इस लेख में मैं ब्लॉकचेन के बारे में जितना बताऊँगा, वह इस अवधारणा के वास्तविक दायरे का लगभग 10 % होगा। VP की संरचना समझाने के लिए उतना ही पर्याप्त से भी अधिक होगा।

Bitcoin के आने के अपेक्षाकृत थोड़े ही समय बाद ब्लॉकचेन को लेकर उन्माद फैल गया था। ऐसी कंपनियाँ बनने लगीं जिन्हें सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में ब्लॉकचेन के उपयोग में विशेषज्ञता हासिल करनी थी। परामर्शदाता अपने पद के विवरण में ब्लॉकचेन विशेषज्ञ जैसे विशेषण लिखने लगे, वगैरह। अंततः Bitcoin और क्रिप्टोकरेंसी के बाहर ब्लॉकचेन व्यवहार में बहुत कम ही अपनी जगह बना पाया। मैंने कुछ ऐसी ऐप के बारे में सुना है जिनमें कोई जानकारी हमेशा के लिए सुरक्षित रखना महत्त्वपूर्ण होता है—उदाहरण के लिए यह कि किसी मरीज़ ने कोई दवा ली थी, इत्यादि।

तो आख़िर ब्लॉकचेन में होता क्या है? क्रिप्टोकरेंसी धन की समस्या का समाधान एक अनूठे तरीके से करती है—मुद्रा कहीं स्थित किसी एक केंद्रीकृत प्रणाली में नहीं रहती, बल्कि लगभग हर उस जगह रहती है जहाँ कोई सर्वर, भले ही छोटा-सा हो, उसकी कार्यक्षमता को सहारा देते हुए इंटरनेट से जुड़ा चलता है। लेकिन एक केंद्रीय सर्वर के बिना मुद्रा को काम करने योग्य बनाने के लिए आपके पास ऐसी कोई चीज़ होनी चाहिए जो मुद्रा चलाने वाले हर छोटे कंप्यूटर पर एकसमान हो, और

किसी भी दूसरे सर्वर पर होने वाले हर लेन-देन के साथ अद्यतन होती रहे। साथ ही आपको ऐसी स्थितियों से निपटना भी आना चाहिए जब कोई व्यक्ति एक ही समय में दो सर्वरों पर उसी खाते या वॉलेट से कोई राशि भेजने का आदेश दे दे। इसके अलावा उन असंख्य छोटे सर्वरों के संचालकों को किसी तरह पुरस्कार देने की आवश्यकता भी आती है, जिन पर आपकी क्रिप्टोकरेंसी रहती है, और अन्य बातें भी। ब्लॉकचेन वही चीज़ है जो उन छोटे सर्वरों पर कमोबेश एकसमान रहती है और जिसमें क्रिप्टोकरेंसी के अलग-अलग लेन-देन दर्ज होते हैं। ब्लॉकचेन ब्लॉकों से मिलकर बनती है। इसी से उसका नाम पड़ा है—ब्लॉकचेन, यानी ब्लॉकों की शृंखला। ब्लॉक उन लेन-देन से बनते हैं जो क्रिप्टोकरेंसी में हुए हैं। जैसे-जैसे लेन-देन जुड़ते हैं, नियमित अंतराल पर ब्लॉक बंद किए जाते हैं और नए ब्लॉक बनते हैं। किसी ब्लॉक को बंद करने का एक अर्थ यह भी है कि आप इस तरह के, या इससे मिलते-जुलते, पाठ का हैश निकालें:

```
{
“previous_block_hash”:”42ca08014a7e842f8205d3979eb14a95c52bf9ffb41c6752efe7
bb08114ba47e”,
“transaction1_hash“:“
fe6bc43fff796742bbee6adebec349a38323aed2de40d848aa9ed1428a451942“,
“transaction2_hash“:“
0965577d9c0f4316cf83d1be017627e0d180cc616ec9107ac497df84a4158f93“,
“transaction3_hash“:“
b5069c628dd914cc5f04035ced89781c0eb8efb27aed068b0921201598244565“,
…
“transaction900_hash“:“
ffd7236ababd2e21858c548f5a3c5bae1794fde4c358ebfef6dcf4bcf0bb5a05“
}
```

900 लेन-देन वाले इस ब्लॉक की पूरी सामग्री का हैश, उदाहरण के लिए, “341cbef34adc7235eee22efde368502f670254b97123fecfcb78ba892e7250b0” हो सकता है। इसके बाद अगला ब्लॉक बनाते समय इस मान को previous_block_hash फ़ील्ड में इस्तेमाल किया जाएगा। इस तरह ब्लॉक आपस में जुड़ जाते हैं और एक काल्पनिक शृंखला बनाते हैं। सबसे पहले ब्लॉक के अतिरिक्त हर ब्लॉक में previous_block_hash फ़ील्ड होता है, जिसमें पिछले ब्लॉक का हैश मान रहता है। ब्लॉकचेन के बिल्कुल पहले ब्लॉक के मामले में वहाँ “GenesisBlock” जैसे पाठ का कोई मान रखा जाता है। यह अभिव्यक्ति शून्यवें ब्लॉक की प्रकृति बताती है। वहाँ कौन-सा मान रखा जाए, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता; हालाँकि उसका प्रभाव बाद के सभी मानों पर पड़ेगा, फिर भी एल्गोरिद्म को इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, और मनुष्य के लिए हैश मान तो बस हैश मान होता है।

जैसा कि मैंने कहा, इस लेख में मैं ब्लॉकचेन का गहराई से विश्लेषण नहीं करूँगा। एक तो, उदाहरण के लिए, Bitcoin के काम करने के कुछ विवरण मुझे भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं; दूसरे, जो मैं वर्णित करना चाहता हूँ उसे समझने के लिए वे आवश्यक नहीं हैं।

केंद्रीकृत प्रणालियों—जैसे बैंकिंग प्रणालियों—में धन किसी विशाल डेटाबेस में रहता है, जहाँ बैंक, उदाहरण के लिए, ग्राहकों की सूची रखता है। फिर एक तालिका होती है जिसमें ग्राहकों के खाते होते हैं, और हर खाते के लिए दर्ज होता है कि वह किस ग्राहक का है तथा उसमें कितना धन है। फिर सामान्यतः लेन-देन की एक तालिका होती है, जिसमें यह रिकॉर्ड होता है कि किस खाते से किस खाते में धन गया, राशि कितनी थी, मुद्रा कौन-सी थी, और अन्य विवरण।

कुछ समय पहले, मुझे लगता है Praha में, एक सम्मेलन हुआ था जहाँ बैंकिंग जगत के शीर्ष लोगों ने बैठकर विचार किया कि बैंकिंग की दुनिया में ब्लॉकचेन का कोई उपयोग है या नहीं। निष्कर्ष यह निकला कि नहीं; ब्लॉकचेन एक इतनी विशिष्ट तकनीक है कि वह पहली नज़र में बैंकिंग प्रणालियों जैसी समस्याएँ सुलझाती हुई लगे भी, तो उन्हें बिल्कुल अलग तरीके से सुलझाती है।

वे ऐसा कोई उपयोग-परिदृश्य नहीं खोज पाए जो उदाहरण दे सके कि बैंक ब्लॉकचेन का इस्तेमाल कहाँ कर सकता है।

बैंकिंग प्रणाली में ब्लॉकचेन? केवल तब, जब आपको पूरी दुनिया का विश्वास जीतना हो

लेकिन अपने ग्राहकों के साथ बैंकों का एक विशेष संबंध होता है। उनके बीच एक बुनियादी विश्वास होता है कि यदि ग्राहक एक दिन 100 EUR जमा करे और अगले दिन 200, तो तीसरे दिन वह अपने 300 यूरो बिना किसी समस्या के वापस निकाल सकता है। यदि बैंक अपने ग्राहकों के धन के साथ इतना सरल काम करने में विफल हो जाए, तो वह जल्द ही अपनी प्रतिष्ठा भी खो देगा और ग्राहक भी। इसलिए बैंकों के ग्राहकों को भरोसा होता है कि अपनी प्रतिष्ठा बचाए रखने के लिए बैंक उनके डेटा को मनमाने ढंग से नहीं बदलेगा।

लेकिन आवश्यक समाधान की प्रकृति तब बदल जाती है जब आप कल्पना करते हैं कि आप ऐसी वैश्विक बैंकिंग प्रणाली बनाना चाहते हैं जिसका सुरक्षा स्तर इतना ऊँचा हो कि उसे पूरे समाज की वैश्विक निपटान प्रणाली के रूप में बिना किसी समस्या के इस्तेमाल किया जा सके। अपनी प्रकृति के कारण ऐसी प्रणाली के बहुत-से शत्रु होंगे, विशेष रूप से यदि वह किसी सीमा तक पारदर्शी भी हो। क्योंकि निजी धन की पारदर्शिता एक ऐसी अवधारणा है जिसके, जैसा मैंने जाना है, बहुत-से विरोधी हैं। और भले ही ऐसी प्रणाली में प्रवेश स्वैच्छिक हो, यदि वह सफल हो गई तो एक दिन ऐसा समय आएगा जब वह उन लोगों की आँखों में खटकने लगेगी जिन्हें बढ़ती पारदर्शिता से आपत्ति होगी। ऐसी प्रणाली को सफल होने के लिए उन तंत्रों की आवश्यकता है जिनसे यह प्रमाणित किया जा सके कि उसमें मौजूद डेटा सचमुच वैसा ही है जैसा होना चाहिए, और किसी ने उसे किसी के लाभ या हानि के लिए बदला नहीं है।

ठीक यही वह क्षण है जहाँ ब्लॉकचेन इस प्रश्न में प्रवेश करती है और ऐसे उपकरण देती है जिनसे प्रणाली में मौजूद हर एक मान का हिसाब समझाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, प्रणाली में जो भी महत्त्वपूर्ण घटना हो, उसे किसी न किसी रूप में ब्लॉकचेन में जाना चाहिए। ब्लॉकचेन में बनने वाले हर नए ब्लॉक की प्रतिलिपि तुरंत प्रणाली से निकालकर किसी तीसरे पक्ष की प्रणाली में भेजनी चाहिए। मैंने अभी तक विस्तृत पड़ताल नहीं की है, लेकिन सिद्धांततः यह Amazon Quantum Ledger जैसी कोई सेवा होनी चाहिए। अर्थात ऐसी कोई व्यवस्था जिसमें मैं लेन-देन दर्ज कर सकूँ, जो उस प्रणाली के संचालक की ब्लॉकचेन में चला जाए, और एक बार दर्ज किए गए डेटा के अतीत में किसी भी तरह हस्तक्षेप करना मेरे लिए संभव न हो। बल्कि प्रणाली की प्रकृति के कारण ऐसा करना तकनीकी रूप से ही असंभव हो।

प्रणाली में उत्पन्न होने वाले सभी लेन-देन ऐसे ब्लॉकों में रखे जाएँगे जिन्हें बंद होते ही सील कर दिया जाएगा और किसी तीसरे पक्ष की प्रणाली में भेज दिया जाएगा। उस प्रणाली की तकनीकी प्रकृति ऐसी होगी कि उसमें एक बार भेजी गई चीज़ बदली नहीं जा सकती। इससे ऐसी कार्यक्षमता प्राप्त की जा सकेगी कि कोई मेरी प्रणाली के किसी भी महत्त्वपूर्ण डेटा पर उँगली रखकर कहे—मुझे प्रमाणित करो कि इस मान में हेरफेर नहीं किया गया है, बल्कि यह सही लेन-देन के उस क्रम से बना है जो प्रसंस्करण के सामान्य रास्तों से हुआ था; उदाहरण के लिए ऐसा नहीं कि किसी ने सीधे डेटाबेस में प्रवेश किया

और हाथ से शेष राशि 5000 से 10000 कर दी। तब मैं उसे प्रमाणित कर सकूँगा कि वास्तव में कोई हेरफेर नहीं हुआ। या बदतर स्थिति में, मेरे हिसाब मेल नहीं खाएँगे, और इसका अर्थ होगा कि किसी ने डेटा बदल दिया है। क्योंकि दृश्यमान धन प्रणाली में किसी महत्त्वपूर्ण तालिका की हर पंक्ति उस लेन-देन से, और इस तरह उस ब्लॉक से भी जुड़ी होगी, जिसने उस पंक्ति को बदला था। संभावित जाँच इस तरह होगी कि कोई बताएगा कि मुझे डेटा के किस हिस्से का प्रमाण देना है। एक सरल कमांड से मैं उन लेन-देन की सूची निकाल लूँगा जिन्होंने उस डेटा को किसी न किसी तरह बदला था। यदि मैं उन सभी लेन-देन की सामग्री उस डेटा ऑब्जेक्ट पर लागू करूँ, तो मुझे वही ऑब्जेक्ट उसी रूप में बदला हुआ मिलना चाहिए जैसा वह अभी दिखाई देता है।

VP की संरचना पर इस शृंखला के अगले भाग में मैं समझाऊँगा कि प्रणाली में डेटा को उसकी प्रकृति के अनुसार कैसे बाँटना चाहिए, उसे अलग-अलग तरीकों से कैसे संसाधित किया जाएगा, वह ब्लॉकचेन में कैसे प्रवेश करेगा और संबंधित व्यावसायिक ऑब्जेक्टों पर क्रियाएँ कैसे की जाएँगी।